

वनके मांथे विधिसों बांधि वनावत ॥ २ ॥ नाजन जरि न रिदे कुंड वारो तव ही
ताहि पठावत ॥ चत्रनुज प्रनुगिरधर फिरि पाछे धौरी धेन खिलावत ॥ ३ ॥ रा
ग सारंग ॥ वेलन कोंधोरी अकुलांनी ॥ डोंड मे लि आतुर सन मुख कै स्याम
सुंदर की सुनी मूडवांनी ॥ ४ ॥ वडे डे गोप थ कित जये वादे यह अक्लें देखी
न कहां नी ॥ नांचत गाय जै नौतन छजवर सोवर सकुसलय हजानी ॥ ५ ॥ नंद
कुमार अंचल मारि मुख जै जै सहकहत कलांनी ॥ चत्रनुज प्रनुगिरधर
लाल की सदार हो ॥ ऐसी रजधानी ॥ ६ ॥ राग सारंग ॥ खेली व हो खेली गांगु
लांही धूमरि धौरी ॥ वछरा परि उपरै नां फेरत डोंड मे लि कै दौरी ॥ ७ ॥ आपु
पाल कृकमार तहे गो सुत कों जरि कोंरी ॥ धेंधें करत लकुटी करली नें मु
ख पर डारि पिछोरी ॥ ८ ॥ आनंद मुदित गुपाल ग्वाल सवटे रिकरत शक मे
री ॥ चत्रनुज प्रनुगिरधर न सदा इह छज मुख जुग ॥ गराज करोरी ॥ ९ ॥ रा
ग सारंग ॥ गुर के गूंजा पूजा सुहारी गोधन पूजे छज की नारी ॥ १० ॥ घर घर गो में प्र
ति मांधारी वाजत रुचिर परवा वज धारी ॥ ११ ॥ गोदलीयें मंगलगुन गावत ॥

वालकृष्णकोंपापलगावत। हरदस्वरोचनकेटीके। इहिविधिसुरपुरला
गतफीके। ४। असूनपीतरंगगायसिंगारीखेलतगोपदेदेकिलकारी। ५। ह
रीयदासप्रभुकोंवरविहारी। सुखमानतरितुवरखदिवारी। धरागसारंग
गोधनप्रजिकेंधरआये। जननीजसोदाकरतआरतीमोतिनचौकपुराये
१। मंगलकलसविराजतघरेवंदरवारिवनाएलालदासगिरधरगिर
पूज्यो। नमगतनमनजाए। शरागसारंग। तारेतारेरीट्टजजनलोचनहैं
कोंतारे। सुनिजसुमतिवसतसप्रतअलिकुलदीपकउजियारो। १६।
नचरांवनजातिहरिजवहोतनवनअतिनारो। घोरखसौंजीवनिमूरिहम
रीछीननमतइतउतटारो। २। सातधौसगिरराजधस्योकरसातवरसको
वारो। गोविंदप्रभुचिरजीरांनीतवसतगोपवंसरखवारो। ३। रागमलारव
दरांनअंवरबायो। आनुबनुनंदकोलालछबीलोमोहनतापरइंच
दिआयो। ४। मेरेरीमोहनबुद्धिउपाईनखकरिसैलउगये। राखेतरनस
कलगोपीजनकुंजनदासजसुगायो। ५। रागमहर। गिरवरनीकोधस्यो

कन्हैया॥ देखे रहोदरे जिन नख तेनु जात न कसी नैया॥ १॥ जवही गाढ परतव
जलोगन तवही करत सहैया॥ जननी जसोदा कर लेचांपत अति अम होत न
न्हैया॥ २॥ देखत प्रगट धरे गोवर्द्धन गोपन धरत लवैया॥ पिता देखि व्याकुल गि
रिवर धरत व एक बुध्ज पैया॥ ३॥ आव्रजतात गहो गोवर्द्धन गोपन सह
गहवैया॥ ४॥ तहां तहां सव दिन गिरि टेको कां न्हि ओत करइया॥ ५॥ सरद
स प्रनु अंतर जां मीनं दहि हर खव दैया॥ ५॥ रागन कहो मेरे वारे लाल गोव
र्द्धन कै सै नवाय करली नों॥ एक हि हाथ अकेले ही गढे सु देखो बलि दाऊन
कुनली नों॥ १॥ सुंदर करचांपत चंचल फंकत उर लावत अंचल घे मजल
नी नों॥ गोविंद प्रनु स प्रतल रिकाल रिकाई तैं ब्रज जन मन सुख दी नों॥ २॥ राग
दा॥ अपने अपने दोल कहत ब्रज वासीयां॥ सरद कहूं निसि जां निदी पमालि
काजु आई घोरवन मन आनंद फिरत उन मत्त अधिकाई टेक॥ एनथा पेदी
जि एघर घर मंगल चार॥ सात वर सको सांवरो खेले नंद दु द्वार कहत वृज वा
सियां॥ ५॥ वैठे नंद उपनंद दोलि वृख जां नवुला ए वार वार हाहा कहे कही॥

वावायहवाता। घर घर जो जन होत हे सो कौन देव की जातिक हत वृज वासिया
 रस्यो मतुहारी कुसल जा नि एक मंत्र उ पै है र वटर स विंजन सा जि जोग सुर
 पति कों दै है टे। कस्यो नंद चु चकारि कै जाय दामोदर सो यावर सद्यो सको छे
 सहै सो महामहो छो होय कहत वृज वासिया। शतवहसि बोले लाल मंत्र बोह
 स्यो फिरि कीनो। आदि पुरस निज जा निरय न सुपनो मोहि दी नैं टे का सव देव
 न को देवता गिरि गोवर्धन राजा ताहि जोग कि नि दी जिये सुर पति कों कहा।
 काज कहत वृज वासिया। धाव दि है गो धन हूं दृष्ट धद धि को कहाले खोय ह
 पर चो वृज मां फर्न न अपनो करि रे खोटे का तुम देखत वलिखाय गो मोहि मं
 गे फल देय गो प कुसल जो चाह हो तो गिर गोवर्धन सेय कहत वृज वासिया।
 प गो धन कीयो विचार सवे मिलि सकट जु साजे वज्र वि धि करि पकवोन व
 लेत हां वाजत वाजे टे का एक वन ही वन तैं चले एक नदी सर जीर एक न पैं जे
 पात्र ही सो फूलै फिरत अहीर कहत वृज वासिया। हा एक ऊवट कै चले एक
 वन ही वन छाए गां वै गुन गो विट् प्रेम जं भगे न समा एटे का सब

सांवरो देखिये सवनि मुंजारी कौतिक न ले देवता सो आ एहे लोक विसारी क
हत वृजवासियों ७ वृजचौरासी को सपरे गोपन के मेरा लांवे चौवन को सतहां
वृजवासवसेरा टेक गोपन को सागर न योगिर न यो मंगल चार रतन नै सको
पिका तहां कां न्ह विलोवन हार कहत वृजवासियों ८ तव हरि बोले विप्र ज
ग्य आरंजन कीनों सुरपति पूजा मेदी राजराज गोवर्धन दीनों टेक देव दिवा
री सांम ही सव मिलि पूजन जां हि नंद प्रतीत जो चाहत होतौ तुम देषत वलि
जाउ कहत वृजवासियों ९ प्रथम ह्म न्हाय वज्र गंगा जल दास्यौ वजे
देवता जां नि कां न्ह को मतो स्यो टेक जैसे है गिरिराज नृत्य से अन के कोट म
गन नये पूजा करै सवन रनारी बड छोट कहत वृजवासियों १० वज्र वि
धिविंजन साजि कहां लोनों वषां नौ नयो जात को कोट और गिरराज छिपां नौ
टेक वरा विराजे जात पर चंद हि पटंतर सोय जग्य पुरुष नो जन करै तहां सब
देवन सुष होय कहत वृजवासियों ११ सहस्र जुजा उर धारि करै जो जन अधि
काई नख सिख लो अंनुहारि नानों हसरो क न्हाई टेक ललितारा धासों क

हे तेरे ऊदय समाय। गहे अंगुरीयानंद कीटोटा पूजा पाय कहत छजवासियं
 ११ पीतडमालो वन्यां कंठ मोतिन कीमाला। सुंदर सुनग शरीर जलमलेन
 न विसाला। टेका स्यांम कों सो जागिरि न जोगिरि कों सो जा स्यांम। जै सैं पर
 वत अन्न के दिग नैया वलिरांम कहत छजवासियं। १२ जै सीकं वनपुरी
 दिव्य रतन सों छाई वलि दीनी ही प्रात छां हचलि पूरव आई वंदरो लाव
 रव जांन कोर ही विलो वन हाराति नि की बलि इन देवता होली जुजा पसारि
 सवे सामग्री अर्पि गोप गोपिन कर जोरे। अगि नित की नें स्वाद कहा वर नों
 मति थोरे टेका। इहि विधि पूजा कीजिये कह्यो सवन समुजाय। सूर स्यांम मो
 सों यों कह्यो मेरी लीला ससवनाय कहत छजवासियं। १३ राग सोरठा दे
 खो माई बाहर की वरियाई कमल नैनं गिर भार धस्यौ कर इन जु अधिक
 र लाई राजा कै गोवदा जल बसिये ता सों कहा वडाई वाकुर सों सेवक स
 रिजरि करै इन वात न पति जाई। १४ सरदा स प्रभु कौन हरे जिहि वन कुच
 रकन्ह आई। अववा न जोर करत है पाठैं फिरि पछिताई। १५ राग सोरठा वारी

मेरे कांहरूपारे अवही दिननुबारे कैसैं अतिनास्यो गिर राख्यो धरि क
 रपरि को मल जुजातु म्हासीया तेंहों वैं जय नीतर नारी देखि देखि करत हे
 ऊ दोधर धर ॥ स्यां ममहावलकीनों गिरि छिनक में उवायलीनों ॥ आयो
 गायवाल सवसरन मेघ के डरनी को करो हो उपाय मिलि करि हें सहा
 य ले हो बोलि बलि राम संग जैया हल धर ॥ २ ॥ नैं करू वीचन पास्यो आवें
 जाम अंधियारे ॥ वर खत हे घन सात दिन एक जर ॥ चत्र जु ज प्रभु गिर धारी
 राखिलीयो इंड पि स्याय आय पस्यो चरन नतर ॥ ३ ॥ राम माल वगौड जेने
 लाल गोवर्द्धन धारी ॥ इंड मोन जंग कीनों ॥ वांम वा ऊ राख्यो गिरि नायक नरू
 न को सुख दीनों ॥ ४ ॥ सात दिवस सुरपति पचिहास्यो गोसुत श्रीगनजीनों
 हलदास प्रभु गिर धर पिय के पाय पस्यो मद हीनों ॥ ५ ॥ राग श्री जयति ज
 यति श्री हरिदास सर्व धर ले ॥ वारि दृष्टि निवारि घोर ख अरति दारि देव पति
 अजिमान जंग कर ले ॥ ६ ॥ जयति पटपीत चारु दामिनी रुचिर वर मृडल अं
 ग स्यां मजल दवर ले ॥ कर अधर वेणु धरे गांन कर खरे सहज वृज जुवती

चितहरणो॥ शजयति हंदा वि॥ नीजो मिडोलनी॥ अखिलगोपवंदन॥ अमलत
 सरणो॥ तरणितनया विहारनंदगोपकुमारतयकुभनदासतवसिचरणो॥ अ
 गकेदारो॥ नंदलालगोवर्द्धनधास्यो॥ वृजपतिप्रलयकरनको॥ सुरपतिपठये
 को॥ पिप्रलयमेधेधचास्यो॥ सातदौसमंसलधारावरसतएको॥ छिनुनवच
 पास्यो॥ गोपगायवालकआयवलराविगर्वटास्यो॥ शच्छां॥ सवअनिमान
 अमरपतिअपनो॥ बिगासजियमैंविचास्यो॥ कुंजनदासप्रभुसैलधरनके
 आयपस्यो॥ पायनिहास्यो॥ अरागअडाणो॥ सुरराजआयपायनपस्योरी॥ गि
 रिधरनिआपनोकस्योरी॥ तनिगजवृजरजलोदतआयोवदनदेरवतमग
 ननयो॥ सुरनीउपहारलयो॥ कनकदंडज्यौ॥ धरनीगिस्पोरी॥ एतवगोपालन
 एकपालपीतांवरपहरायो॥ कान्हअनैकरसिरधस्योरी॥ हरिनरायणस्यो

रागमाहूकरषाजा

योंछतनोंकीयो लोकतिऊंमांहप्रभुईवडाई॥ ई॥ ५॥

लीयो इंदवलमेटि गिरिकों वलिरववा ई सदाई यहदरनी गिरधरन गो
की नीरमें धीरधरि हैं कन्हा ई २॥ लीजिये सरन वृजनाथ वृजनवन का
हैं जिनि इहिं वार कहा विलमुला ई आई ये व ऊरि उजला डिले मारिये
करऊन कसहा ई ३॥ मारियो कंस जै सैं जवन संघारियो सदा इहिं चलन
वली जु आ ई कलदास विनती करी सुनऊ गिरधर हरि सदा ई रहिये न
होत सदा ई ४॥

श्रीगोपीजनवल्लभाय नमः॥ अथ नारद ऋषि के पदार्णव विलवल आदि
ऋषि भैया की कहियत नरि नरि कंचन घाल के। कर ऊतिल कतुम बहन
सुन जव लब्ध श्रीगोपाल के। शरारती करत देत नौ छाव रिदारति मु
क्तामाल के। आस करन प्रभु मोहन नागर प्रेम पुंज जजवाल के। शराव विला
वल कातिग सुदि द्वितीया के दिन हरि हलधर सहित सुन जघर आ एतिल
कवरा शिवै वेदोक्त जैवन विविध जाति के जो ग लगाए। शीरा देकर करत
शरती तव जुवती जनमंगल गाए। ब्रज पति प्रभु परिकरि नौ छाव रिदेत स
वनि कौं अति हर रवी ए॥

प्रथमोत्तरनकेपद। राग विनास खेलतवनहि चले हजराई खेलत
नहि। करतलवेनिलकुटियाकांधेकटिमेखलावनाई। धारधारप्रति
रवाबुलाएवछराठिलथेनाई जोरनएअवतुमकहासोबतजागऊने
उहाई। अपनीअपनीछाकलेऊतुमवऊतजांतिधृतसांनीपरमाने
स्वामीकीलीलायाविधिकिनिऊनजोनी। रागदेगंर। दुमचदिकां
हटेरतहूगेंयां हरिगेंधायमातसवनतेआगेंजेहरवजानंदई। घेरीनधि
ततुमहीविनमाधोमिलतनसंगनईविडरतफिरतसकलवनमहिये
कएकनई। छांडऊखेलवेहरिजातहैंवील्योजोसिरवईसूरदासप्रनु
मेसमुजिकेंमुरलीसुनतनई। रागसारंग। देरतऊंचीटेरगुपाल। ह
जातगैयांमैयाहोसवमिलिघेरऊगवाल। लेलेनांमधूंमरीधौरीमुरलीम
पुरसाल। चटिकदंवचहूंघांहेरतअंबुजनैनविसाल। सुनतसवदसु
नीसमुहांनीउलटीपिछोडीचाल। चत्रजुजप्रनुपीतांवरफेस्योगोवई
धरलाल। रागसारंग। प्रथमगोचारणचलेगुपालजननीजसोधा

करत आरती मोतिन शरीया ल ॥ मंगल शब्द होत ही औसर गावत मिलि
 वृजवा ल ॥ विविधि जांति पट नूरवन पहरे रोरी तिल कुदी योजाल ॥ २ ॥ सव सं
 माज ले चले वृंदावन आगै लीनें गाय ॥ राई लौं ननु तारत जननी गोविंद वलि
 वलिवलि जाय ॥ ३ ॥ राग सारंग ॥ प्रथम गोचारन को दिन आज ॥ प्रात काल उ
 ठिज सोदा मैया की नोहे सव साज ॥ ४ ॥ विविध जांति वाजन वाजत हेर स्यौ घोर व
 सव गाजि ॥ गावत गीत मनोहर वां नीत जिगुरजन की लाज ॥ ५ ॥ लरि का सक
 ल संग संकरवन वैनिव जाय रसाला ॥ आगै धे मुदे चले मोहन पनु न मनन
 योगे पाल ॥ ६ ॥ राग सारंग ॥ गाय चरों वनु को विस नुराधा मुख लाया राख्य
 ने न निको दसनु ॥ ७ ॥ कव रू धर कव रू वन रवेलन को जसुना ॥ परमानंद स्व
 मी को जावे तेरो मुख हसनु ॥ ८ ॥ राग सारंग ॥ मैया हो नचरै हों गाय सवे ग्वा
 ल धिरावत मो पै मेरे हर कत पाय ॥ ९ ॥ कव रू धर न जात नही कहत निवे रि
 चराय मोहि न पत्पाय तो वृजि वलि दाऊ अपनी सोह दिवाय ॥ १० ॥ हों जान
 त मेरे कवर कनैया लीये ऊदै लगाय ॥ परमानंद सका जीव निशालन प

रिअधिकरिसाय। ३ राग सारंग। मैया मैं कैसी गायच राई वृद्धि देखि वलि न
 ददा सं कैसी मैं देखि बुलाई। १ विडरि चली सघनवन मंहि पांहेरी देठ हरं नी
 ज्वालन केलरिका पचि हारे देस व मेरी दाई २ जलोजलोक रिमहरहस
 तहे फूली अंगन माई परमानंद प्रजु बीर वचन सुनिज सुमति देत वधाई
 ३ राग सारंग गोविंद चलत देखिय तनी के मध्य गुपाल मंडली मोहन कां
 धन धरि लीने छी के। १ वछरा वेद देखि आगें दे जन जन अंग वजाए मान
 कमल सरोवर तजि कै मधुप उनी देखि आए २ चंद वन प्रवेश अघमर्दन वा
 ल लीला जावे। प्रेम समुद्र लोक त्रै पांवन जन परमानंद गावे ३ राग सारंग
 गोविंद चले चरां वन गैयां दीनों हे सुखि आजि न लोक सोहे ज सोदा मैया।
 १ उवटिन्ह बाय वसन नूरवन सजि विप्र न देत वधैया करि सिंगार तिल
 क आरती द्वारति फिर फिर लेत वलैया २ चनु जदा सछा कछी कै सजि स
 खान सहित लीने वलि नैया। गिरधर गवन देखि अंकज रिमुख चूं व्यो न
 दरेया ३ ६ रिगो वर के पद छं १ रणं ॥

॥ श्रीराम ॥

श्रीगोपीजनघननायकः॥ अथ प्रबोधनीके पदलिप्यते राग विज्ञातुं
आज प्रबोधनी सुनदिननीको॥ अमलपद्म एकादसी आया वैजित शरकुं
जरचे सरवीचजं औरदीपक सुहाया॥ घरघरगोपीवोक प्ररत सब वंध
वाराधार वंधाय सिंघासन गादीत किया धारे करे तथा पनगोकुल राया॥
हरे नरे सवतेर मेवा धरिसां मयी सव नोग लगाय त्प्यारिजं मजागरन जा
गिनि सिजागे देवगोवर्धन राया॥ ३॥ मंगल आरती करि जमंगल प्रेम मु
गन आनंदन समाया रसिक प्रभु मंगल निधि मंगल रूप राधा सुरवदाम
धारा॥ सारंग॥ आज प्रबोधनी परम मोद करि चलि प्यारी प्रिय पैले जाऊ
वज्रतई परसकुंज पुंजर विचज औरदीपक सुहाऊं॥ चित्र विचित्र न
मि अति चिती करि तथा पन हरि हे जगं कुताल जां गि संघ मृदंग धुनि व
जे शरै वंधन धार वंधां ऊं चार जां मजागरन जा गिनि सिच्या स्यो नोग
अधर अमृत पां ऊं रसिक प्रभु के रहस्य सिंधु में नैनं नीन ऊं को रिह वां ऊं
शरा गकां न्हरो जागे जगजीवन जगनायक कीयो प्रबोध देवगन जव

ही उवे जगत सुखदायक १ जा प्रभु प्रभुता डी जारी सि वडं स्नादिक पायक
 कमलादासी पाय पलोटि नि पुन निगम से गायक २ जहां जहां जीर परें न
 कून कों तहां तहां होत सहायक परमानंद प्रभु जक्त वल हरि जिन के म
 न वच कायक ३ अथ वल देव के पद रा सारंग वल दाऊ की वर
 संगं वि आ जि फूल तलाल और वजराय वैठी गोदली ये दोऊ दोटन जसु
 मति और रोहणी माय ४ वंदन वार चौक मोतिन के नंदनें वाजे फूल सब जा
 ए पहलैं न ए सुल छ ए वल त व अपनी पीठ पर लाल ल्पा ए २ आ गै कैं अ
 नंद वैठि करि जांति जांति के वेद पढा ए एसी देऊ असी सई नही ए दोऊ सु
 त हम पुण्य न पाए सो नें रूपे वज्र त वसन ले वि प्रन कों गोदां न दिवा ए ले ले
 नाम बुवा दोटन को गाय गाय कैं सवन मल्हा ए ४ तिलक करत लत्त ए
 सब प्ररी और आरती विविधिसंवासी इन कों सो हिलो इन के दीर कों इनें
 सुरवमानत वज्र नारी ५ पहलैं ही पहा ए जान सव फिरि करि वाल गोप
 पहीरा ए अरु पहिराई सब वज्र सुंदरि जैसे चीर जाहि मिन जा ए ६ आदर

लेरांनी कहती सवन सों अैसे ई मेरे दिन दिन आए श्रीबीठल गिरधर नलाल
ए प्रीवाह के सदा मुहाए ॥ अथ वस्त्रा नर एकै पद ॥ रागराग कल हरिजस
गावती चली सुंदरी ॥ श्रीजमुना के तीर ॥ लोचन लौनें वंद जोटी करि श्रवण ॥
निजल कत वीर ॥ देणी सुथिर चारु कांधे पर कटित टांवर लाल ॥ हाथ ॥
नरुल लीये डलियां नरि और मन मुक्ता ॥ माल ॥ २ ॥ जल प्रवेस करि मंज
न की नों प्रथम हे मंत के मास ॥ एह वर हो ॥ ऊ मेरे व्रत गन्यो ॥ इह आस ॥ ३ ॥ तव
ही चीर हरे हरि नागर चढे कदम की डार ॥ परमानंद प्रजु ॥ वर देवे कौ उद्यम
कीयो मुरारि ॥ रागराग कजी हो मोहन हो हारी तुम जीते ॥ नागर नट ॥
टदे ऊ हमारे कां पत हेत न सीते ॥ १ ॥ रसिक गोपाल लाल अवलिन पर एती
कहा ॥ अनीते ॥ परमानंद प्रजु हम सव जां नत तुम गाल कजावत रीते ॥ २ ॥
श्री वंद ॥ हर एकै पद संप्ररण ॥ अथ मन सिद्धा लिख्यते ॥ अरे मन श्री हरि वंश
न जि जो चाहत विश्राम ॥ जि हिरस सव वृजि सुंदरी निछाड़ि दीयो सुख धाम ॥
निगमनी रमिलि एक नयो ॥ नजन हृदय सम सेत ॥ हरि वंस हंस न्यारो कीयो ॥ प्रगट
जगत कै हेत ॥ २ ॥ एक सोच मन मै रहे ॥ असु आवत जिय लाज ॥

रि कीयो नए कै काज्ञा रे मन चंचलता तजै विषै दरै दिन जन रसमां हि श्री राधा
वदन्न जनों मविन तेरो कोऊ नां हि ४ मन गजतजि कै विषै मन चल हि जन की
ओर छाडि कुमति अव सुमति गहि भजिलै नवल किसोर ५ अव लग मन की
नों सोई जोई कह्यो तैं मोहि अवत मेरो कह्यो कसि जुगल चरन छवि जोहि ६ हा
हामन वछाडि कै जो अटकै इक ठौर वृंदावन धनकुंज में जहां रसिक सिरमौर
७ रे मन अलिखु बहि जिनि विषै सुमन सुति मंद जुगल चरन अरि विंद को
करहि पांन मकरंद ८ मन पंखी अवतर हि जिन जगत मोह के जाल तव तो कूं
कै है कति नव दि है ९ रव विसाल १० विषै चुगो जिन चुगहि मन चुगत परै ११
फंद फिरि पीछें पछिताइ गो क्यौ न न जै रजि चंद १२ रे मन कव रूजाय जिनि
भूलि विषै वन रंग मन मथ डगमार तजहो लीयें वज्र तव संग १३ जवल गमन
छाडत नही सवदा तन को लो ज तवल गहिय उपजै नही जुगल प्रेम की गो न
१४ सव पापन को छुट्टै लो ज तैं मन हि घटाय निस प्रेही संतोष गहिर है न जन
चितु लाय १५ मन तौ चंचल सव नितैं कीजे कौन उपाय साधन कै हरि न ज
न है कै सत संग सहाय १६ कांम कांम ना वासना मन तैं सव करि हरि श्री रा
धा वदन्न लाल ज निरसिक न जीवनि मूरि १७ रसवल छुटै न जो विषै सुष
नहि पावै कोय तन छाडै मन गहिर है रंनों जहां उख होय १८ रसवल छुटै

जो विषै सवहिल है सुषमूल जै सैं आतप को तपो पावै सरिता कूल ॥ १७ ॥ विषै करत
 वयवीति गई त्रिपति नयो तज्जनां हि नैनं अछित है दीप करि पारत रूप तम मां हि
 ॥ १८ ॥ जघपित न जीरण न यो छुटी न मन कीरीति विषरि पस्यौ सिमटै नही इंडि निं
 नों जीति ॥ १९ ॥ परनिंदा कै करत ही आवत नहि कछु हाथि मूरिष परवत पाप को
 लै चल्पो अपने हाथ ॥ २० ॥ नरुन निंदा अतिवुरी भूलि करो जिनि को या कीएसु
 कत सचै नि के छिन में उरै घोया ॥ २१ ॥ मत्सर को धन स्योर है और सुहिय अनिमां
 न विन पाव कजरि वो करै महामूढ अग्यां न ॥ २२ ॥ अवसुनि न जन कीरीति कछु
 होय महा इट धीर को ऊयाहन पाइ है जहां नीरगं नीर ॥ २३ ॥ जा को जै सौ गुन कहे
 जाव है मन में धरि विस्वासा कर्म धर्म अर लोक कुल तोरी सव की आस ॥ २४ ॥ नरु
 आहि वज्जनांति के तिन में वज्जत कने द विनि विवेक मिलि वो तहां मन पावै
 अति रे द ॥ २५ ॥ सवगं मिलि वो एक सो यह ग्यां नी कीरीति जजनी सो ईजां निये
 करै समुजि करि डीति ॥ २६ ॥ खां न पां न तहां की जिये रसिक मंडली मां हि जिनि
 कै और उपासना तहां उचित फवनां हि ॥ २७ ॥ रसिक रंगे जे जुगल रसति नि की जं
 ठिने पाय जहां तहां के पावने जजन ते ज उडि जाय ॥ २८ ॥ इष्ट मिलै अरु मन मिलै
 मिलै जजन रसरीति मिलिये जहां नि संक के की जे तिन सौ डीति ॥ २९ ॥ गल
 पे मर समगन जे ते ई अपने जां नि सव विधि अंतर सो ति कैं ति

निधुग्यहरसपरस्यो नां हि जिन तू जिन परसै ताहि ता सौं नां तौ नां हि कछु
यहरसरुचै न ताहि ॥ ३१ ॥ संग सोही जाकै मिलै जू लै गहवौ हार तिहि छिन आ
वै हीय मै अजुत जुगल विहार ॥ ३२ ॥ जिन कै देषै पुलकत नरो मां चित कौ जाय
सुनत वचन तिन के मधुर नैन नरै जल आय ॥ ३३ ॥ जिन को सहज सुजाव पस्यो
जुगल रंग की बात नि सि दिन बीतै न जन मै और न कछु सुहात ॥ ३४ ॥ ऐसे न
कन कै मिलै हीयो नैन सिरात मन देनी कै समझि कै सुनि एति न की बात
॥ ३५ ॥ जिन कै जुगल विहार की बात चले दिन रै नि तिन ही को संग की जिये
छाडि और सव गै न ॥ ३६ ॥ वज्र त मिले सो संग न ही न्यारी न्यारी जांति जुगल
प्रेम मै रस पगे जे ते ही अपनी पांति ॥ ३७ ॥ वज्र त जांति के मत जहां तिन नु हिस
मज्यौ संग न वृकिसोरता माधुरी विनां न अपनी रंग ॥ ३८ ॥ देष्यो प्रेम विला
स वृंदावन घन कुंज मै जिन कै इहै उपास तिन को संग जु की जिये ॥ ३९ ॥ न
वृकिसोर सुकवार तन रंगे प्रेम के रंग जिन के हिय मै वसत एति न सो क
रि ध्रुव संग ॥ ४० ॥ कठिन है रसिक उपासना रहत न मन इक ठौर राई कै स

भवतही होत और की और ४१ जजन न होत सत संग बिन जजन विलंब
 हि प्रेम छिन लं जजन न छा डियो धरिये कवय हने म ४२ महामधुर रस प्रेम ले
 जिन कै लागे रंग ४३ ऐसे रसिक अनन्य जे कीजेति न को संग ४४ और ना छुनि
 न कै नही जुगल विहार उपास सुनि कव मन क्रम वचन को कैर हैति वक्तो
 दास ४५ धर्म ऐसी चाहि ज्यों सूरार न मां हि ४६ पंड पंड हो ४७ ज्ञात तन फिरि कै
 चित बैनां हि ४८ कव रूतौ थोरो जजन कव रूतौ होत विसाल मन को धीरज
 छुटै नही जुमल विहार उपास ४९ कही आचार अपरस कहा कहा संज
 मवत नेम कहा जजन विधिसौ वंध्यो जौ नहि परस्यो प्रेम ४९ जजन कसे
 निमति ले परी सहर सदार जै सैं रोकी रुकत नहि प्रवल नदी की धार ४९
 जकूव ऐसी चाहिये मन धीरज छुटि जाय सुषयायें रूले अधिक दुख पा
 यें विललास ४९ रहै धीर रस जजन में यातै नहि कछु और
 जो बज गि स्वहि छुटै केर ५० सूर सो ईर न नू मिकों
 जजनी ऐसी चाहिये जर नहि आनै आन पर महाम
 परसत नही कछु और जे सें रसिक अनन्य जेति है

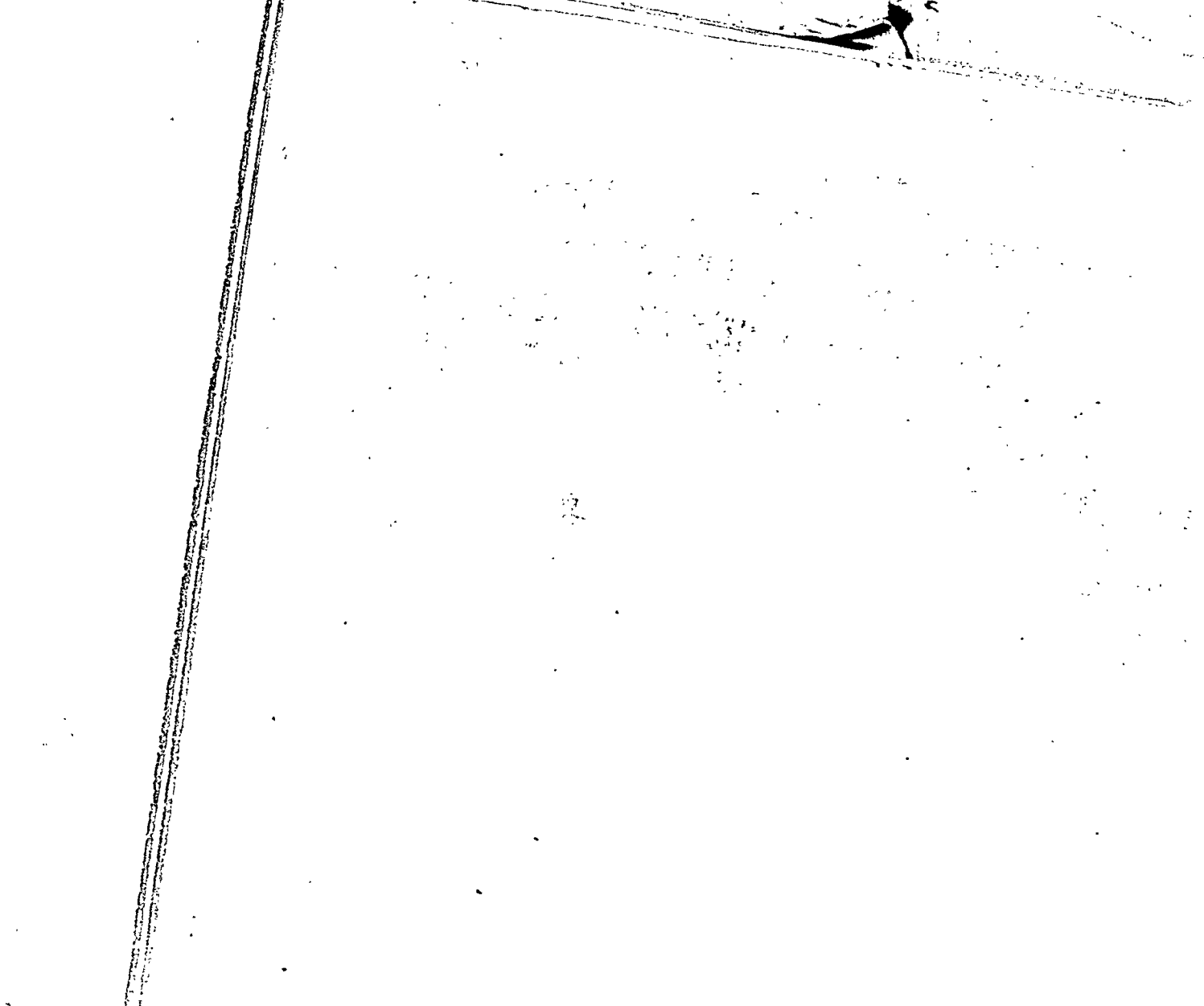
गहैन
 चाल =

हान होय सत संग तैं देषा तिल कैं असु तेल मोल तोल सब फि सियो पायो ना
 म फुलेल ५३ और धर्म साधन जनन फी के दिन अचुराग जैसे वा गोवन तनही
 जोन होय सिरपाग ५४ येम विनां जो कलुक दै सो सद ही लागे फी क विविधि नी
 जांति विंजन करै लौन विनां सब फी क पपान दल कि सोरी कुद रि की सहज ही
 ऐसी वां नि ता को संग न छा डि ही नैं क सरन गहि अं नि पद पीत मरु कै पनय
 है श्री ति कै व सि है जां हि को दि धर्म जो करै को जति न तन चित वत नां हि ५५ ए
 क प्रां ए मन दोय तन अं पि न की सी श्री ति जि हि पै न्यारी रहत है देष त एक ही री
 ति पण वां हां जो री फिरत दो उर सि क ला डिली लाल देषे ऐसी जां ति छ वि वि त व
 त नैं न दिसाल ५६ और गुन करै स मुद्र सम गिन तन अप नों जां ति राई के सम न
 जन करै मां न त मेर समां न द्य ऐ से प्रभु त्रै लोक म नि जि न न जे वित ला सु प
 सु पं छी ता को स दै मां न त अप नों राइ द्य तिय सु त नां ती नां त नी ति न ही त न चि
 त दी न श्री राधा व द्न न लाल जी नैं क न अं नैं ही य द्य प त्यो वि षे के स्वा द मै
 ऐ सो र लो लु ना य ग्र हर स मै व म वी ति ग र्ग ह्यो काल नैं आय द्य अ भु त जु ग
 ल वि हार को जि न को रहै वि चार उ नि फ्र व ति न को चर न रज लै ले सिर परि धारि द्य
 मन सि द्दा के द हे दो हां सा वि द्यारि जु ग ल चर न अर वि द्य प द प ल प ल प्रति हि सं न

वि इति मन सिद्धा संस्थे

साई

॥ श्रीगोपीजनघटनयनमः ॥ अथ श्रीगुसांईजीके जलपदलिखते
रागजैसै सदा श्रीवीठलनाथजीके चरणसरणें पतित पावन जन अथ
हरणें ॥ श्रीवद्वजनं दन जगत दया निधि नक्तु च छल करुणा करणें ॥ अ
गनित गुन गाय जस जाको दीन डखित पोरवत नरणें ॥ प्रगट विना ना
ति मरनासन सो जा सिंधु कहां लों वरनों ॥ मुकुंद दास प्रभु निस दिन विहरत
सिकलाल गिरवर धरणें ॥ ३ ॥ राग जैसै जय जय श्रीवद्वजनं दन श्रीवी
ठलनाथ सकल जग वंदन ॥ सुमरत नाम मोचत न वफंद किस्वकी जीवनि
गोकुल वंदन ॥ मुनि जन सुगावै सुति छंद प्रेम न कर स आनंद कंद ॥ ३ ॥ क
सिंधु वचन मकरंद ॥ अति उदार मुख मुसकनि मंद ॥ ४ ॥ कलिसागर
नौ पद अरि विंद प्रभु गिरवर धरदास मुकुंद ॥ राग जैसै जै जै श्रीवद्व
नंदन सुरनर मुनि जाकी पदरज वंदन ॥ आया वाद की योजु निकंदन
मलीर्य काटत न वफंदन ॥ प्रगट पुरुषोत्तम चरव ज चंदन रुसदा
गजैसै ॥



॥ श्रीवृद्धन भुजसंततिनिगतगोक्तं ॥ मनकमवचनछिनुएकनविस
 रंक्तं ॥ मनकमवचनछिनुएकनविसरंक्तं ॥ ५ ॥ पुरुषोत्तमश्रवतारमुक्ता
 फलफलितजगतबंदनश्रीविवलेशडलरंक्तं ॥ परमियदकमलनिरखि
 सौंदर्यनिधिपुलकितकलहकोटिनसंक्तं ॥ २ ॥ श्रीगिरिधरनदेवपति
 मानमर्दनकुरनघोरवरच्छकसुरवदलीलासुनांक्तं ॥ श्रीगोविंदग्यालसं
 गगायनेचैतवनरसिकरचनांनिरखिनेनसिरंक्तं ॥ ३ ॥ श्रीबालकहस्त
 सदासहजवालकदमाकमललोचनसंक्तं ॥ हारखितरुधिवदंक्तं ॥ नक्त
 माउगमुददकरनगुरामिहजमंगलश्रीगोकुलनाथसिलंडांक्तं ॥ ४ ॥
 श्रीरघुनाथधर्मधुरिधारसोनासिंधुरूपलहरीनडरवदरिवदांक्तं ॥ ५ ॥
 तितउधारनमहाराजश्रीजिदुनाथविसदंभुजदाथसिरसिपरसं

त्रिकरदांक्तं ॥ चक्रभुजदामपस्योधारेंद्रणप्रसकरेंसकलकुलचर
 णं ॥ मस्तनोरउठियांक्तं ॥ ६ ॥ रागनैरुत्तिताल

श्रीविठलनाथसकलजवंदन॥१॥ निगमपुकारेनलहेंपार॥ मोठाकुर
अकाजीकेघर॥२॥ लीलाललितगोवर्धननाथ॥ ५॥ रागजैहूं॥ चर्चरी
श्रीविठलनाथैकेचरनसरन॥ श्रीविघ्नननंदनंकलिककलिवंड
नेपरमपुरसंत्रेतायदरन॥६॥ सकलउरवदारुणंभवसिंधुतारणंभवसि
ंधुतारणंभवसिंधुतारणं॥ जनहेतलीलादेहधरनंकम्हडासप्रभुभव
मुखयोसांगारंरुतलेद्रुनकंपगटकरनं॥७॥ रागजैहूं॥ तालचरिषातम
मेंश्रीमुखदेखनहूंसेवकजनठाढेहेघारजेजेजैश्रीविघ्नननंदनदर
सनदीजेपरमउदार॥८॥ सुंदरिण्यांसमुजगतासीवामेधगंभीरगिराम
मुधार॥ नेननिरखिहोतपरममुखश्रवनमुनाचतवचनमुधार॥९॥ नयन
मंगलतनश्रवनमंगलजसपुरुषोत्तमलीलाश्रवतार॥ भगवांनदासना
यवलिहारीअगनितमहमाचरननअपार॥१०॥ रागजैहूं॥ चर्चरी॥ विमद
जसश्रीविघ्ननमुतकोशानउठतअनदिनगुनगांकं॥ कलिमलहरन
चरणचितधरिशखंउपाजियरममुखविमरांकं॥११॥ नक्रनवरअरुनक

कोरसजानेमानेमनजिनमोतिनसूंकुंछांजुं। छीतस्वामीश्रीविवलगि
धारीकोमुमरनत्रश्मदासिधिनवनिधियांकां। शारागजैस्तं। चर्चरी॥
मोमंश्रीवद्वनमुतकोठवतदीरमनांलजिनांम। श्रानंदकारीमंग
कारीश्रमुनहरनजनपुरनकांम। एयहलोकपरलोककेवं
दिनसकेतुम्हारेगुनग्रामानंददासप्रभुरसिकसिरोमनिराजकरोगो
कुलमुषधाम। शारागजैस्तं। चर्चरी॥ न्यारीन्यारीकृपान्यारीन्यारी
॥ एककीएकनजातिमेवक॥ न्यारेन्यारेरसफिरतसवनन्मदप्रग
टप्रतायश्रीविवलदेवक। कृपादिष्टिसोत्रनेकप्रकारनिश्चरनवंद
मुधावरवेवक। जनकन्हडश्रीवद्वननंदनगोकुलकीजीवनिड
देवक। शारागजैस्तं। विजासा॥ मेरेवलश्रीगोवर्धनधारीको-
नदीरलेखं। सबविधिसखलीहोमवविधिजनवनवरंगसखदेखं। य
वद्वननजमुगांजुंसकलश्रयदानलेखं। कृष्णदासप्रभुराधावरमि
भूतलजनमविसेखं। शारागजैसा॥ ॥ बोहरिकृष्ण

लप्रगटे॥ श्रीविवलनाथदमारे॥ द्वापुरवमुधानारहस्योदरिकलजु
 गजीवनधारे॥ १॥ तववमुदेवगृहप्रगटहोयकेकंसादिकरिपुमारे॥ अब
 श्रीवद्वनगृहप्रगटहोयकेमायावादनिवारे॥ २॥ एमोकविकोहेजगम
 हायावरनेगुनजुनुम्हारे॥ मानिकचंदप्रभुकोमिवखोजतगावतवेद
 पुकारे॥ ३॥ रागनैतं चर्चरी॥ जे श्रीवद्वनराजकुमार॥ परपारवंडकप
 टखंडनकरिसकलवेदधुनिधार॥ ४॥ परमपुनानतपोनिधियावनत
 नमोजाजितमार॥ निजमुखकथितकललीलामृतमकजीवनिस्तार
 ५॥ निजमतिमुदटमुक्ततकृतहरिपदनवविधिनजनप्रकार॥ इरितदु
 रेप्रवेतप्रेतगतिहतितपतित्तधार॥ ६॥ नहीमतिनाथकहांलोवरद
 श्रीगिनतगुनविस्तार॥ छीतस्वामीगिरिधरनश्रीविवलप्रगटकृष्ण
 अवतार॥ ७॥ रागनैतं चर्चरी॥ श्रीगोकुलजुगजुगराजकरो॥ यह
 मुखनजनप्रतापतेकवरुंछिनुस्तनतनटरो॥ ८॥ पांवनरुपदिरवाय
 ज्ञानपतिपतितनुपापहरो॥ विस्ववदितदीनीप्रेतनगतिक्योनजगत

उधरो॥२॥ श्री॥ वदन्नकुलमरदाइं दीवसजसमकरंदमरो॥ नंददास
प्रमुखठगुनसंयातश्रीविठलेसवरो॥३॥ रागनैरूं॥ चर्चरी॥ जयतिज
यतिश्रीवदन्नमुवन॥ उधरनत्रीयमुवनफेरिनंदकेमवनकीकेलि
ठांनी॥ ४॥ गिरिधरधरनसदासेवतवरणधारव्यासोवरणजरतया
नी॥ ५॥ वेदपथव्याससेहनसमदामसेज्ञानकुंकपिलसेकर्मजोगी॥
साधतक्षणाणिपुनमनरुदृजराजप्रगतमुखरासिमनुइंजोगी॥६॥
सिंधुसमगंभीरमिलनरंगनीरशीतिकोंनलखीरुदृजउयासी॥ ७॥ ध्यां
नकोमनकसेनक्तिकोफनिगसेयाहंतेंवसकीयेबसरासी॥८॥ म
नहूंइंजीनुजितिकलसोंकरिश्रीतिनिगमकीचलिनातिअसिवि
धेकीरहितअनिमानतेंवडेसनमानकेसीलअरुदांनगोविंदटे
की॥९॥ सदानिर्मलबुद्धिअष्टसिधिनवनिधिदासेवतजहांन
दासी॥ रामरायगिरिधरनजांनिआयोसरनदीनकेडरवहरनघोरब
वासी॥१०॥ रागनैरूं॥ तालचर्चरीजयतिराधिकारमणजुगवर

श्रीवद्वनमाधीममुतविठलेसे॥ दामजनलोकिकोलोकिसेसर्वथा॥
चविंतोदयतिरुदयदेसे॥ १॥ थापयतिमांनसंसततकातलासमं
हजमकुमारुविररूपवेसे॥ नाललगतितिलकमुद्रादिमोनासरस
ताकावधमिरवकुलकेसे॥ २॥ महजहीमादियुतवदनपंकजसरस
वनरचनायरायतमुदेसे॥ रहतमाधनचरनरेनुधनदोषयनदासह
दासकृतनिजवलिसे॥ ३॥ रागजैतुं॥ चचरी॥ परममनोहरश्रीगोकु
गांव॥ प्रगटेपुरुषोत्तमश्रीविठलयतितयांवनविरदवदेनांव॥ १॥ नं
नंदनश्री॥ वद्वननंदन॥ सुतिनागवतमुखरात्रिगामचौदलोक
अधिकअधिकअविनितविहारवृजवैकुंठधाम॥ २॥ आनंदकोटि
मलजसगावतदातासदासकलमुखकांममनोहरदासधनुश्री
सोईमनक्रमवचनचरनविश्राम॥ ३॥ रागजैतुं॥ चचरी॥ विसदमुजस
वद्वनमुतकोशातनुवतअनुदिननितगांऊं॥ कलिमिखहरनच
णचितधरिराखंनुयजेपरममुखडखविसरांऊं॥ १॥ नक्तवचरसज

निकोरमजानोंमोनेमनजिनसंतितहोंकुंधांऊं॥छीतस्वामीश्रीविवल
गिरिधरकोमुमरतमहाश्रष्टिमिधियांऊं॥१॥रागनैरूं॥तालचर्चीकौन
आवेगोकुलजनममता॥छिजअवतारनरभूरजपतयध्यानधुप्रतम
दनमत्ता॥५॥जयकोटितोहोयपरिश्रनरुषियतीअनश्रीहरिजमता
मुक्तप्रसादयामवानेंमिवब्रह्माइंद्रपछीहोयनमता॥१॥रविसमिके
टिष्कासहंदावनसरदनिमागोपीमगरमता॥त्रिभुवनमहाहजलो
कवंदनीश्रीवद्वनदासवरनदासहोयनमता॥३॥रागनैरूं॥ ॥
श्रीवद्वननंदनदीनबंधुआनंदकंद॥मायावादनिवारनकारनप्रग
टेनिजछिजवरश्रीहंदावनचंद॥५॥जनानंदनिकुंजनिवासीरसवि
लासीयरमोनंद॥विष्णुदासप्रभुअगिनितमहमांयारनयावतनेतनेत
शु॥७॥तेछंद॥१॥रागनैरूं॥चर्ची॥श्रीविवलजूकेवरनकवलमलय
रसदारहोमनमेरो॥सीसलमुनासकलमुखदायकनवसागरको
वेरो॥१॥रसतारदतरूंनिसवासरप्रभुयांवनजमतेरो॥सगुनदासइ

नोंमांगतदेनृतनृतकोवेरो॥शारागदिलादल॥॥गोवर्धनगिरियरवा
लमतचहंदिमधेनधरनीधावतजेनवमुरलीमुखरमत॥॥मोरमुक
वनमालमरगजीककुक्कुसमसिरखसननवनयहारलीयिवह
त्रीयनिरवजगंचलहरतमा॥॥छीतस्वांमीवसकीयोवाहतहेमां
भवासवगयतजठेमिमस्तनतफिरिआवतश्रीविठलजीयवमत
॥॥रागजैरदा॥॥०॥श्रीविठलनाथनेनननरिदेखें॥॥३॥ननएमनोरथ
वकब्रह्मतीजुजीयअयेखें॥॥१॥श्रीवहन्ननमुतमरनविनांयाछेंते
हेनगएअतेखें॥॥२॥सचतुर्जप्रभुसबमुखनिधिअवरहीयेक्रपा
वेसेखें॥॥३॥रागजैरदा॥॥०॥अजियद्वहननमुवनमुजानगुनप्रताप
करुणांछविनिधिननिधिनहींउपमांकोआन॥॥१॥तिहंपुरअष्टदिमाज
मगोगावतवेदपुरांनमायावादखंडनहंकेसरीयहतोप्रगटप्रमां
॥॥२॥श्रीगिरिधरदिजरूपदिखावतकलिजायविनुवतजांनि॥॥वि
दामप्रभुअनदिखावतविश्रस्वामीमतठांनि॥॥३॥रागजैरदा॥॥०॥

जयति श्रीवृद्धनन्दनं महालक्ष्मीगर्भरत्नविप्रकुलनां नन्दोत्तकर
ता ॥ मुनगमावनधरनमकुमारश्चैतायहरननखमनिचंद्रकेलि
रहन्ती ॥ १ ॥ जयति श्रीगोपीनाथप्रभुजविस्वउभाकररुक्म
तीन्द्रादिनर्तदासगोपालप्रभुस्वरूपप्रभुगराजही श्रीविवलना
गिरिराजधर्मा ॥ २ ॥ रागमारेग ॥ मदादृजहीमंकरतविहारतवके
गोपनेरवप्रवकेधिजवरप्रवतार ॥ तवगोकुलमेनंदमुवनप्रव
वदननराजकुमार ॥ आयनवरविटिखावतप्रोरेष्टमर्तिसिवामार
१ ॥ जुगलरूपगिरिधरनश्रीविवललीलाएकप्रभुमारचित्रप्रभु
मुखमेलनिवासीनक्तनकृपाउदार ॥ ३ ॥ रागमारेग ॥ श्रीवृद्धन
गृहप्रगटनश्रीविवलनाथहमारे ॥ श्रीवृद्धनकुलदीपकसिरो
मनिकलिकोवतितवधारे ॥ ४ ॥ नन्दनंदनप्रानंदकंदजीवनधनप्रा
नहमारे ॥ मनकंसवचनकायिकहतहोवोहतप्रधमकुलतारे ॥
गवारतिथिनामीधनिमुनदिनवृजमं

रमाधोको प्रभु सरवमुहहमारे ३ ॥ राग सारंग जयतीरुक्मीणा
नाथपदावती प्राणपती विप्रकुलछत्र आनंदकारी दीपवह्नन
वसंजगतहितकरनकुंकोटि उडराज समतायहारी १ जयति नक्त
जननक्त यष्टि पतितयांवनकरनकामजनकांमनांशरनसारी २ न
क्तकाजननमुक्तदायक प्रभु सर्वसामर्थ्यगुनगननिनारी २ जय
ति अखिल तीर्थफलनामसुमरनमानवा सवृज निन्नगोकुलविहा
री नंददास निनाथपति गिरिधर प्रगल्भवतार गिरिराजधारी ३
राग सारंग ॥ गायनमोरतिगोकुलमोरतिगोवर्धनमोक्षप्रतिनिवाही
गोपालचरनसेवारतिगोपसत्त्वामवप्रमृतप्रघाई १ गोवांनंजुवे
दकीकहीयतश्रीजागवतसवेप्रवगाही ॥ वीतस्वामी गिरिधरन
श्रीविलगोवर्धनकीखुररेनमहराही २ ॥ राग सारंग ॥ एसा
शीतकहंनहीदेखी ॥ जमुमतिमुतश्रीवह्ननमुतजेसीसेसमहस्र
मुखजातबलेखी १ वितवतरहतसदागोकुलतनउजकिजंखि

ऊरोरवनिपेश्वी॥ कहीयत कथा जलदवा न कसी कुमदनी चंद
 रविसेरवी॥ २॥ शनको कायो मवेजीय नावत करत सिंगा रवि विन
 रवी गोविंदो वर्धन मांगत विष्णु रक्षजि नियल अर्धन मेरवी॥ ३॥ रा
 रंग॥ ॥ श्री विष्णु संगल रूप निधान के दिप्र मृत सम हसि
 बोलनि सब ही को होत कल्याण॥ १॥ करुणा सिधु कृपाल कृपा वि
 दैत अने पददान॥ सरन आ एकी लज वहुं जुग वाजे प्रगटनि सांन
 तु सरे वरन कमल मकरंदहि॥ मनु मधुकर लय टां विसु दस घो
 सगावत रुचत न ही कछु आन॥ २॥ राम सारंग॥ ॥ श्री विष्णु वको
 दन फिरि आरा वेरुय वेरु फिरि की डा करु आय मन भाए॥ २॥ वेरु
 वास करत श्री गोकुल वेरु रित प्रगटाए वेरु सिंगा ओग छिनु छिनु के
 वेरु लीला गाए॥ २॥ जे जमु मतिके आनंद कानो सो फिरि वज्र मे पाए
 श्री विवल गिरिधर यद अंजु जगो विंदर मे लाए॥ ३॥ गुरु श्री

रज
 वद
 जधरा
 तिरि
 गोवं
 मीति
 तार
 वेसी
 कि

मदविकचकरणं १ ध्वजवज्राकुसवायवंदनानां रेखाकुलसजीवीभ
रनं यत्केरोममंगलमीहद्विष्टिधानं नववास्थितरन ॥ २ ॥ जवहोसक
लकांमनांहरकनिधिजावयएतगतामरनेंतेकुरवंतवचसोममवे
तमिगोविंदप्रभुगिरिवरधरन ॥ ३ ॥ राग श्री राग ॥ हमरे श्रीवद्वननंद
ननायक ॥ यहनौचरएतनेइत्यो यहकलुहसरोनाहिनेमनववका
यक ॥ १ ॥ जाकीकृपातेकालडरनांहीनवसिंधुनयोसुखदायक ॥ रा
मदासजनचरनकमलकोमदासरननौतनजसुगाई ॥ २ ॥ राग श्री राग
जाकेसिरछत्रगुसांई श्रीवद्वनगुनरहस्यविचारतवित्तवतदक्षनवां
इ ॥ १ ॥ देतसंवोधनअतिमडवांईअवित्तवददुर्मकानांईअंसीअ
पनांविशदनिवाहतरमयोरवतकेतांई ॥ २ ॥ कालअकालरहितपुरु
मोत्रमकलिफंदाउत्तरतिरेनजांई मगुनदासकहेघरकोलोडानुज
द्वजपंकजदांई ॥ ३ ॥ राग श्री राग ॥ जोयें श्रीविचलरूपनधरतेतोकेसे
याघोरकलिजुगकेमहाएतितनित्तरते ॥ १ ॥ मेवापीतिरीतिद्वजजनकी

श्रीमुखते विस्तरते। श्रीविठलनां मन्त्रमृत
लते। शकीरत विसदमुनीजिनश्रवणनिविस्वविस्वेपरहरते। गोविंदव
लिदरसनजिनियायो सोमगिउमगिरसनरते॥३॥ रागश्रीराग॥
वतनाथप्रनाथकेतारना। श्रीवद्वनगृहप्रगटस्ययहधस्योनक्तहि
तकारना। शहीनबंधुहया सिंधुसहजहीजगतनक्तविस्तारना।
चतुर्भुजप्रभुकेनितमतचलतलालगिरिधरना॥२॥ रागश्रीराग॥
प्रगटके श्रीविठलनां मकहयो कलिसिंधुनूवनार
॥ धर्महीन दीनदेखिजिसस्यधरायो॥ पारवंडरवंडकपटतजिनजन
नेददिरवायो॥२॥ नरनकरमसरमसकलविकलतेवाछिडायो
तत्रैलोकसजसजनगोपालेगायो॥३॥ रागश्रीराग॥ । प्रभुताप्रग
श्रीविठलनाथकी॥ प्रांतज्ञानसवध्यांनवाममतिइहिवि
प्रकाथकी॥ शक्तनावप्रगटोयहमारगकलिगुग
सरनजांतहीकरतहुतारथकरगहिसहजप्रना

दामासपरिधरनद्यायात्रं वृजहाथकी। कृपांविसेखविराजितनि
मदिनजोरी श्रीगिरिधरसाथकी॥३॥ राग श्रीराग॥ नक्तप्रगटकरिवे
हूंकेवलश्रीविलम्बवतारमजनविमुरचञ्जानमतकैवहोजात
संसार॥१॥ करिकृपानिजुनांभवतायोचवनचतुर्दशसार। लोकवेद
मर्यादाराधीवरनवरनवोहार॥२॥ कारनवायधरतलीलावपुञ्जगज
गप्रतिप्रधिकार। अवचनुरुधश्री। बह्वननंदनप्रवलोकनिनित
विहार॥३॥ राग श्रीराग॥ नारायणगायो ब्रह्मागायो नारदगायो व्या
सगायो। सारदगायो। नक्तछथमनिर्वदनगायो देवलोकनृवलोक
रमातलस्थिरवरवरप्रमोदयसगायो॥१॥ श्रीदामासेचनवरगायो। श्री
हंदावनकेमधुयनिगायो। शेषगायो महेसगायो। श्रीराधाजूकीसह
बरीगायो। श्रीबह्वनरत्नललताएतें। गेरिधरजमुकुलदासगायो॥२॥
॥ राग श्रीराग॥ श्रीबह्वनराजकुमार। अवकेकृपाकीजेवलिजेजं
भरेतोनांहीअनतकाहंश्नवरकमलविनुवांजं॥१॥ होअप्रसूचीअरु

तश्च पराधीनसुखहोतलजंजं। तमकृपालकरुणामयहो प्रभुश्च
धमनधारननांजं। १॥ कलूखजटितमनमलीनलोहज्योत्स्नेतक्षतेना
विकांजं। माधोहो यतिततवयांवनयदयारसयरसांजं। २॥ रागश्री
राग॥ गुनगांजंरीवालगोपालकेमोहनलालकेगुनगांजं। मधुरा
मधुरीमूरतिदेवतश्चानंदमदनमदनमोहननेननिमैर्ननियांजं। ३॥
श्रीवृद्धननंदनजगतवंदनसीतलवंदनतायहरनमोऽमहाप्रभुश्च
करिचरनचितलांजं। ब्रीतस्वामीमनवचकरियरमोऽधर्मएऽमेरेश्रीव
ृद्धनलाडिलोलडांजं। ४॥ रागश्रीराग॥ ॥ परमकृपालश्रीवृद्धननं
दनकरतकृपानि। जूहाथदेमाथे। जेतनसरनश्चायश्चनुसरिहंगदि
मोपतिश्रीगोवर्धननाथे।

रावहेनाथे। कहेकलदासकाजसवसरिहेंजो जौनेश्रीविठलना
२॥ रागश्रीराग॥ चतुरकीचतुराईफवीजुश्चवे। मनमुषङ्गश्रीव
ृद्धननंदनविहसिकहोतश्चायेरेकवे। परहीनसाधसाधनकीश्रव

कबुफलयोवतुराधिसवेयातेरैकहावाहं प्रमुत्रपनेमां ऊरुं
गन्तेजवे॥२॥ राग श्री राग॥ गां ऊं श्री विघ्न ननंदन के सुन गां ऊं॥
ला ऊं सदा मन्यं धूमरो जनपां ऊं प्रेम प्रसाद प्रतदन॥१॥ नां ऊं सीतल
डां ऊं लालहि आनसरन यदीजु यरोजन॥ वीत स्वामी गिरिधरन श्री॥
विठल ऊपरवारों कोटमनोज॥२॥ राग श्री राग॥ जयति सुरवद्वन
राजकुमार मेरे मन वसें॥ आजान नुज डंड करि वंड माया वाट् डंडी वादी
मुख अमुध अमु रक्त यनिन से॥१॥ सकल विद्या सरश्रुति नागवत उ
चार दिग विजेधनुधस्यो अमु रदेरवतन - से॥ गोविंद जन आदिक लि
गहमत जीव जे सिस्त्रने कर कमल मृडल मुसकनिह से॥१॥ राग श्री
राग॥ श्री विघ्न नला डिले होतु न्हारे चरन कमल सरन॥ नां मले
तपाय हरत ब्रह्मादिक श्रुति करत सुनी यत्न नै लोक मुद सयति तपां
वन करन॥१॥ सुरनर मुनि नाग देन करत हेंदिन रेन सेव विमल वचन
वदत वेद प्रगटे हें आरति हरन गिरिज धरन वलिहारी श्री विठल गि

疏

2011

६३

॥

解

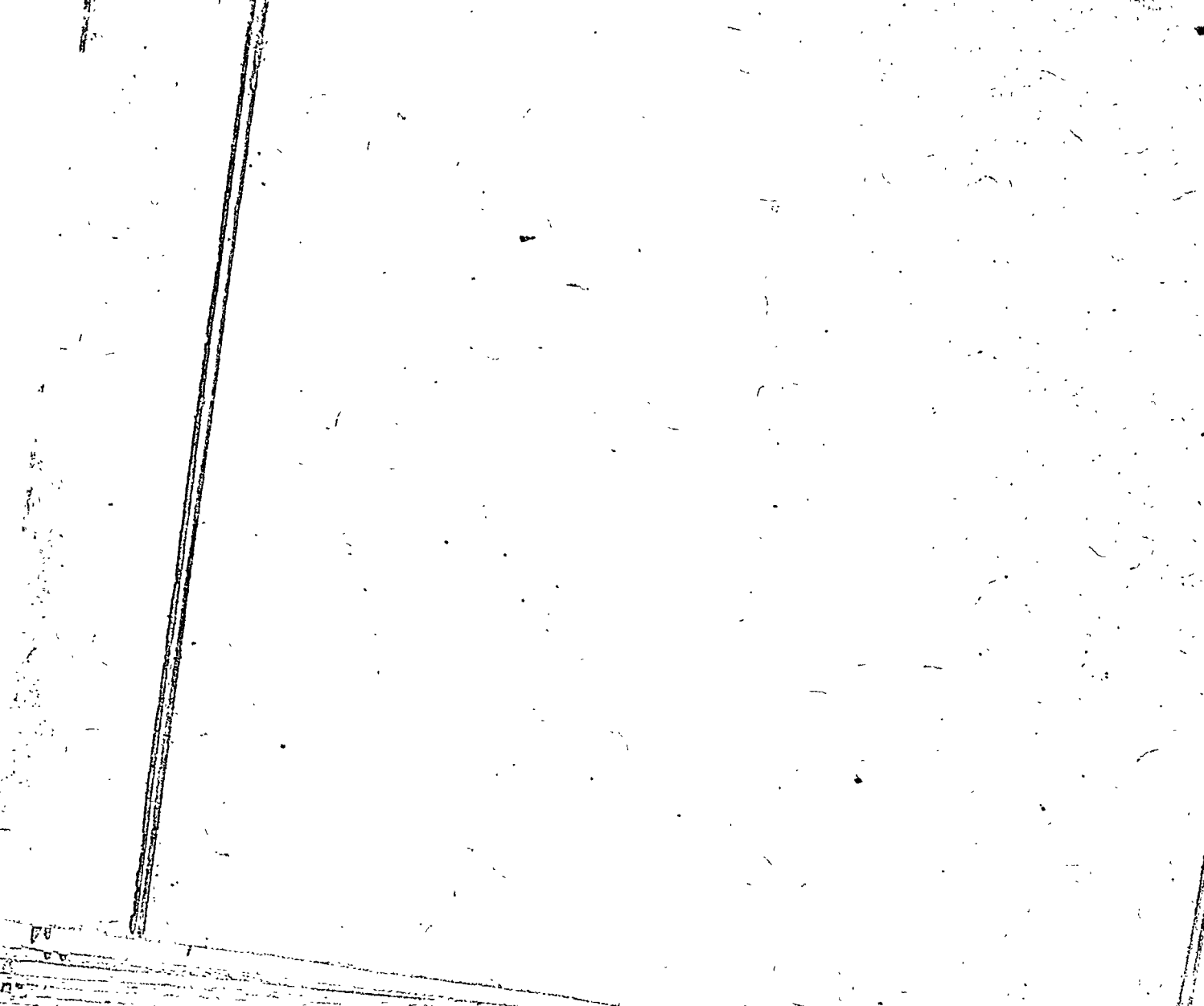
[illegible]

श्रीराम॥ प्रकारेंवाटेयोजमराजडंडफांसीप्रभुधरोमडारेंभवनरहूं
कहाकाज॥१॥ श्रीविवलवदनमजूकेनंदननविधानकप्रकाशपावन
पतितकायेकलिजुगकेतासौनपरेंजमकांस॥२॥ घरघरजननश्रीवैद्य
मागवतहस्त्रिमश्रहर्निसवैसेकोऊगांवें॥ श्रीकृष्णनामगुनवेदकरना
विधिसोगुरुहोयसिरवांवें॥३॥ जहोजहांहस्तजातममपेरकतहांतहांते
फिरिआवें॥ प्रगटीप्रतापप्रगटितस्त्रिवरकोकितहनफांखनपांवें॥
सत्यस्वरूपप्रगटितवसुधापरश्रीविवलनामकहाए॥ नाममहास्करि
अधमउधारेअघडःखहरियलाए॥४॥ मुनिववनजांनिनिजजीयमेमन
कमववनमुखकीजे॥ जेहस्त्रिवरननतेविमुखरहतहेजाहिडंडतुमदी
जे॥६॥ जितनेयहकुलप्रगटरूपहेसोनाकोकहिजांने॥ कामराज
निवासीआंननेदजेआंने॥७॥ रागमालवगौड॥ श्रीविवलवदनसरनमे
रेंनिजजनयोखनकलिकेरे॥ रूपनामगुनपरममुपांवनप्रगटनएउ
धरनतेरे॥ जनमजनमजाकेकरतसाधनचितवतनांहिनेंफेरे॥ श्रीव

अनमृतगोविन्दसप्रभुजसगावतवेदविमलतेरे २







श्रीराधावल्लभाय नमः। अथ वसंतके पद लिख्यते। राग वसंता राधे देवि
नकी वातरितु वसंत अनंत मुकलित कुसुम असु फलपात वै निधुनि नंद
लालवोली सुनि अवे कौं अलसाता करत कत वै विलंबना मिनि ठथा अ
सरजाता लाल मर्कत मनि छवी लो तुम जु कंचन गाता वनी श्री हित हरि
वंश जोरी जै गुन गन माता। राग वसंता श्री राधे वन विनोद वसंता अनि
ल त्रिविध सुगंध हाटक पचित सुधाल संता। विविध अक च प्रसून पल्लव
नूत कोकिल कीर निरखि दंपति मुदित निर्वृत नवनवरहि अधीर मत्त अ
लिचल गुंज मधुर वै पुल किषग मृग हंदा गां न जुवती कदंब किंकिनि मुषर
नूपुर मंद मलयसार सुगंध चंदन चरचि जुगवर अंग जै श्री दास वन मा
ली कपिस पटु कृत पं असु नमय रंगा। राग वसंत देषो हंदा वन कुसुमि
वसंता नंदित कीर कोकिल लसंत जाय जुही मध्वी रसाल अमित मुदित
अति अंगमाल कलकूल के कीन वमराला वन विहरत दोऊ रसिक ल
ला एल लितादिक सव सरवी संग जहां तहां वाटे अगनित अनंग प्रीतिः

मसुषसहतं गङ्गा हसतपरसपरजरतरंग ॥ २ ॥ डारतचंदनवज्जरंगप्रवीर
साषप्ररगजारंगहैचीरपेलमचौअतिनईहैनीरउमगिचलोअनंद
नीर ॥ ३ ॥ कुंजसदनचलेकरतकेलिवज्रविधिवाटीरतिरंगवेलिजैश्रीर
मोदरहितसुखसिंधुकेलिनितविलसोसुखसिंधुजुजकंवमेलि ॥ ४ ॥
रागवसंत ॥ आईब्रजकीवसंतमननईउमंग ॥ पेलैवृजिकीवालनवलाल
संग ॥ सुंदरवरमनमोहनसुजांन ॥ धरैअधरसुरलीकरैमधुरगांनसुनि
मुनिमनतैटस्यौग्यांनध्यांनसुरगगनमगनछकोरसीलीतांन ॥ ५ ॥ वन
पीतअरुनडुमकुसुमपात ॥ फुलीलतामधुपजुतअतिसुहात ॥ पिकमो
रकोकिलाकुरकुहातवहैविविधिपवनसृजकहीनजात ॥ ६ ॥ आईनवत
सनीसजिसजिसिंगार ॥ वरकुसुमगैवउरकुसुमहार ॥ उमावतगुलाल
गावैरंगीलीगारिचलिदेविपरस्परअतिउदारे ॥ ७ ॥ चजंजोरअलीसंग
करतगांनमध्यमोहनप्यारीसंगसुजांन ॥ लविरूपलालहितहियसि
रांनडारततनमनधनकोटिप्रांन ॥ ८ ॥ रागवसंत ॥ राजैहंदावनश्रीनव

निकुंज तहो मधुपकरत अनुराग गुंज गौरस्यो मच्छ विनवलरासि रि
 वसंत जयो हिय जलास चंदन वेदन मथि सुवास छिरकत हसि हसि कं
 रिविलास राजेन वलन वलन सवी जूथ संग कर एक नवी ना डफे मृदंग
 लीये एक गुलाल सुरंग रंग ज ए सुर गित वसन सुदेस अंगार निरंतर
 किसोर जोर छ विनिर पिछ केच ऊँ ओर मोरा वंसी रवन सुनि श्रवन
 घोरा जहां खग कुरंग बांधे प्रेम डोरे ३ कुं मकुं म कलकत तन सुदेस
 विरहे कुवित रुचिर केसा हित धुवनिर खि अरूप वेस कछु कहन
 कत छ विछटा लेसा धारा ग वलंतरा जे हंदा वन मधुरितु लास
 रंगी लोपे मसंपति जलास रंगी ले अमरत रुझल पात रंगी ले विहंग
 वोलै रंगी लीजात रंगी लोपवन रंग रंग पराग छाये जहां तहां रंगी लोराग
 रंगी ले वसन नूरवल अनंत वनै रंगी ले जूथ दोऊ कुवरे कंत रंगी ले तांन व
 जै रंगी ले जाइ रंगी ली नित्ति बिति रंगी ले चाइ रंगी ली नारि देत रंगी ली गारि
 रंगी ले चलै रंग रंग धारि रंगी लो उडै रंग रंग अवीर रंगी ले चपल चख जाव

वसंतः
२
जीर ३ रंगीली नरनिजमगनि अनंग विलसै वसंतरंगीली तरंग रसिव
सिरसरसि एह अनुदिन वाडौ यह रंगीलो नेह ४ राग वसंत देविसषीः
अनुवर्त्योरी वृंदा विपुन वसंत आनंदित वृजिलोग जोग सुख सदा स्या
राज राधार वन वसंत नचायो पंचमधुनि सुनिकांन धरनि गिरत सुर
रकं न्या विथ कित गगन विमान रंगीले वसन नूषन अनंत वने रंगी
छिदौ ऊकुं वरि कंत रंगीली तान वा जै रंगीले जाई रंगीली पुलकत को
लकुं जननुपा सिगुं जत मधुकर पुंज वाजत मऊ वर वै न फां फिड फताल
वजसंज केसरि जरि जरिलै पिचकारी छिरकत स्यां महि धाई छिरकि
वरि वृका जरि चो बाल ईकंठ लपटाय मुकलित विविध विटप कुल व
षतपावत पवन परागत नमन धन नौ छा वरि की नौं निरखि व्यास वड
ग ७ राग वसंत कुंज विहारी प्यारी कै संग वसंतर वेलत वृंदा वन मै गौ
मसो जाह रक्सागर मोद विनोद समात नतन मै न मै तन मुषकी सारी
मकुम रंगी जीर हीन देषियत तन मै उरज उघारे से अनियारे चूंजित

नागरकेलोचना। धाड़धरिआंकोनरिजांमिनिहियलसतज्योदा। मिनिघनमे
व्यासस्वामिनीकीछविछीटें। प्रतिविंवितमोहनआंननमैं। गारागवसंत। प्र
थमसमाजआजिहंदावनविहरतलालविहारी। पंचमीनवलवसंतव
नउमगिचलीटृजनारी। कंचनधारलीयेजुवतीजनमधिवरवजां
फलदलजवनवनुनमंजरीकनककलससुअकारी। गावतगीतवजाव
तवाजेमैंनसैंनउनहारी। दरसपरसमनमोदवढावतराजतवरछवि
री। चोवाचंदनअगरकुमकुमांजरिलीनीपिकारी। छिरकतफिरतछवी
लीगातनिरंगअरूपअपारी। विपुलविलासहासरसचरणतउतशीतमंड
तप्यारी। हितहरिवंशनिरषियकसोजाअपियांटरतनदारी। गारागवसंत
नवलवसंतनवलहंदावननवललालषेलैहोरी। नवसतसाजिनएरंगप
हरेनऊतमकेसरिघोरी। नवनवसाधिजवाहिकुमकुमां। अवीरनरेजरि
जोरी। नईनईसरवीनईछविपावतनवलनवलवनीजोरी। नईसहनाईन
एउफवाजतनईमुरलीधुनिधोरी। नवलसरवीमिलिचांचरियावै

तः
3

राधिकागोरी कालिंदीतटनवतनशो नानवलचकोरचकोरी हितहसि
सवेमरसक्रीडतनवलकिसोरकिसोरी ॥ रा व त आईआईवसंत
तु अनंतकंतनृतमोरै बोलतकलकोकिलाकुरुकुरुसरसदोरै फनीव
जाइराईकुंजकुसुमजोरै मधुआगैमधुपानैमधुपफिरतदोरै चलिये
जहांतहांकुंजमहलचोरै गोविंदप्रभुनं धेनतइकमोरै ॥ रा
त वसंतवंधावोचनौवृजिकीवार्जरी वो गरिराध
इजगाचंशबलि तमुसीले रध
अंवमोरजौलीले कसं जि
नईनईकेलिकरैमो लकं
बंदनउडतगुलाल
ररि तालमृदंगजां
रनागरकीउतरसि
जपंचमीसुनदिनपूजी

रतपरसपरकरिंनानारंगगावतरागहिंडोलप्रियापियच्चाइरस्योसुखस्स
अंगः हितवह्नजलपिनिरपिनिरखिवलिलकितकोटिअनंगइति
रागवसंतसंपूर्णअथचांदिनीकेपदलिप्यते। रागकांनरोराजतमानौ
एकानिसिप्यारीजगमगातगौरतनकीडतितैसीयेमंजुलउज्जलसारी। जूव
नभूषितउडगनसोजाअंगअंगराजतसुंदरतारी। चारुवदनससिसंहरन
ससिकैलिरहीनिर्मलउजियारी। प्रीतमनैनचकोरसोपीवतहसनिमुधा
रसकीवरपारी। दामोदरहितआनंदसागरवाढो। आंतालनजरसहचारी
परागकांनरो। निकसिकुंजतैंगढेसरदउजियारीरीनीकीलागै। फूलन
केआनूषनअंगअंगसौंधैनीनेवागे। अतिअनुरागजरेपियप्यारीगाव
तकेदारोरागेजनजगवांनआजुवनदूटतकछुरजनीदोऊजागे। इति
नीकेपदसंपूर्ण। अथचंदनरचनकेपदलिप्यते। रागसारंग। चंदनवि

निरागनिसरससमाजै ॥ राग गौं ॥ मरहरिके अंग को चंदन लपटा नों री
तेरे तन देखियत है जैसे पीत चोली मरगजे आनरन वदन छिपावत छिपे
न छिपाये कस चोली कजं अंजन कजं अल कर ही छुटि सुरतरंग की पोटा
वोली श्री हरी दास के स्वांमी स्पों मां कुंज विहारी मिलत विहार निहास नर
ह्यो कंव विच आली ॥ २ ॥ कन्यों सषी चा रुचंदन को वागो सुजग मनोहर अंग ॥ रूप
सुधा सागर में मां नों छवि के उवत तरंग अति गंजीर वटत छिन छिन प्रति ड
तितन संग मप्यारी संग दां मो दर हित सह चरि जन मन मीन फिरत नरे रंग ॥ ३ ॥
राग सारंग चंदन वंदन की तन सोजा मन अनिसन छिन्न प्रगटे घन विमल
वसन विच आना करि सिंगार सह चरि लै आरु सुख देखन के लोना श्री वि
हारी दास स्वांमिनी मुख निरखत काम विवस चित चोना ॥ ४ ॥ राग ईश न कल्या
चंदन विच विचित्र विस अंग अंग कीये वाटोरी मन मोह नों जव तैं दृष्टि पस्यो
रीत वतैं कछु न सुहात न दू मोहि कां मधां म आछे सोहन लाल पाध सिरटे
टीरा जत सषीय निति रिछी करि करि जोहन हित वल्लभ कटि पीत पिछो
बेला ग्योरी मन मोहन ॥ ५ ॥ इति चंदन रचना के पद ॥

अथ जलविहारके पद लिख्यते ॥ राग पूर वी ॥ मन मोह करि मान सरोवर ते
लत श्रीधर मरि तु रजनी सजनी संग विहरै ताप पग पे लत ॥ बुडकी लै जल ही ज
ल आये हरि सहचरि को वपु धरि थाह लेत ही कुंवरि राधिका धाई धरी आं के
जरि परिरंजन चुंबन पहचान्यो नागरि जां न्यो नागरा इह विधि जल चै थल
विहरत छल वल घास प्रचु सुख सागरा राग मार वो पूर वी ॥ जल विहार स
मयो मन जायो ॥ बसन नीजि लागे अंग अंग सौं छिरकत जल छीट निजर
लायो ॥ बुडकी लेत चलत मीन न ज्यों परसति अंग अनंग जगायो जल क
उ करि कमल नैन हित वसन पहरि उपवन सरसायो ॥ राग विजासा क
होय हका की वेटी कहो धों कहाया को नाऊ ॥ तुम सवर होरी हूं उतर दे ज
चले कि निजा ऊढोटा बाउ बावरो गाऊ ॥ सव सषी मिलि छिरका जुबेल
न लागी तो लौ तुमर होरी जौ लौ हूं नाऊ ॥ श्री हिरिदास के स्वामी स्यामा
ऊं ज विहारी लै बुडकी गरे लागे चौ ॥ कि परी कहां जाऊ ॥ राग मलार ॥
विहरत जमुनां जल जुगराज ॥ श्री हंदा विपिन विनोद सहित नंद जुव

लीनव्रजसमाज छिरकतछैलपरस्परसाजैसपीसंपत्तिरतिराजनव
लनागरीदासश्रीनागरसेलतजलैमिलिआजाधारागपंचमासेजसरे
व्रजराजतहैजलमादिकहूपजरेचैतुराईअंगनिआजातरंगनठैतहांमीन
कदाबिनकीचपलाईप्यारीसपीनरिअंजुलिनैनपीयैतैंगिरानपमा
अवपाईषेमगयंदनैडेरैतौरिकैकंचनकंजचरुंदिसमाईपाइतिजल
विहारकैपदसंपूर्णअष्टदशवनकीहुति॥ पद रागआतवरीहालरोऊ
लरावैमातावलिवलिजांकुघोरवसुखदाताअतिलोयतकरचरन
सथैजैतैब्रह्मादिकमनसासुजैजमुमतिअपनौपुनिरविचारैवारबा
रमुखकमलनिहारैअखिलजुवनपतिगरुडगामीनंदसुवनपरम
नंदलामीरागआखिरी॥ वृंदावनसांचोधनजैयाकनककुंदकोटि
कलगितजियेनजिएकुंदरकनैयाजहांश्रीपदाचरनरैनिकी
कामलाकैदवलेयातिहिसंगगोपीनांचतगावतमोहनवैनवजैया
कांमधैमकोडीरसिंधुतजिनजजनंदकीगैयाअधुतलीलाअधुत

वैभवंसांचोशुकदेवकहैया।चास्योमुक्तिकहलैकहीदेकजिह्वाज्जोसमे
या।आरतिव्यासपुकारतदनमैधोरोलोमसुनैया२रागआनंदरंकरि
मनहंदावनसंहैतनिसदिनछिनछायाजितछाडोरिकनिकैरतरदेतज
होश्रीराधामोहनविहरतकरिकुंजतसंकेत।पुनिनरतरमरंजितदेवदत्त
गंधहोतअचेतविपुनतजैहैनेसुखचाहततेरिगठिजेतच्यलदपकेतहै
वैगोमोहनकहकहदेत।धारागविनवलदग्यैर्यद्वंद्वदलकेपजावेतलो
मराधिकारोनीतीनपदारथकरतमजरीदुखिसैजहोयुंन।करिधरिहो
दतजैवरीधरछादतडालग्यानी।जोगीजपीतपीसंतनरुंनपदहैकनन्या
पठियावेदपुराजलगुनियाकथततगुदेयंयंनी।चरिधरिजेतमनकरंत
हिमायेंकहिव्यासवषांनी।धातानआनंदरंअनेकनकवत्सहै।वपुने
रो।करंकरवाकांधेपरिकांसरिकुंजतसंहिदतने।हृजवत्तिपकपुष्पहृद
मैधरधरछाछिनहेग।धुधाल्यो।जदतंसिजेज्जमेनिदहनसंजसेवरी
रासविल्यासविर्जिकरियांऊनांतरेदुदतवेरै।कनकनर्यद्वंद्वदलहै

हंदावन
६

रिजकनकोचैरोपारागगोडीमाईवाजैवंसीवटवेंसदावसंतरहत
नपुलिनपवित्रसुजगजमुनांतयजदितकीटमकराकृतकुंडलमु
क्षवरमानोंलदादसनकुंदकलीछविलाजतछाजतकनकसमां
पटमुनिमनध्यानधरतनहिपावैतकरतविनोदसंगवालिकनव
अनन्यजनरसकारिनीहितहरिवंशप्रगटलीलानटाधारागव
गिरधरलालसरनितेरीआयोसरनितेरीआयोमहासुषपायो
धनिधनिमातपितासुतवंधधनिजननीजिनिगोर्यविलायोध
चरनचलततीरथकोंधनिजिगुरुहरिनांमसुनायोधनिधा
नवतसंतनकोंधनिरसनाजिनिगोविंदगायोमालातिलकम
बांनोंकागकर्मतुजिहंसकहायोजोनरविमुखनयेगोविंदसे
अनेकमहाउषपायोश्रीनटकेप्रभुदीयोहैअनैपदजमउरण
दासकहायो॥७॥

श्रीराधावल्लभाय नमः ॥ शारागदेवगंधारा ॥ फूलतवेनवलकिसोर एदो ज्वा
नीजनितरंगसुषुप्ततत्रंगत्रंगउविजोर ॥ अतिअनुरागजरेमिलिगावत
सुरमंदिरकलौलघोरा ॥ वीचिवीचप्रीतमचितचोरतप्रियानैनकीकोरा ॥ अ
लाअतिसुकवारिडरतमनवरहिडोरऊकोरा ॥ पुलकिपुलकिप्रीतमउ
रलागतिदेनवउरजअकोरा ॥ अरजीविमलमालकंकनसोंकुंडलसोंकच
डोर ॥ देपथजुतकोवनेविवेचितअनदवडौनथोर ॥ निरविनिरविरूलल
लितादिकविविमुखचंदचकोरा ॥ धादैअसीसहरिवंसप्रसंसितकरिअंचल
डोर ॥ धारागमलावा ॥ हिडोरैवैफलनआर्धनईरितुसांवनतीजसुहाई
कुंजकुंजतैनिकसिहरीनूमिअसनवरनमानोंचंदवधूश्रीस्यांमांजू
विकैलाई ॥ अपनेअपनेमेरमिलीअनुरागमलारहिगावततांननिरु
चिउपजाई ॥ श्रीविहारीदासस्वामिनीस्यांमकैसंगवडौरंगअंगअंगरी
फिरिजाई ॥ शारागसोरठमलारा ॥ हिडोरनांमाईफूलतगोकुलचंद ॥ देव
कंचनकेमनोहररतनजटितसुरंगाटेकाजाकीचारडो

रनिरविलजतअनंग पटुलीपिरोजालाललटकतऊमिकावहोरंग। मरवे
तौमांनिकचुंनीलागीविचिविचिहीरासुरंग। एकलपडुमजहांछांहसीतल
विविधिमंदसमीर। लतालटकतनारकुसुमनिपरसिजमुनांतीर हंसमो
रचकोरचात्रिककोकिलाअलिकीर। नवनेहनवलकिसोरराधेनवसां
गिरधरपीय। २। ललिताविसाषादेतकोयाफूलीअंगनमातजहांलाडिली
सुकवारिउरपतस्यांमफुरलपटात। गौरस्यांमअंगमिलिदोऊनये। एकैमं।
तेनीलपीतडकूलराधेदामिनडरिडरिजात। ३। नवकुंजकुंजकुलायकुल
वतसहचरीचजंअोर। मनोकमोदनिकमलफूलेनिरविजुगलकिशो
र। बुजिवधुत्रिनतोरिडारतदेतषांनअकोर। कलदासकौहजेवासदीजै
नागरनवलकिसोर। ४। राखीतटनलारा। आलीरीफूलतनंदकुवार।
हरननैनीमंदगवनीसजैसकलसिंगार। सुरंगधंनकदंवकेजहांमलयम
रवसुदार। ५। जाकीचारडांडीउहउहीपचिरचिहैसुतधार। कनकपडलीज
टितकीलैगदीसरससुदार। चजअोरतरुनीअरुनवसननिकिकनीज

अरंग नरे नतंग उरज निर निर जे हार ज्वलत चषफ हरात अंच
 नल सतलं वेवार। मृग मद अग रक प्रकु मकु मवास के उदगार मुरव नरै
 पांन निस्पाम स्पामां दोऊ परम उदारा गीत गावै सुक विकेर सरीति कीटका।
 ग्राम मुर घटगांस साधै ताल ताल अपारारी जिरी जे जल हिजी जे जम्यो
 मलार। पीक मोर कूक हको किल नि की सुर नि परी हवतारामे घवर सै
 नरे जल फुही वारं वारा पाला जत जिल पटा तलाल हित ज्यो लोक विचार
 बुवि फवी मद सूदन वलिहारी कोटिक मार चिरजी वो परवत प्रांन पति
 नि प्रांन अधार। दाराग मलारा। फूलत दोऊ सुंदर रंग हिडोरै। स्पाम व
 नत नरसिक सिरोम नि कुदरिवर नत नगोरै नीलां वर पीतां वर अंचल
 घन चपला कै नोरै। श्री हरीदास के स्वांमी स्पामां कुंज विहारी की मूड मुसक
 नि थोरै थोरै। शाराग जै जै वंती। माईरी फूलत नवल लाल फुलावत हजवा
 ल कालिं दी के तीर माईर च्यो है हिडोरना। पतै सेई बोलेरी मोर की डाकरै च
 हूं वोर तै सोई मधुर धुनि लाग्यो घन घोरना। शतै सेई हिलेरी फूल मेयत म

नकीसल॥ अलीनकीगुंजमांनोंमदकीमरोरतां॥ अनंददासवलिहारीजे
रीअदनुतजारीदेविबोहीकीजेजैसेचंदकोंचकोरनां॥ ३॥ रागभौरठमलार॥
गोकुलरायकीपौरीरचोहैहिउरनां॥ कंचनषंनवनायेचितकेचोरनां॥
चितचोरनांविषिषंनवांनिकरतनउंजीसोहनीचौकीकनककीतिहिवन
ककीवनीमनकीमोहनी॥ आईसकलव्रजवधूजूलनसकैलैएकवना
इकीचलिनंदवनोंहिउरौपौरिगोकुलराइकी॥ गावतिचटौहिउरौतारी है
सहीसोहैकोहैसरदससिमुषरहेलसिचपलनैनांसोहनेचपलकौनेंकछु
लजौनांमैंनमनकोमोहने॥ ३॥ सीतलमधुरिधुनिगांनसुनिठघरेसघनधुरि
अंनवहीचलिनंदअतिआनंदवाटौचदिहिउरैगांवही॥ ४॥ आएतहांन
दलालापहरेरूलमालाचदिगयेहिउरैकहारीकहैंतिहिकाला॥ तिहिक
लहजवौलमदनगुपालदुतिपरतिनगनीसिंगारसुंदरतरुकेटिगटिगम
नऊछविवेलीवनी॥ इकहतनवनैदेष्टवनैजएजगनमनकेजाएवलि
नंददासविलासनिधिनंदलालतवतहांआए॥ ६॥ रागभौरठ॥ चलीहैवड्डी २

फूलैजलकैचंदागोरके। विसतसिरनतैफूलैदियेजकजोरके। थजकजोरफ
पटसुगंधलपटै। उगतकछुधनघोरसोफरकैतौ। अंचलऔरचंचलदंमिनी
केछोरकै। वारतिजसोमतिनूषननिअवलोकिडतिसोजानली। वलिनंदश्र
गोविंदचंदकीफूलैजुवैवडडीचली। शारंगधनाश्री॥ नवलहिडोराहोफूल
तजुगलकिसोर। वरजांमिनरमभरेमनमोहनहसतलमतचितवोरा। स्या
तमाललालरसलंपटगोनकरतकतघोरा। पुलकिपुलकितनअंसवा
सिनिरषतमुषनहीधोरा। नीलांधरपीतांबरअंचलचंचलवलतऊ
कोरजे। श्रीदामोदरहितपीतमकाछुविसदावसोमनमोरा। शारंगधना
श्रीमाईरीहोवलिवलियारमकनिसी। सरअहिडोरैकुलावतलाला। नवल
लीप्रतिअत्रिराम। मोहनमारीमुहीवाम। करकतठरसुकतामनिदांम
जलकपदिकयीवांछविधांमारा। गृहिवेनीमुविमुकरमुहांति। नानारंगक
समनिकीयांति। सोनितयाछोआछीनांति। रुपलतामनोफुलीडिनांति
गमैरश्रीमंता। रवादेसवारिमनोहरकंता। सीमफूलकल

देस। सुषराजतला। नतराकेस। ३। पंजनमेजेनजूननेन। विसदविमाल
 पदरमन्त्रेने। धितवनवरयतमुधा। मुनाई। निरपतलालनयलुनअधार्
 श्रुतिकुंडलगंडलजलके। जलतफूलजरेअलके। पीयदियनुपज
 नईललके। देषतलैदगनलगेयलके। ५। जैश्रीदामोदरहितनरिर
 रंग। अंगअंगछविकीनततरंग। वसहनिरंतरऐमनमोर। रसिक
 वरवरनुगलकिमोर। ~~दारापयनासरी~~ देविदेवनसोनाराधेज
 धियेवनसोना। जहांतहांप्रफुलितवनजूही। मानोफूलनेअलक
 ही। पीतअरुनवनफूलेफूल। मानोसोनिताअंगदुकूल। पवनगव
 अतिबंधलयात। पीतहरितअरुगगुचात। हालतलतालताये
 ॥ त। हिलिमिलिकहेततिहारीवात। फुलीडरियांमफयडुलावे। उ
 कंठासोंतुमहिदलावे। लतामाननीमफयमनावे। दोलतडोलतये
 वटावे। श्रीदा। वियननुमिहमहरी। चंदवकडोलतरंगनरी। मानोच
 कांमकेबीज। तुमजलोसुषसांवनतीज। वरिषासितुअतिकुंजनि

हर्षजहांतहांकोकिलधुनिब्रार्थमोरपरम्परवोलेबोलदिषनको
ऐनसलोलासाधाप्रतियोंकहेतगुयालावसीयैआनुकूंजटनवा
मरदासमदनमोहनस्यामाकरोकेलिमेरेमनअनिराम॥याए॥रा
नासरी॥ ॥कूलहिक्कंवरगोयरायनकी॥मधिराधेसुंदरमुकुवाशि
थमहिरितुयावसआरंज॥श्रीवृषभानमगाएषंन॥कादिनवनसौरतः
मोलाखियविरुविरुवोहेहिडोला॥शवरनवरनदंबदिसुरंगाफवी
नेसोनेमेअंगा॥राजतमनिअनरनरवनी॥जूहीगूहीकवरीकवनी॥
एकतैएकसुंदरिमुकुंवारि॥मनहंरवीविविकुमकूमगाशि॥जग
तनवजोवनजोति॥निरषिनेनवकचौधीहोति॥३॥णावतिमुधरस
सुरगीत॥दुलरावतमनमोहनमीता॥प्रेमविवसनईमकतनगाय॥
मग्योआनदउरनसमाया॥धादुरिदेषतगोकूलकूलराया॥सोनानि
तमननअघाया॥मुदितगदाधरनंदकिशोर॥लोवननयेनरेकेवे
या॥१॥आरागमलारा॥ ॥सुनगहिडोरनामाईइहमिरवोसुधराशि

सधनघनवनकुमित्रायोरहेजितकितव्याय। वनीसरसकदंबयडीषिमा
 सरकरलार्ईजूहीजातीमाधवीषकुलितवहंडिसत्रार्ईपवरंगडोरीहेम
 मोंतनिनिरविहीयोसिरार्ईतापरैविराजतलाडलीपीयमुरिमुर्दितकुला
 र्ई॥१॥ पिकमोरकोकिलमधरवोलेकरैदादुरमोर। घटनिमेवगयांतिक
 लके। दांमिनिचहूंओर। हरषिकूकिऊकिगीतगावैसषीतांनमरोर॥
 तालवीनमृदंगनयजेमिलवलेचितवोर। जूगलवंदविलोकिरुलेकूंम
 दनैनवकोर॥२॥ छविरामिरसिकविविन्नविविपहैरेकसुंनीमुनीऊरु
 ल॥ अंगअंगभूषनविविधिराजेहीयअनंदरूल॥ रमिकिकमिकिकूल
 यऊलेषेमवलीमूल॥ चितैमृडमुसकांनिमोवतरातदंयतिभूल॥ जेश्री
 रूयलालनिहारिहितवितनयोहैअनरूल॥३॥ रागगौंडमलार। तुराधि
 लेरीकोटातरलनरे॥ ईतनवकूंजद्वारकदंबयरसिजातनतजमुनालो
 गये॥ आवतजातलयटातलतनिसंअरुनयरडुमआनिछुर॥ कल्पान
 केप्रभुमिरधरमुषसारऊलतनयेनये॥ १॥ रागगौंडमलार। रमिकिकम

किंमैलनमैकमकिमेहआयोहोनहीसुरक्तवातनितै।जव
 पद्मवसकलितफूलफलनवलनवलडुंमतिनतरेकूलतनयो
 हेववावयातनितै।मंदमंदकूलतथंननलागेअंवरअंढैजल
 तनतेंछीतस्वामीगिरधारीईतै॥नजेवागोसारीनवरनकीनीर
 रीनटरतक्योंहंछुटीहेछवीलीछटानिजगातनतै॥१३॥रागमला
 रागौडा।स्वामिनीमेराकूलतरंगीलेहिडोरै।संगरंगनीनांस्यां
 वतोंअंसनुजनिवरजोरै।अतिअनुतरमकनिरसवाक्योछवि
 धिरूपहिलोरै।हितबद्धनतिहिओसरिसद्वरिवलिनेनतोरै

०

दीर्घ

५

०
१
२
३
४
५
६
७
८
९
१०
११
१२
१३
१४
१५
१६
१७
१८
१९
२०
२१
२२
२३
२४
२५
२६
२७
२८
२९
३०
३१
३२
३३
३४
३५
३६
३७
३८
३९
४०
४१
४२
४३
४४
४५
४६
४७
४८
४९
५०
५१
५२
५३
५४
५५
५६
५७
५८
५९
६०
६१
६२
६३
६४
६५
६६
६७
६८
६९
७०
७१
७२
७३
७४
७५
७६
७७
७८
७९
८०
८१
८२
८३
८४
८५
८६
८७
८८
८९
९०
९१
९२
९३
९४
९५
९६
९७
९८
९९
१००

अथ पवित्रा के पदा ॥ राग सारंग ॥ पवित्रा पहरै गिरधर लाल तीनों लोक प
वित्र जये हैं सुंदर नैन विसाल कहा कहौ अंग अंग की सो जा उर राज तवन
माल ॥ कृष्णदास स्वांमी गोकुल में विहरत बाल गुपाल ॥ राग सारंग ॥ वरव
नै पवित्रा पाट के उर उदार जो हचाप मदन सर कुंम कुंम तिल कलिलाट
के ॥ निरखत नवल कि सो रजोरतन मिलत न पलक कपाट के ॥ कृष्णदास
मन तरन मनोहर सुष समूह सषी गट के ॥ राग विलावल ॥ पवित्रा पहरत
गिरधर लाल तीनों लोक पवित्र जये हैं श्री वीठल नैन विसाल ॥ कहा क
हौ अंग अंग की सो जा उर राज तवन माल ॥ चत्र चुज प्रभु सुरव सील निवा
सी नरक नको प्रतिपाल ॥ राग विलावल ॥ पवित्रा पहरत राज कुमार ती
नों लोक पवित्र कीये हैं श्री वीठल गिरधर धार ॥ अति पै विचित्र पिया
वज्र विलसत ॥ निरखि मग न जयो मार परमानंद पवित्र कीये हैं गोकु
ल के नर नारा ॥ राग विलावल ॥ पवित्रा पहरत गिरधर लाल वांम जाग
दृख जो न नंदनी वो

मां नैं ऊँ कमल अलिमाल कुंजनदास प्रभु त्रिभुवन मोहन नंदन दनव्रज
 बाल २ रा सा ग प वित्रा पहरेश्री गिरिवरधारि श्री खजान सुता संगरा
 जत अंग अंग छविन्यारी १ हाटक पञ्चपाट पचरंग कोमलिमालादिग
 सो है निरखित नैन नैन गति थाकी जो जो है सो मो है २ सो जा सो ईस कल सु
 ख सागर मांगी गोद पसारि परमानंद परति नहि पलके अपनो तन मन वा
 रि ३ रा सा ग प वित्रा पहरत श्री विठलनाथ श्री गिरधर आदि ग्वाल
 सब वैठे सो नित हे सब साध १ अपनै जनकी नैं पवित्र ले दिये पवित्रा हाथ
 गोविंद प्रभु करुणामय वरखत धरत कमल मय ही थ २ रा सा ग प वि
 त्रा श्री विठल पहरावत ब्रजनरेश गिरधर नचंद को निरखि निरखि सुष
 पावत १ कुं कुं मतिल कलिलाट दीये ब्रज जनमंगल जस गावत वार्जताल
 परबा ब्रज वीना सुरसुनि चऊ दिस ते सब धावत २ हरखि हरवि अवलोकि
 वदन छवि नीरां जन उतारत गोविंद प्रभु गोवर्धन वासी चरन कमल उर ला
 वत ३ रा सा ग

२४

। द्विजराषीवांधतश्चानि
तवेदमंत्रैगलधुनिहरवि
शावृजिजनजीवनश्राने
नोविंदप्रभुगिरधरपदं
लौनेमंगलमाईसांवने
जसुमतिवैवीवलिराम

असुजवरकन्हाशरण्यापावत्तगरगलधुनिहरवि
दोदातेशपरिवारसहितहृजराईयोविंदप्रभुगिरधरमुषनिरषतनैजनिके
फलमाईशरागसारंग। करोमिलिरच्चावालगुपाल। आजिआंवाएआं
वणसुनदिनजीवनिधाननंदलाल। अचितसाजिधस्योमेवावऊकरल
येकंचनथार। नंदसदनआईवजसुंदरिजहांवलमोहनैवाल। र। श्रीमु
खनिरखिनईआनंदितदियोतिलककरनाल। र। रवीकनकवांधि। श्री
हरिवलकेमिटैजगतकेसाल। शरागसारंग। वहनसुनशराखीवांधत

वलिऔरश्रीगोपालके कनकधारनरिअछितकुमकुमतिलककरतने
दलालके शरतीकरतदेतनवछावरिवारतमुक्तामालके कनकधारन
रि। आसकरनप्रभुमोहननागरधेमपुंजवजवालके २ राग सारंगरछु
वांधतजसोधामैया। सकलसिंगारविचित्रविराजतसंगसोहतवलनैया। १
कनकरुधिरसिंघासनवैठेतहांमिलेगोपनके छैया। तालमृदंगसंख
धुनिवाजतसुनतवजवधूधैया। २ करलेधारलिनाख्खवा। वतकुंकुमति
लकवनैया। देअछितकराराखीवांधतउरआनंदवटैया। ३ नाजनरि
पकवांनमिठाईमेवावऊतमगैया। अतिसुगंधवासितवीरालेदेतआनि
नंदनैया। ४ ईडरिपीडुरीवारतश्रीमुखपरजननीलेतवलैया। लेआर
खिः तीउतारतश्रीमुखगोविंदवलिवलिजैया। ५ इरि। के। पदसं१५।

॥ अथ जेल के पदा ॥ राग देवगंधारा ॥ मन मोहन अद्भुत डोलवनी ॥ तु गण लो
ऊहर खजुलां ऊहंदावन चंदधानी ॥ पर्म विचित्र रचि विख कमी हियाना
लमणि चित्रजुन दास लाल गिरध की छविका पै जात गणी ॥ १ ॥ राग देवगं
रा मोहन फूलत वडो ॥ आनंद ॥ एक ओर चरख जाननंदनी ॥ एक ओर चरख
पल्लिता विसाषा फूलवत वादी करगहि कंचन डोरि निरपि निरपि प्रीतम
पिय प्यारी विदुस कहत वोलो ॥ २ ॥ उत गुलाल कुंम कुंम केसर परसत चार
कपोल ॥ छिरकत तरुनि मदन गुपाले ॥ आनंद ॥ ऊदे कपोल ॥ कदा कदा
सवा डो ॥ परस पर विभुवन वरन्यो न जाई ॥ कुंजन दास लाल गिरध के दे
निक परवलि जाई ॥ ३ ॥ राग देवगंधारा ॥ फूलत डोलनंद ॥ कि सो राग मध्य
वरख जाननंदनी ॥ पहरे पीत पटोला ॥ ४ ॥ वाजत ताल परवा ॥ अत्र अत्र
लरि मुरली घोर ॥ उत गुलाल ॥ अवीर अरगला ॥ कुंम कुंम न न वज ॥ अर
राहंदावन फुली न ववेलि ॥ कुंजीत को ॥ किल नोर ॥ फल न प्यो न फुल ॥ वल्लो
पी ॥ आनंद वडो ॥ नथोर ॥ ५ ॥ अति अनुराग नगी सव सुंदर ॥ ६ ॥ चलो ॥ ७ ॥

र। कमलनैनं मुखपरसचंद्रमां जुवजननैनं च कोरध। सुरविमानविनसव
कौतिगच्छलेवरखेकुसुमनिजोर। स्तरदासप्रभुआनंदसागरगिरवरधर
सिरमोर। पारागदेवगंधार। मदनगुपालजलतडोल। चामजागराधिकाविराज
तपहिरेनीलनिचोल। पगोरीरागअलापतगावतकह तजोवतेवोल। नंदलाल
कोनलोमनावतजासोप्रीतछतोल। नीकोनेखवन्धेनंदनंदनआजु
लईहममोल। वलिहारीयावांनिकउपरजगतदेऊसवओल। ३। हिलिमि।
लिरंगडहंदि सिवाडौ। आनंददयकलोल। परमानंददासतिहिओसरउ
उतहोलिकाडोल। ४। रागदेवगंधार। आजमाईजलतहैनंदलाल। संगराज
तवरखमांननंदनीजोरीपरमरसाल। श्रीगोवर्धनसुजगसिखरपररचौ
जुडोलविसाल। कदलीकरनिकेतकीकुंजोवजलमालतीजाल। नुतननु
तनप्रवाहरहेलसिमाधुरीसोउरजाय। कमलप्रसूनपरागपुंजजरवहंसमी
रसुहाय। ३। मधुपकीरकोकिलकूजितरसमकरंदलुजाय। सुनिसुनिश्री
वनपुलकपियण्णारीहरतकंवलपदाम। ४। निर्जरकरतसुवासितअंजं

गंगराजतजलकलोल उनयकुलकलहंसमंडली कूजितकरतकलोला ॥ ५ ॥
जुवतीजनसंमूहमिलिगावतप्रमुदितलोचनलोला वाजततालमृदंगहो
गविहसतचारुकपोला ॥ द्रवोवाचंदनछिरकतनांमिनि ॥ अवलोकितरसना
या ॥ श्रीवीठलनाथ ॥ आरतीउतारतदासनिरखिवलिजाया ॥ गारागजैतश्री ॥
सोनासकलसिरोमनिहोदंपतिजुलेडोला मोहनरायजुलेहि ॥ कनकरवंज
मरकतमनिहोहीराखचितअमोला ॥ चौकीपंननांपांतिपिरोजारचीरतन
कीपांति ॥ मुक्तामालसुहांवनीहो ॥ कहावरनोंवज्जजांति ॥ शजूलहिडलहनिरा
धिका ॥ लहनंदकुमारारतिरसकेलिविराजहीवाढौरंगअपारा ॥ ताल
खावजआवजजांजैजमकसहनाईचीनावेनरवावकिंनरीमधुमुरली
कीजाया ॥ सरवामंडलीसोनितागावेफागधमारि ॥ इतंसुंदरीगावतमीठी
गारि ॥ पाऊकजोरेपिचकाचलेकहावरनोंयहवांनि ॥ चौवाचंदनछिर
कहीगोपीगोपसुजांना ॥ दालविकर्दममहिमंडिताउउतगुलालअवीरा
करतविनोदकुतहलाराजतअतिसैजीरा ॥ ७ ॥ खेलवदनवदनविप्रति

७ प्रतिष्ठिनुनवश्चनुराग कमलखंडके आएमधुपगनराजततिपरांग
 सिथलवसनकटिमेखलारही अलकलटछटि एक एक परधावही गई
 तिनलरट्टि ए चिरजीवो सुंदरवरप्यारो सकले धोरवसिरताजनंदजसो
 कोसुकतफलप्रगटजयो है आज ए सुरकुसुमनिवरखाकरतलील
 देरवतआय आसकरनजुमोहनकोजसरदोसकलजगछाय ॥ ११ ॥
 गदेवगंधार ॥ ऊलतजुगलकव निकिसोर सपीसवैच ऊं आरकुलावत
 रगदिकंचनडोल ऊंची धुंनि सुनिचक्रत होत मनजवमिलिगावतराग
 डोल ॥ १२ ॥ एक एक वयसिंधनवत्त रुनिजगलोल जांति जांति
 चुकि कसेतनवरनचरनपहरें वनिचोल ॥ १३ ॥ नवनपवनडुंमवलिप्रफुल
 तअंबमोरपिकनिकरतकलोल तीहीं सुरगावतवजवनिताकुमकदे
 लेतमोल ॥ १४ ॥ सकलसुगंधसचारि अरगजा आ ईअपनें अपनें डोल एव
 ताकपिचकारी छिरकत एकजरेजरकनककचोल ॥ १५ ॥ कवजस्यांमवि
 उतरिडोलते कौतिकदेतदेतछकछोर सवपियडरपिजरिस्वातकंपित

विरमिविरमिवोलतमृडवोला॥ गिरततरोनांगह्यौस्यांमकरअवनदेनमि
 सञ्जुवतकपोलतवपियईषदमुसिकमंदहसिवकृचितैकरिजौहसलोत
 दाजेरीजंजिडुंनिपरवावजाअरुडफवाजतआवजदोलाआएघारस
 मूहसरवाजुरिहोहोहोरीवोलतवोला॥ गारतनजटितआनूरवनदीनेंओ
 रदीयेमुक्ताहारअमोलासरदासमदनमोहनप्यारेफगुवादेराख्योमन
 ओला॥ गारागसारंग॥ डोलजलतविहारीविहारनिषुष्यवृष्टिहोहोति
 सुरपुरओरगंधर्वओरपुरतिनकीनारिवारतिलरमोति॥ घोराकरत
 परस्परसवमिलिनहिदेविजुवतिअैसीजोतिहरीदासकेस्यांमीस्यांमांकुंजवि
 हारीसदाचुरीखुजियोति॥ शरागकर्ल्यणाहरिजूकोडोलदेरववजवासीरु
 लो॥ गोपीकुलावैगोंदकुलो॥ नंदनंदनगोकुलमैसोहैमुरहै॥ मनोहरमन
 मथमोहो॥ शकमलनैनकोलाडलडावैप्रमुदितगीतमनोहरगावै॥ शरसि
 कसिरोमनिआनंदसागरसामदासअनुमोहननागराधारागकल्याण

निमाला ॥ सकलसिंगरअनूपविराजतकूजतवेनुरसाला ॥ माधोदासनि ॥
रविगोपीजनप्रमुदितश्रीगोपाला ॥ रागनट ॥ षेलतफागकूलवैठेकूल
नडोल ॥ उहउहेनागरीनागरनैनकमल ॥ १ ॥ वज्रतदिननकेजयेसमितसुष
सखीनिसंगलियेराधाकृष्णरसरासजमल ॥ गावतरागरागिनीसोंमिलि
तानतरंगकंठकोकिलारूतेअमल ॥ २ ॥ कल्पानकेप्रभुगिरधारीजुकोजे
दादेतहियेउरपतिगिरतकुसुमासरंगोरेगा ॥ छुटेछवि सोधेमल ॥ ३ ॥ अ
फागहोलीकेपदरागविलवल ॥ आनंदरायषेलेफागुहोहोहोरीआईगि
रधरलालकैकाजग्रहतैन्पांतबुलाईज ॥ ४ ॥ कोयाकोंआदरदेतेहैकोयाकूंवे
ठनदेहकासोंहेराचीआनिकोंनकेसंगरवेले ॥ ५ ॥ जसोमतिआदरदेलेहै
कूलनदेवैवनीदेहै ॥ गिरधरसोंराचीआनंदवलदाऊकेसंगरवेलेहो ॥ ६ ॥ अं
डोरोपनचलेवज्रचैदआरगिरधारी ॥ वाजेसंगवजावतअरुपरवावजया
री ॥ ७ ॥ वजराणीआरसबगोपकुमारी ॥ गावतीसुछंदनदेतभांवतीगारी ॥ ८ ॥
नदीजमुनांकैतीरजायरोपीयहोरी ॥ कुवरधरीसेवनायसबनृत्तापाछेंजे

री॥ ६॥ विषनवेरपदायवैवीसवसवाधीहेकीनीसजाकरिपायलगाईऔरप
रिकर्मदीनी॥ ७॥ खेलतहेनंदलालकमलहाथिनीलीनेंसवसुंदरीलीनी
हेबुलाईरहसउनकेकरदीदीने॥ ८॥ केसरिजीनीसोधेजीनीपहरेजुंमकसा
री॥ गिरधरपीयासंगखेलतद्यौरवसकलव्रजनारी॥ ९॥ अवीरगुलालउड
वतव्रजरांणीकोलालासुंदरमुखजलकतपहिरेमोतिउरमाला॥ १०॥ होरी
घरिघरआयेनंदरायजीव्रजवासी॥ रागगौरीनीपैंगवालसवजामेंऔरुला
लनमुखरासी॥ ११॥ रांणीजूदेखसिहातकरतनौछावरिनारी॥ धनिजतुमक
रवांमानतिवारतिनौछावरिसारी॥ १२॥ चंद्रावलीऔरराधाजूजीजिरही
रसहीये॥ एकोपलनांहीछांडतडोलतलाहिलीये॥ १३॥ सगरेव्रजआनंद
व्रजतअहोरी॥ मांनोंदोऊकुवरसंगखेलतरातिद्यौसनजाने॥ १४॥ यहसुंद
डौलौंहारखेंनितानिततुमआवो॥ सकलघोरवकेरायनंदगिरधारीक
हावे॥ १५॥ चितचिरुजीवोव्रजराजदेखदोठनमुखपायो॥ श्रीवीठलगिरध
रकोहसिपागुलायो॥ १६॥ रागविलवल॥ १५॥

तगोपिनसंगा ॥ तालमुरजवज्रवाजश्रोरश्रनेकुमुखवचंगा ॥ १ ॥ डोलतेडोल
कबविरवेनमृदंगनपंगा ॥ मुरजमुखडंदजीश्रोरजालरतरसरंगा ॥ २ ॥ विवि
धपरवावजश्रावजजांफिपनवडफजोरे ॥ विचविचिगोमुषसुनियतवीचमुर
लीकीघोरे ॥ ३ ॥ ग्वालवालपरसपरराजेमैनमंजरीहाथ ॥ दूकाकनकपिच
कारियांअरिअरिछिरकतगाथा ॥ ४ ॥ चलौसखीदेखनकौजैएविहरतसिंध
घार ॥ सुनीमनैमनहरखसवैजुवैतीलागीसिंगार ॥ ५ ॥ नीलवरनसारीलं
हगालाल ॥ कंचुकीलालकुचनपरिगुंडरहैमानोंअनंग ॥ ६ ॥ सोहेस
ससरसकरिवैणीसरससंवारी ॥ मानोंकनकरवंचलगजूमतपनन्यारी ॥
७ ॥ सीसफूलरच्योतिलकभृकुटीविचवंदनरोप्योमानोंसरासनस्यावीके
वांनमंथमानंकोप्यो ॥ ८ ॥ वदंनृमांगमध्यअतिराजतकंजनसुदारे ॥ मानोंसे
ससीसपरदाडिमअधीतडारे ॥ ९ ॥ नैनंकुरंगश्रवनजुगचारुचक्रविच
राजे ॥ १० ॥ नखसिखलेंजेनीवनीग
ईसवैसिंधजोवार ॥ हमारोफगुवादेजमोहननंदकुवार ॥ ११ ॥ काहेमोहन

रायभाजोकाहिओलेलेजंकुमुदचंदज्योविकसितनैकुदिरवारीदेह्ता॥१२॥फ
 गुवाकूकेमिसकूवोहरिदरसनकीआसादेखनकोजियउपरकुंतरसैलोच
 मरतपियासा॥१३॥सुनमनहरवजसोमतिओनकुआदरदीनो।कुंमकुंमज
 लसोंघोरिसवनमुखमंजनकीनो॥१४॥वरनवरनपटदीनेगोदनरिजरिजु
 मिवाई।इहिविधिनंदघरनवजकीतरुनीपहराई॥१५॥गानकरतमनहरत
 मुदितमनदेतअसीसा।तुम्हारेकुंवरजसोदाजीजीवोकोटिवरीसा॥१६॥रागवि

रसवन के बोरे जू प्रगट है मंद अरग जा र्धेरि कै नरि नरि गडु आसिर दोरे
जू ६ ॥ इहि विधिसाज सबै लीये चली रायजू की पौरीजू श्री राधा को लैन को
हसि कवी व्रज नारीजू ७ ॥ सोंधो सुरंग गुलाल सो वज्र सारवी जवादि मिलाई
जू दौरि आचा न कलामही हसि महरि वदन लपटाईजू ८ ॥ छिर कौपा सवै मि
लिजा नि कै न वल्ल लवल सो उ विदौरीजू जानी कुंवरि वरव जान की तव
महरि लई नरि कौरीजू ९ ॥ चंवत चाहत प्रेम सो फुंनि फुंनि कंठ लगाईजू जे
कछु आनंद जीये को सुख कहत कस्यो नहि जाईजू १० ॥ तव मन मैं नाना जा
ति सौं वज्र चरवन वसन मंगाएजू तव हम इनरुं नांही ले को हों गिर धरक
हाउराएजू ११ ॥ कछु कजंवे चमुचाहि कै महरि वदन मुसिक्यानीजू १२
सव जुवती धाई कै आई च दी चत्र सारीजू आ दे वदन उराये कै जाय गहे गिरि
रीजू १३ ॥ इह घेरि लीये चऊं अर तैं अरव कै छुटो कै सैं फलानेजू तुम को जूवति
न के वस परे तुम हो अधिक सयां नेजू १४ ॥ कोउ कवा तैं प्रेम नेद की कहि कां
न न मैं उ विदौरीजू तव एक अचानक आय कै लाल लीये नरि कौरीजू १५

कारुणहिगंधीवेंनीरुचिमोतिनमोगसंवारीजूतनमुखकीसोंधेसुनीसीदि
 सारीसरसतिवारीजू॥१६॥कारुनैनीकीजांतिसुरंगविस्तकपोलनिकीनेंज
 कारुनमरवटमांडिकेंमुखरोरीविदादीनेंज॥१७॥कारुनानाजांतिसोंधे
 तिअतिअंजननैनवनाएजूब्योंहीचंपककोरंगसेओरकांननलोटरअ
 एजू॥१८॥चंपकलताचलीधायकेंतवचिवुककंवगेनोंदीनोदेजु।मोहीबु
 जसु-रीबजहू॥१९॥मोहनीकोकीयोजू॥२०॥नानवरनअवीरलेमनमोहन
 वदनलगायेजू॥२१॥रनचंदमानोंधनमेंनवईधनमेंछायोजू॥२२॥सनमुखमु
 खहीनिहारिकेंमुखनिरखतनांअघायेजू॥२३॥गारीदेतसुहांवनीअतिरसा
 सोंलपटांनीजू॥२४॥केसरिदोरीसीसतैंवहिलेघारपनारेजू॥२५॥सोंधोसुरंगमु
 लालसोंसवजरेघरकेघारेजू॥२६॥तवआगेंदेसर्वमोहनीहसतिहसतिस
 वआइजू॥२७॥सोंमुखदांपिकेंपंगनिमहरिजूकेलाइजू॥२८॥इहकंन्या
 कारुगोपकीतीनेंआयसमर्पणकीनोजू॥२९॥
 हरवितसुनआनंदसुंतुमवांढोवजतवधाईविधितै

कांन्हा नव दुलै आई ज २५ ॥ वेश हि विधु को नाम सु मन मह रि गो द वै ग
 री ज ॥ हर खित मन आनंद सत्कछ विछो लप सारी ज २६ ॥ छट पटन ता
 रि कै तव चुं वति मुख मुसिकानी ज ॥ हसी परस्पर सुंदरी तव देत मह रि ल
 जांनी ज २७ ॥ तव हो होरी बोले ही नां चत दे करतारी ज ॥ प्रमुदित करे कुं हेल
 नां चत गावत गारी ज ॥ २८ ॥ आबु ज होरी खेलतैं सव सुख तैं सुख न्यारी ज
 ॥ अह संमाज नित माधुरी कै हट रो न हि दारे ज २९ ॥ राग विलखल नंद गंम
 को पां डे बुजवर पां नैं आयो ॥ अति उदार बख जान मान सन मान करा यो
 पां डे जू के पाइन को हसि हसि सी सन वायो ॥ पाय धुवाय न्हावाय प्रथम जो
 जन करवायो ॥ १ ॥ धाय आई बुज नारी जिन नय हि सो धो पायो ॥ बख जान
 नवन नई रफा गु को पेल मचायो ॥ ३ ॥ सी सी सिर तैं कुलै लस कल अंगन
 फल कायो ॥ हन मान की प्रतिमा मान तेल सी सतैं छिट कायो ॥ ४ ॥ काजर मु
 खे मुख मां डो वदन पै वंदि वनायो ॥ गज गंमिन गोंछ वकों पिकी चकल
 सहि अवन तैं मानूच पराच पकायो ॥ ५ ॥ गज गंमिन गोंछ नहै रूक मई आ

लएयो। देह धरे मानें फाग खेलन ब्रज मै आयो। ६। का रू गूलरी माला का
रू नैं जुगा पहरायो। मानों गज पंढान विच जे गजगा हवनायो। ७। का रू चंद
न चंदन का रू नैं चौवाले चरचायो। रितु वसंत जो तु सु दुम फूले फूल बुछायो। ८।
रंगुर सौ च ऊ दीय न रंगरा तौ होय आयो। गुंजन की गहना मानों प्रोहित पहरा
यो। ९। मानें तैं मोहनी न छाछ को मांटी रायो। मानों का चेहरे स्पामें गीर वर
हीन हवायो। १०। चोर चोर ते नई लागते जल दरि रायो। महा देव की जय न च
र चर नोदिक आयो। ११। लगत दंत सों दंत डिंग डिंगा अंग लगायो। मानें सु
धर संगीत ताल कंठ ताल बजायो। १२। श्री राधा राधा कहि आपुनो बोल सु
नायो। श्री मान की कुवरि चरण रू तेरी आयो। १३। सुनि कै वचन जुगरो हो
राधारादे जरि आयो। वावाजू को दगल लोले प्रोहित पहरायो। १४। कीरति
जुपाइला गिला गिता तो पेहरीयो। ताल्यों खेलत होरी ब्रज पति डलै हो आये।
१५। सांवे स्वांग न साजि सवै समूह जो सोहायो। तव्याप्या व्यासु को शत सत सु

यो १३ घंमत्त आयो इंदरुणं मंजुने मे मंजुन चायो १७ उजकी वीथ निवीच
 कीच में लोट लुटायो १४ चारे वदन को स्वांग चतुर चतुरायो नैन निलायो
 १९ पंचानन पांचों मुखों संगीत वाजे वजायो हरि कों कहवाय वावरो सो
 नारदन चत वे चायो २० देखि नंद को लाल सुनि जत धरि गाल वजायो मर
 देव पटतार देते पेह पट प्रभु मन जायो २१ हो हो हो हो होरी हरि हां सो ने हे सा
 माया निपुन कै नारद लहरायो २२ कांम कांमिनी जयो सब निको वित चु
 रायो गव जौरो डर खजांन राय सो जाय करायो २३ ललिता गों विजोरी ल
 लित कल लाल को विहार सचायो नवल आंव को माहोर ले मोरी मोहोर व
 नायो २४ पीत पिछोरी तांनि छबीलो मंडप छाया होरी की आग्यारी क
 रि कैंडल हो परनायो २५ फागुन की गारिन की साषी चार पदायो हो
 री को पकवांन जरि जोरी खायो २६ फूल फूल की फाग फवोर सजि
 यह गायो जन हरिया घन उपांम वासवर साने पायो २७ रास वि
 लास फगु आके सि सचलो वलिलाल कुरंग नैन नरग मगे की जे जे

हृदय सरहोरी को गोरी सुख ले सुख को न दीजे ॥ १ ॥ करत सैन को सोच सकु
च जिय इन सकुचन कहि धोका हालीजे ॥ घर को छाडि घर धाय अधर मधु
निधर क के को पान पीजे ॥ २ ॥ राग विलसत श्री लछिमन कुंल ॥ इये मन मोहन
ग श्री वल्लभ सुवन सुजान ॥ लाल मन मोहनां हो ॥ गुण निधि श्री गोपीनाथ
जुमन निरगुण तेज निधान ॥ लाल श्री पुरुषोत्तम आनंद मै मन श्री विठ
ल ब्रज के लाल लाल मन कोटिक मन विधवारणे मन ॥ मुखिसो जा सुख
रूप लाल मन मोहनां ॥ ३ ॥ श्री गिरधर गुन आगरे मन मोहनां ॥ परन परमा
नंद लाल मन मोहनां ॥ राजसिरोमणि लाडिलो मन मोहनां ॥ करुणामय
विंद लाल मन मोहनां ॥ ४ ॥ श्री बालक लल मुख चंद्रमंग मन मोहनां ॥ पंक
जनै न बिसाल लाल मन मोहनां ॥ श्री हज वल्लभ गोकुल नाथ जुमन मो
हनां ॥ प्रियानंद नित्य प्रिय परम दयाल लाल मन मोहनां ॥ ५ ॥ श्री पति
श्री युनाथ जुमन मोहनां ॥ जगजीवन अनिराम लाल मन मोहनां ॥ रू
परासज नाथ जुमन मोहनां ॥ कमला परन कामलाल मन मोहनां ॥

५ नवकिसोरघनस्यांमलालमनमोहनां अंगो अंगसुखदाईलालम
नमोहनां ब्रह्मसवैसुखेजांनियेमनमोहनां जाहिविमलजसुगाइला
लमनमोहनां ६ श्रीवृंदाविपुनसुहांवनोंमनमोहनां वजलीलासुख
सारलालमनमोहनां मानिकचंदप्रभुसर्वदागमनमोहनां श्रीगोकुल
करोविहारलालमनमोहनां हो ७ रा रां क की हो होरीखेलैनेंदको
करअंजुजरमकरंदको तनसुखपाघवनीकसूंजीसिरमोरधरेमुकरं
दको १ एकअोरप्रगयो तरुनीमधिअंकुरवाकुरपरमानंदको एकअो
रवजजनचकोरमधिउदैजयोमानोंचंदको २ लेलेसुरंगगुलालदेऊक
रखेलजयोमानोंफंदको तिहीअोसरप्यारीमुखपरसिमानगयो अरु
वादको ३ जांतिजांतिकेवाजेवाजतसुनिछूटिगयोमदछंदको चोवाचं
दनअगरकुमकुमांमृगमदसुनगसौरंजसुगंधको ४ इहिविधिनिरखि
मेघवरषायोसुरसवमिलिवृंदको तिहिअोसरमुरलीवनवाजीजलसो
मनआंनंदको वाऊरपरमानंदको ५ रा रां श्री यागोकुलकेचौह

टेरंगराची ग्वाली मोहनखेले फागुने न सलोनेरी रंगराची ग्वाली न
आनंदनयोरंगराची ग्वालि स्यामवलिके अनुरागने न सलोने ॥ १७ ॥
वाजे गहगहे रंगराची ग्वालि नगरकुलाहल होयने न सलोने ॥ १८ ॥
सद्योखको रंगजीने हो जुवनरद्वोनहिकोयने न सलोने ॥ १९ ॥
हनी रंगजीने हो तालमृदंगउपंगने न सलोने ॥ २० ॥
ने हो ॥ आवजवरमुखवंगने न सलोने ॥ २१ ॥
जीने हो ॥ अंबुवलजूनंदकुमारने न सलोने ॥ २२ ॥
हो ॥ अंबुजलौचनचारुने न सलोने ॥ २३ ॥
दितगोपी वृंदने न सलोने ॥ २४ ॥
लीयेगोकुलनाथने न सलोने ॥ २५ ॥
जोराधाको साथने न सलोने हो ॥ २६ ॥
नरतपरसपरआनिने न सलोने हो ॥ २७ ॥
कुमकुमानोंतनरससांनिने न सलोने ॥ २८ ॥

ली
२

नें हो। तत्का वंदन धरि नैन सलों नें। चटि विमान सव देवतारंग जी नें हो। देही
साग ईश्वर नैन सलों नें। खेल मध्या अतिरंगर सौरंग जी नें हो। चितवत
व्रजवध आइ नैन सलों नें। राधारसिक श्री स्वामिनी रंग जी नें हो। आस करन
वलि जाय नैन सलों नें रंगः ॥ ९ ॥ राग धन श्री। खेलत फाग संग मिलि दोऊ अं
आनंद जरे पिया प्यारी हो। नर किसोर वेनंदनंदन इत ब्रज नान डलारी हो
नवरित राजलता पुमरूले। वरन वरन छवि न्यारी हो। खेलतः तैसे ईसु
नग गवर सांचर अवन ही दे जोट इक सारी हो। कमल नैन पर चकामेलत
हसि सकुचित सुकुवारी हो। खेलतः नरी अरग जाकन कपि चकारी। धा
ईसकल वृजनारी हो। जरति जावते मदन गोपाल ही वाटो रंगर सजारी
हो। खेलतः वज्र मिलत दस पांच सखिन गोविंद जरे अंगवारी हो।
चोवा साखि जवादि कुमकुमां दीयो है सी सतें दोरी हो। खेलतः प्रेम
मगन मोहन मुख निरवत सवद सवै सारी हो। चउचुज अनुसुरनर सु
निमो हे गुननिधान गिरधारी हो। खेलतः ॥ राग धन श्री। माई मेरो म

नमो ह्येसां मरो। अवधरुमो पैर सो न जाय। चपलतिरछी नो ह सो सर्व।
 सुही मेरो लीयो हेचुरा श। मेरो मंगल हो गोर स ले निकसी छंदावन हो छुं जा
 र। आई अचांन क। औचका। मटकी वज्र मेरी देई मार। श मेरो मंगल न हो
 नु मटकी तिक मोला कन कर खुजी कै व्याज मै पर सेरी मै मेरो पांन के पोला। ३।
 मन मे गं कंचुकी पटन वी गही गहि अंचरामो हियों क दो कहो वो तुम का।
 की नारि। केई विरियां याम धगई दान हमारो मारि हो। ४। मन मे गं हसि वीरी मु
 ख मै देरी ग्रीवा व हो मेरे में ली गरवा ही। मिस ही मिस मो हिले चलो ग्रह वर हे
 अंधियारो मां ही। ५। मन मे गं जाय और मिसि दान को। वतियां न हो मै पर खे
 पाई करत वसी ठी मिलन की। सन मुख हो मेरे नैन चलाय। ६। मेरो मंगल और
 कहारति वर नये

रमी देखि सरखी मेरा तन को साज मेरो मन मोह्यो स्यां मरे। ७। राग ध
 । प्यारे कमल नैन मन मोहनां।

में कै होय प्रतीति १॥ प्यारे गिरघटियां उठि जोरही मारगरी मेरो शोक तआ
 यव हो सिअचां न कसी सतें मेरी मटकी देत दुराय ॥ प्यारे असी तु मही नव
 रजिये लटकि रहत गरवां ह ॥ प्यारे मीत मिति मईया सुनों स्यो जी परत वन मो
 ह ॥ ३॥ प्यारे सैह सत में मन मुस्त हो कहि कहि मीठे बोल ॥ प्यारे सेंत मीत क्यों प
 र्ये यह गोर सविन मोल ॥ ४॥ प्यारे चत्र जु प्रचु चित परखियो चित वनि
 नैन विमाल रति जोरी मिसिदांन के गिर गोवर्द्धन लाल ॥ ५॥ राग धन श्री धे
 लत मदन गुपाल फागु सुहां वनों ब्रज जुवति न को चित चोर अंगल जां वने
 ॥ सुवल सुवाङ्ग श्री दां मां सरवा संगरे राजे ही वङ्ग आ व्रज मुरज मुरली ड
 फवा जेही ॥ २॥ करिनी के पिच काई फेंट अवर की वङ्ग जां वरि सों जरी का
 वरि के सरिनी रकी ॥ ३॥ सजि कै साज समाज चले बख जांन कै सुनि मन सा
 ग ईल्लि सुनत धुनि कांन कै ॥ ४॥ उत तैं जुरी कुंड नि आई ब्रज वासिनी तिन
 में कुंवरि कि सोरी नित्य विलासिनी ॥ ५॥ संगरंगीला साज लीये नवनागरी
 वरन वरन लीये राजत रूलन की छरी ॥ ६॥ जुरी आई दोऊ दोल पोरि ब्रज रा

[illegible]

लरीजाजतहेकरकंवतारीहो। जववसंतदिनप्रगटजयोनांचतगवालस
बगवालनीहो। रखेलतः। वज्रजन्मसवएकतजयेघोषरायदरवाराहो।
तवनीनवलकुवारीहो। रखेलतः। जुवतीजूथचंशवलीआपनेंजूश्री
राधाहो। ऊमकहेंचेतवगावैहीवादेहैरंगअमाधाको। धवलमोहनए
कतजएसुलतकएकोदाहो। दोऊदिसखेलमचावहीवदोहैमनसि
जमोदाहो। पचमकिचलीचंशवलीसुवलतोकरधार्ही। उतहीकों
पियप्यारीराधिकावलीरामेंकलकौंपरिधार्ही। कमलनिमारमचाईयो
मधुमंगलपकरएकठोरीहो। बांधिगुदीपरदोलाहो। ७। वहोतहसेवलि
मोहनां। हसेहैंसंकलवृजवासीहो। छोराएछटैनांहीपरिगईगांविफांसा
ईहो। ८। हसतिहसतिसवआईयोगावतगारीसोईयोहो। सैनांवैनीकरै
सवैमिलिमोहनपकरेपौईहो। एवलजुकीआंखिआंजियोमुरली
पियाकीछिनाईहो। मनजायोफगुवालीयोपाछीजाइवदीनीहो। ९।
इहिविधिहोरीखेलही। वज्रवासिनसवसुषपाईहो। सवजकूनमनआं

हो

नंदनवागोवदस्त्वजसगौरहा। रत्नरागवदनत्रिहाहाहाराजिताहनु
पालपीसंखासमूहे। इतजुवतीजूथमधराधागोरी। एवाजततालमृदंगवं
गदरसतपरसतचऊंवेरी। जाऊकहंहरिपारेआइवैपायेऊंघेरीसांकरी
खेवारी। शकेसरिवऊतमगाइऊडाईअवीरवऊतलीनोंजरिकेरी। ललि
ताऊविचलायेदुऊनकीदृष्टिवचाइगांठिगहिजेरी। शत्रुचलखीचोऊं
निसकुचीदंपतिहसिहसिजौंहमरोरी। चतुरसवसरवीमिलिहसीहाथदे
पाइहैजांनिदोऊनिकीचोरी। धाफगुवादीयोजुवनेमैनअनुफेंदगहेंयोंगह
कहतकिसोरी। खेलफागअनुरागसीछऊरआयेजीतनंदजूकीओरी। प
राधधनश्री। श्रीराधाकुंदरिरसिकनीसोंहरिहोरीखेलोजूजमुनांतीरस
धनकुंजनमेंमिलिजुवतीदलपेलोजूसरसगुलालअवीरअरगजाकि
तकिआंखिनमेंमेलोजूपतवउजकेलरिकांघरघरतैंटेरिटेरिकेंवोले
जुआयेहैंअपनेंघोकनिजुरिमांनोंगजमदमोकलेखोलेजु। शजैसैमन
जायेवागैलैसंवहिनकोंपहरायेजु। तैसैहीआपनेंकाजैसावसों

तमगायेज ॥ ३ ॥ पहलैंसवैकनकपिचकारी परममुदितमनदीनीजू तापा ॥
छैंहेरतनजटीतवलेदाऊरुंदीनीजू ॥ ४ ॥ केसरकेसररससौंकनककल
सजरिलीनेज ॥ फैंटनिअवीरगुलालसुरंगनरायेनरेरंगजीनेज ॥ ५ ॥ चावामे
दजवादिसारवलेगोरामृगमदघसिधोरीजू चलेलिवायअरगजाकुमुकुं
मचंदनरोरीजू ॥ ६ ॥ नरेगजकआवजमहुवरिउफजांफितालमुखइचंगा
जू वैनिरवावकिन्नरीजालरिवाजतसरसमृदंगाजू ॥ ७ ॥ अवनसुनतवरनां
ननंदनी अतिआतुरजुविदोरीजू सखीसकलघेरेचऊदिसतेंनिरखिस्यो
ममनजाईजू ॥ ८ ॥ अंचलविविदुरायपिचकारीजरिलाईजू तकितकिमुंद
रमुखऊपरिछिरकीऔरछिरकाईजू ॥ ९ ॥ सवसमाजलेजाइजुरेघरवा
जांनगोपकीपौरीजू तवराधासोकदेतमुदंतनदजहंतहंतदेजुविदोरीजू ॥ १० ॥
बलिसमेतसबसरवासंगलेमगेतरुणीगनऊपरिधायेजू होहो कहिपला
सकुसुमरंगजरिजरिकलसनवायेजू ॥ ११ ॥ करिविचारमनमैललितादि
मधुमंगलकीटिगआईजू तेरेपायलागतहोंक्योंरुंनंदलालपकराईजू ॥

[illegible]

गुसवमिलिऊ मकगवोसंग सरवारखेलनचले ब्रखनानगोपकीपौरी
 वैनसुनतसवगोपिकागोइहैकुदरयैदौरी सवै मोहनराधिकाकार
 नैगहिलीनौनौसरहारहारदेतदरसनजयोसवगवालनकीनोजुहार
 २ सवै राधाललितासोंकस्योनैकुहारहाथतैलेऊ चंङगसोंयोंकस्यो
 नैकईनहीवैवनदेऊ ३ सवै वहातजांतिवीरादियोहोकीनोवऊतसन
 मांन राधामुखनिरखेहरिगोपीकरतकमलमधुपांनध सवै मोहन
 करपिचकारियांहोसववसगवालनिमांनीहार
 ५ सवै फगुवाकोपटअैंचतैमुरलीआईहाथफगुवाकोपटअैंचतैहो
 सुनांहीवनैसुनिसुनिगोकुलकेनाथ ६ सवै मधुमंगलजवदेरियोहोली
 नैसुवलबुलाय मुरलीतुमलीयोतुमकोंदेऊगीप्यारीराधाकुंसिरनायो
 ७ सवै दोलमुरजडफवाजहीहो औरमुरलीकीघोर किलकितऊतह
 लकरेमांनोअंनंदनिर्ततमोर ८ सवै राधामोहनविहरेहीहो सुंदरसुधा
 रसहृप पहापट्टिसुरपतिकरेधनिधनिगोकुलकेनृप सवै होरी

खेलतरंगुरदोहोचलेजमुनांजलहानसिंधपौरिवादेहरीदेगोपीवारव
रवारदेहिदांनहो॥१०॥सवैगनरनारीआनंदजयोहोतनमनमोदवदाय
गोकुलनाथप्रतापतैस्यामदासवल्लिजाया॥११॥सवैगराधाधनाश्री॥फागुवे
लेराधागोरी॥नंदलालउखनांनंदनीनलीवनीहैजोरी॥१२॥चारुअवीरगु
लाललालतनविचविचराजतरोरी॥जाकेकंदंवहाररहसिजरेकेसरिकु
मुंमकुमधोरी॥रातनसुखचारुछोटीछिरकततनउठगमीगातनदोरोरीहो
प्रंचलपटनरसोजितकुचपरिउपमांश्रीफलकोरीहो॥१३॥स्यामसुनगके
मअंगपरिराजतनवलकिसोरीहो॥नूपुरनतकितकटिमेखलानिरखि
मदनमतिहोरीहो॥१४॥धारीफिरीजिवतनवललालकोंमृडअंगमुसकिमो
हे॥१५॥पेमगांठिपरीपरसरांमकेहेछुटनोहिकोंछोरीहो॥पारागविज्ञावल
धनाश्री॥रंगीलेरीछवीलेनैनोरसजरेनांचतमुदितअनेरेखंजरीटम
मत्तदोऊकैसैरहरतनधेरे॥१६॥स्यामरंगरातेरंगरंजितमांनऊवि
चितेरेकुंजनदासअनुगोवर्द्धनधरस्यामसुनगतनहेरे

रसिकफागुरखेलेनवलनागरीसों। रससरसवररितराजकीरितुआईसवन
 मदनअरविंदऔरकुंदवरसेविसर्दचंदपियनंदसुतसुखदाई१। मधुपटोल
 मुडलोलसंगसंगडोले। पिकनवोलनिरमोलश्रुतिचारगाईरचितराससो
 विलासजमुनांपुलिनमेंसुधतवजदीविपुतहरिफलजाई२। कनकअज
 गवरनीसुकरनीविराजेगिरधरनजराजेगजराईजुवतीहसिगावैमिलि
 लेछीतस्वामिकुणिवेणिपदरेणवडजागपाई३। रागधलाश्री। अरीचलिवे
 गिछवीलीहरिसौखेलनजाईनिकसेहैंमोहनसांवरोवलिफागुरखेलन।
 वजमांही॥ १॥ धुमड्योहैअवीरगुलालगगनमेंमांनोंमाईफुलीहैसांफअरी
 चलि॥ वाजततालमृदंगमुरजडफकहीनपरतकछवातरंगरंगजीनें॥
 लवालसवमांनोंमाईमदनवरात॥ २॥ अरीचलि॥ आईहैजततैजुरिसुंदरिस
 वकरिकरिआपुनोंवाट। खेलतनांहीकोऊकांहकुंदरसोंचाहततिहारी
 वाट॥ ३॥ अरीचलि॥ विनराजादलकौनकाजवलिउठियेछाडियेऐंड॥
 उमगयोहैनिधज्योंनवलनंदक्योंरोकतरावरीमेंडरीचल॥ ४॥ उवीहैवि

हसिखरवज्रानकुवारीवरकदीपिचकारीलेत सहतनसकतकोऊमहासु
नटज्यौंसुनतसमरसंकेतापाअरीचलि॥आईहैरूपअंगाधरीवेछवि
रनीनजाईनवलकिसोरअमलचामांनोंमिलिहैवज्रआईदअरीचलि
खेलमचौखजिवीथनिमांहीअंवरवरखतप्रेमअंनंददमकतगुल
लजरेमांनोंनोरकेचंजौआरंगनिपिचकारीनजरेनरिछिरकतहरि
नताप्योकुटिलकिरीटछयेप्रेमरंगनरिनरिनरितपियाकोनाये॥अरी
चलि॥डरिमुनिनरनीवचावनीछविसोंवाछोहैरंगअपारमैनमूनी
वोलतजोलतपगनपुरकुनकारा॥अरीचलि॥सितसनकादिकनार
सारदजैजैजैनंददासाअपनेवाकुरकीजीयोवलेयाले॥अरीचलि
गिछवीली॥रागधनाश्री॥हरिचलेफागषेलनकोंसवउजकेलरिका
गलीएंनूरवनवसनसवारिदर्शए॥तिनिमैंसोजितवलिआरस्यामों
इनकेमैंसोनाकेधामें॥सवसमाजलेपूजचेमोहनचलेकोटिकांम
निरांमदलले॥जायजुरेसवउजजनमोरश्रीव

वोलिलई ५ सखी एक जव सैन दई तव प्यारी जिय जां निगई ६ सखी एक
वां हगही उजकी ऊरोषे जां किरही ७ जव इत ते चित्त एनंद लाला सीसन
वायरही बजवाला ८ नरिजरिथार पनाये पांन लागी लाल अति आं
नंद सोखान ९ खेलन की सख सौं जकरो जन जन को तुम जाय करो १०
तव वो आचंदन कलस नरे अवीर गुलाल देरदरे ११ मोहन कर पिच
कारी लई उत वैसन की मार नई १२ विविधि नांति वाजे जव वाजे वि
च विच खेल मृगजे जीते १३ मुख सो धिर खात खवावत पांन करत औ
र मधुर रस पांन १४ खेलत आवत गुरजन मां ऊर्यो विराजित मोहन
मानूं फूली सांज १५ जव उर लाय करी अति केलि खिनु खिनु वटी छे
मर सवेलि १६ जो जायो सो फगु बोलियो जो मन मां न्यो सोई कीयो १७
होरी खेलत हीरंग रस्यो देखन कौं गोकुल उमद्यो १८ इही सुरव देख
त सुरनर मन लूले नूतल वर खत आं नंद फूले १९ देत असी सचली व
जवाला चिर जीयो गोकुल प्रतिपाला २० जव हरिलोचन ले चलेन हाई

श्रीरघुवरवारनेजाशशताग धनश्री॥ नंदकुवरखेलतराधासंग॥ ज
मुनांपुलिनसरसरंगहोरी॥ सवघनस्यांममनोहरराजीतस्यांमसुज
गदांमिनीगोरी॥ १॥ केसरिकेरंगकलसजरेवजसकलसाजहलधर
कीजोरी॥ हाथनलीयेंकनकपिचकारी॥ छिरकतनांचतवजकीनव
लकिसोरी॥ २॥ चासअवीरजडावतनांचतकटिसोभीतगुलालकीजो
री॥ मगननईकीउतवजिसुंदरिप्रेमसमुद्रतरंगकजोरी॥ ३॥ वाजत
चंगमृदंगअधोदियेंहजांफिजालरिसुंदरी॥ तालरवावमुरलिक
वीनामधुरसद्वजघटतधुनिथोरी॥ ४॥ अतिअनुरागवद्योतिहिअस
रकुलहिलज्यामयादिहोरी॥ मदनगुपाललालसंगविहरतदेहिदस
भूलिजईवोरी॥ ५॥ एकगहैहठफैंटाफगुआकोंदेतगारिमोहनकोंजा
री॥ एकजुआंजिकैंजाजतकिसोरी॥ एकविलोकिहसीमुखमारी॥ ६॥
कनलेइछिडायमुरलीकीदेतवेगारिमोहनकोंजोरी॥ एकफुलेलअ
रगजाचोवाकुमकुमारसगागरिसिरदोरी॥ ७॥ विविधिजांतिफूल्याहें

ली
७

धनाश्री

दावन कूजितरवटपद और पिकोरी निरखित नेहजरि अंखियां चोव
योचाहत मुखचंद चकोरी ॥ ७ ॥ यके देव किं नर मुनि गन सब मन मध्य मन
निजुगयो लेजोरी परमानंददास आसुखकों ईजु विसिर धुन तउ अंको
री ॥ ८ ॥ मानं मोहन की पारिगो गूजरी सब बज के दो कतर है इरि देखे नंद
ऊधार गोर ॥ ९ ॥ जूवें ही कोऊ कहै उठि वे आमांनों वे मदन मुरारि रहिन
सके इत उत तै इरि देखत वदन उधारि गोर ॥ १० ॥ धरत पगन लली ये फिरे
नरेदरे अति जाइ कीच करोति जरंग्यो कछू है जुगति वहराय गोर ॥ ११ ॥
तन मुख की सारी लसै वाको कंचन सो तन मुख पीये मानों दामिनी की
देह सो रही जो न्हल पदाये ॥ १२ ॥ गुर नितं वनि पातरो मधि पातीरो उरज
जार अधिकाय लेहे गो लंक मलन लाल को लचक लचको जाय ॥ १३ ॥
कुटिल अलक नैनं वडेयो प्यो सो मुख ईड अरुण अधर मुसिकात
सो दीये जाल सिंह को विंड ॥ १४ ॥ बार बार पट पलट ई नौतन नौतन रंग
तव हीत वनिस की सी फिरे हरि देखावती अंग ॥ १५ ॥ लागी लगनि नंदल

लसोंकरैनिवंहिनकाज। चड्योचाकचित्ततुरकोंवाकोंप्रेमहीआये
 राज। ए। लाललखेलालीचदेसस्यतापसीपियारायेयहसंजोगनिवि
 हेनीकछूअरजिवीचहीमुजाया। ज्योंज्योंनरनारीसवैमिलिमिलि
 रतचवाव। सिरोमनिप्रनुदऊमुनेंवछोचैगुनोंचावार। रागटोड।
 होहोहोरी। खेलेनंदकोनंदकोनवरंगीलाल। अवीरजरेजरिजोरी।
 चकारीनैनंरंगरंगनिवोरीतैसीयेरंगीलीबुजवाला। खेलतगमुरत
 रतधरेरागरंगगावततांनतोरंगरंगरागमिलिवैवजावतदेनावैनिरसा

राग का

दरसवमुखरास। खेलतग
 नकेजोरा। खेलतग

री। खेलतग। रुलनकीगैंदुकनौलासीकनकलकुटियाहोथ। धा
 र्द्वजखोरिराधिकाकोटिकनुवतिनसाथ। खेलतग

ये हो हो वो लत ग्वालन सव संग कांन परी सुनिय तुनां ही वज्र वाजत ने रि
मृदंग धर खेलतः ॥ पहलैं सुधि पाई नां ही अवधे रे हैं सां करी खौरि ॥ अवह
ल धर उलटो काहे तुम धात्री ग्वालन जोर पखेलतः ॥ भरत घर तजा जरी ॥
जित गैड कनौला सीमार वसन रसन छुटत न संजारत तटत मुक्ताहार धर खे
लतः ॥ उडत अवीर गुलाल कुमकुमांजुरि आई सव चांम परी है गुलाल नैन
कर मंडित गहि पाये सखा स्यांम ॥ ७ ॥ खेलतः ॥ मोहन पिपा अकेले करि पाये
चक्र दिसते छेरि आई धेरि ॥ वो लोजू अवधाम छुडावो वलि ले वलि ही देटे रि
॥ खेलतः ॥ आजि हमारे वसि परे हो न ले हो तो जाइ छुडाइ कै वलि छूटो आ
पुने हो कै राज सोती मैं आवो लाइ ॥ ८ ॥ खेलतः ॥ एक अवन मैं कहे कछु जाजत
एक नरत अंकुचुार एक निहारत रूप माधुरी हरि रहे आपो ही हार ॥ ९ ॥ खे
लतः ॥ एक वनावैं दैत है वीरी कर पल्लव छुवत कपोल ॥ वध्न न जुवती व
ड जाग निहे हरि वसि कीये विन मोल ॥ १० ॥ खेलतः ॥ एक उवी वति वदन वि
बुक्क गहे हमत न स्यांम निहारि ॥ एक हसैं नैन सैन मिलवित वैन न दैत है गा

रि॥२२॥खेलतगेतवैतुमवसनहरेजतेहमकीनेअनेकउपायाअवैहमहयो।
करीतुमछाडैगीतुनगाया॥३॥खेलतगेआंखिदिखावतहोकहातुमक
गीकहारिसायाहमकरेहीआपुनोमनजायोछाडैगीतुमहिनचाया॥४॥खे
तगेएकगहिलीनोफैंटएकपीतंवरलीयोछिडायारांधाजहसतहरिजईग
गदीसैननदेतवताया॥५॥खेलतगेउडतगुलालअसनमयअंवरछविछ
ईमोनोंसांफराधाजूकेवेप्रगमकरेनांहीमुखचंदनीलांवरमांफा॥६॥खेल
गेहसिजूआपुनेंकुसुसोंघंघटपटकीयोहरिहसतप्रकासहोतचजदिस
तैंसुधाकिरनिजरर॥७॥खेलतगेहसिकहतसहतसवहिनीकेआजूष
ननहमेरेदेजानासाकोमुक्ताहोंदेहंपीतांवरमेरेदेजाएणंकहोकहाफगुव
ल॥देहोतुमबोलीसांचेवोलाकैवेंछुटोआपुनेकैदेऊसीदीमाकुसुमोलखे॥८॥
खेलतगेमुखकीकहतसवैऔरमनमेंअधिकसयानेंहैकपटकरैगेव
लिजैयातुंमहेजानकिनदेऊ॥९॥खेलतगेखेलैफागअनुरागसिंधुवढो
मचीअरगजाकीच।उज्ज्वलरीकुमुदिनलोंसुलीहरिससिराजितविच

खेलतः २१ अपिसिधनवनिधिवजविप्यनिडोलतघरघरघरा नवलव
 संतवलवविहरतबंदावनसतनलतनडुमडार खेलतः २२ सोजाअधिक
 निरखिमोहनकीमनमैयहैविचारि बजनारीतैसीक्योंनजईहो कहतसक
 लसुरपतिनारि २३ खेलतः जुगलकिसोरचरनरजजाचंसरसधमारह
 रिगार्ये मदनमोहनकीयाछविउपरिसूरदासवल्लिजाय २४ खेलतः रा
 ग काशी मोहनकेखेलतरंगुरह्योहो प्यारोलालनखेलैफागु खेलमैंचल
 तकरमैअतितरकमारतीपियकेपाइवेलिचलीजोवनमदमांतीअधरसु
 धारसपांनैमाइ २५ इतलीयेंकनकलकुटियांउतहरिओडनिसाई - -
 इतहीरंगरंगीलीराधिकाउतहैनंदजूकोलाल २६ मोहनगवागेसरसदे
 ऊदिसतेसोहतीकंचनमालफुंडनिजुरीचहूंरिसतेधार्ईहोंगावतगीतर
 साल २७ मोहनगमारडिगरजवजलटिचलीहैवैनीसूरेसवअंगमांनूंइंड
 केवदनसुधापरउडिउडिपरतनुवंग २८ मोहनगखेलदगोकोऊजिनिक
 रोनागरलालकुंलागेगीछोट मोहनमूरतिसांवरीहोंरारवोंगीअंचरकी

दोटा। पमोहनगएकजुआईआनगांवतेसुंदरीपरमसुजांनाइहवादेमाई
कौनगोप्यकोमारतमौहकेवांनाइमोहनगसकलसरवीमिलिरूफनआ
ईउनमैमोहनराईकौनाहैंवेफिरतधीतपीतांवरमुखसुरलीकरवैन।
७मोहनगजांफिनेरिडंडनीपरवावजऔरआवजउफतालमदननेरिअ
ररायगिरगरीविचिविचिवैनिरसाल॥मोहनगजमुनांकूलमूलवंशीव
टगावतगोपीधमारिलेलेनांवगांववरसानोंदेतपरसपरगारि॥मोह
नगफेलैफागधेमसौमोहनफगुवादीयोहैमंगायाहरिनारायनप्रजुसो।
जावादीस्पांमदासवलजाय।१२खेलतगेरागकाफीतुमचलौसवैमि
लिजांहिरखेलनहोरियां।आपुनीआपुनीसुरंगधूंनरीमोतिनमांगनरो।
रियां॥१३यरहरातअधरपरमोतीअंभियांकेसरदोरियां।चौआचंदनअ
गरकुमकुमांजरिनरिदीनीकमोरीयां।२४रंगहोरियां॥अंगमुहंगगुपा
लविराजैतेमलीवनीहैजोरियां।केहरिलंकनितंवविराजतगजगति।
चालचोरियां।२५रंगहोरियां॥पिचकारीमोहनपरिडारतवैहसिधंध

होली २१
टमरोरियां वाजैतालमृदंगअधोरीपटिपटिवोलतवोलियां ४ रंगहो
यां नैनंआंजिमुखमांडतस्यांमकेसवमिलिकरतकलोलियां सूर
प्रभुसवमुखकीडतविहरतबजकीरवोरियां ५ रंगहोरियां ॥ रा ॥ व
रंगहोहोहोहोरियां इतवनेंकि सोरललनपियउतवनीनवलकि
रियां १ रंगहो ॥ एनवलनीलजलदतनसुंदरदेकंचनतनजोरियां ३
केअरुनवसनतनराजितउनकेपीतपिछोरियां २ रंगहो ॥ कैटनि
गगुलालविविधिरंगअरगजाजरतकमोरियां छलवलकरडुरमुख
लपटावतचंदनवंदनरोरियां ३ रंगहो ॥ राखीयेकरतडरीयसवन
लिकेसरिकनककटोरियां सनमुखइष्टिवायधीठकेजायेस्यांमस
पेंडोरियां ४ रंगहो ॥ वाजततालमृदंगमुखउफमधुरमुखलीधुनियो
यां नांचतगावतकरतकुतहलपरमतचूरअरजोरियां ५ रंगहोरिय
एकनिकरिगेंडकुमुमनिकेऔरफूलनिकीजोरियां आजनिमारति
तपरसपरपरीरत्नकजेरियां ६ रंगहो ॥ याहीरसनिवहो निसवा

वां धि प्रेम की डेरियां। माधुरी हेत के सुख कारन प्रगटी नूत लजोरियां रंग हो रि
सों गगन का फरबोले श्री राधा बोले स हो हो होरी। खेले श्री राधा गोरी सा
हेली संग सुहाई वनी सवै एक ही दाई। बोले सव गजरो फेट निगु लाल अर
नूत नंद के लाला। बोले सव गसों धोव फलान्ति मगायो प्यारी जू के अंग लग
यो। बोले सव ग सवै मिलि धा सोहाई लालन को घेरि कै ल्याई। बोले सव
जरी के सरिक मोरी लालन के सी सतें दोरी। बोले सव गजरी रस दृष्टि निह
रे छुरी अनुराग की धारे। बोले सव ग वाजे उफताल मृदंगा। यीन वां सुरी म
ऊरि संग। बोले सव ग गारी रस जरी गावें तारी दे दे लालन वां वै। बोले
सव ग वाजे उपताल मृदंगा वै निमुख चंग उपंगा। बोले सव ग सहेली
को नेख बनायो। माधुरी के मन को जायो। बोले सव ग सव हो हो होरी
लै श्री धोरो गोरी। राधा का फी सावज मैं होरी रंग वा डो हो। सव दिन मैं
लास खेलत मोहन रंग जरे हो नंद राय की पौर हल धर सुवल श्री वाज
श्री दा मां सवल रकन संग जोर। विव धि ज्ञांतिके नेख व

नी० अतिही सुदंग गावत ईगावोरीतारी देदे किलकत अपने रंग र दोलक दोल
परवाव्रज वंदीनामांफ संखड फत्ताल भेदर डम डमी अगनित वाजे विविधि
चिवै निरसाल ३ कुलाहल सुनत सवै व्रज सुंदरिस कलसिंगार सवारि
कुंड निमिलि गावत आईहो अतिही परस परगारि ४ डुंडुं बँदिस ते छुटी
पिचकारी घुमयो मै अवीर गुलाल र पटफ पटवसन लेधावै तो डटत नरम
निमाल ५ तिहि छिनच पलचंचलचंश वलिहल धरपकरे दौरि आंषिनि
आंजि मुखमी डिकुं मकुमां छाडे है रंग निवोरि ६ पौछत ननै ननि चोल
नील पटत ननां ही वसन संजार हो हो कहिस बगवाल हसत है बाडो है रंग
अपार ७ तवनंदनंदन फगुवादेन मिसि प्यारीसन मुख आय मृगमंद के
सरकुमकुम अरगजा जाजे है नरल पटाय ८ तव सकुची गोपी सब मिलि
कनकल कुटी लेहाय तव यों धाई छबीले लाल कोरव सित कीनों पटमा
य ९ जाजे सकल कोरव सित कीनों सखी सब संग केली नें घेरि अछुन
नउ वायग ईले पिय कों फिरि चितवत मुख फेरि १० प्यारी धाय गहे नुज

लिः

वेदन अति आतुर अकुलाये करत मनोरथ सवही जिय के सरस वसरहे ।
अकुं सजाये । ११ एक सरसी सौं धोल पटावत मिलि नावत के सरि नीर पीतां व
र संयंथ वनावत हीरा धाजू के चीर । १२ एक कहत वलि वलि जोरी कीरत जनु
वन नोहि समांत वेदन निहारत चंद चकोरी अंगन मात है फुलि । १३ एक क
पोल परसिल पटावत के सरि कुमकुम धोरि । एक जाल रचि वेदी वनावत ।
हसत सबै मुख मोरि । १४ एक कहै जलीवनी है सहचरी श्री राधाजू के जोर । १५
हसुनि मुसकि हसत पिय प्यारी चितवत नैन न निमोरोरि । १५ या छवि परत न म
न राई लो न उतारि । चिर जीवो जुग जुग यह जोरी कहत यों अहत है अचराप
सारि । १६ हरि संग करत विहार परस परस विविध विधिर सीकनि कछु व
र न्यो नहि जाई सुरनर मुनि वैय कित जये है रति पतिर हे है सिर नाई
कुगु वामन मान्यो दीयो है
तैंगवत यह जसदास । १७ । राग काफ़ी

री

ली
३

पमोहनसंगडंडनीउफसहनाईसरसधुनिराजे विचिविचिजुवतीमनमोहन
मऊवरिमुखलीवाजे ॥ १ ॥ स्यांमांसंगमृदंगजांजिआवजअनघातवजावे किं
रीवेनाआदिवाजेसाजेगनगनतनआवे ॥ २ ॥ तवजकुंवरकरलीयेराजतर
तनखचितपिचकाड़ीउनकरकमलकुसमनवलासीगावतगारिसुहा
धतवमनमोहनजुवतीजूथपरविविधिरंगवरषाए सुखसौंजफागुको
लीनोंयोनोंनवधावनमांनोंआए ॥ ५ ॥ तवललिताचंझवलीमतोकरसुव
लसैंनदेलीनों छलवलकरिगिरधरगहिपाएवेकोंपहमतोमनकीनों
६ सरवाजेदुआंरिविगिरधरगहिपाएजयोजुवतीनमनजायोआंविआंजि
गूंथिवैनीमृगनैनीजेखवनाए ॥ ७ ॥ फगुवाक्योरहेनेमनमोहनमोतिनऊ
परिमालउतारी वंशीऊटकलईकुकिप्यारीअधरनविलसनहीरी ॥ ८ ॥
दीनेछाजीआपआयकरितवस्यांमसरवामेंआएतवहीआपुनीसमस
रकरवेकोंवलदाऊकोंपकराईएजवहलधरवसपरेजुवतिनकेसर
नैवाएजोईजोईबुद्धिउपजीजियाकेतिहितिहिजांतिनचाए ॥ १० ॥ कीनोंव

चसुवलश्रीदामावलिदाजअनिच्छुडाएफगुवादेनकस्योमनजायोउ
जपतिदेरसुगाये॥११॥तवउजराजसववसननूरवनलीएंजुवतीजुथदिग
याए॥१२॥देतअसीससकलउजसुंदरीरसननैनलखिकोरी॥चिरजीवो
मदनमोहनपियास्यामममोनोगजरस्यामस्यामांजोरी॥१३॥काफीत्रि
जंगीमोहनमवहस्योहो॥हस्योमनसकलघोरवसुरवदेनअजंगीगेग्रहे
ग्रहतैवनिमैउजवनिताचलीहैनंददरवारदेखतरूपमदनमोहनको
कीनोंहैमदनविस्तार॥१४॥त्रिजंगीगतनतनसुरवकीसारीहअतरोटीछ
विदेतानीलकंचुकीअतिराजतहैदेखतमनहरिलेता॥१५॥त्रिजंगीगवि
भ्रिवाहनमरवमोगविराजतसीसफूलकीक्रांतिकरनोटीऔरकरन
फूलमांनोंससिउडगनकीपांति॥१६॥त्रिजंगीगमृगमदआडलिलाट
राजितमध्यचंदनकीविंडाकहीनहीजायहिसोभारासीमांनोंराजतई
४॥त्रिजंगीगनैनंनिअंजनखंजनमोहेचंचलताथकीमीनावंक
निमैअतिमृगमोहेहैपुतरीकमलआधीन॥१७॥त्रिजंगीभनृत मलय

विबुधविहगसोदेवियतुहै मधुकरसुतजैसोहोय करिमधुपांनपांनसुषदीनोरहोहै
कमलदिगसोयवहै

री० रिनृकुटीराजतमांनजकांसकेवांन छुटतनांहीआपुवसिकरिरावेहैंम
४ दराहकीआंन ६॥ व्रजंगी० नासावेसरिजलसुतराजतउपमाकहीनजाय
मांनोंचंदनिजबंधुजांनिकैलीयोहैनिकटवुलाय ७॥ व्रजंगी० असुनअ
धरमधुरीसीवांनी सुसकतिवरखतफूल दसनदास्यांकेवीजवोएहैंमध
सुधाकेफूल ८॥ व्रजंगी० चासुचारचुरीहरीहरीपऊचीपुनीजारविराज
ली२ सुदार करपहनवमुदरीविराजैयेदिगबाजूबंधनरेसुपाठ ९॥ व्रजंगी०
मुक्तमालचौकीरवंगीनारीडलरीपोतिकंठपचकरीगनगीतमुखतोली
वाकीजाति १०॥ व्रजंगी० गजगांमिनिजांमिनिअतिअदीपतपगनपुर
कुनकार मांनोंमरालमंडलीनृततरसरहोहैइतआकार १२॥ व्रजंगी०
छुट्टांटिकाकटितटराजितसपतसुरनकुलवाज आतुरकौआई
धाईसवैमांनजमित्रगनराज १३॥ व्रजंगी० सकलसिंगारकीएवजवनि
ताउपमाकही कोटिरायकेसमांनोंप्रकटहरिआय १४॥ व्रजं
गी० १४॥ चऊं नेरिव मांनोंमुरलीचंगउपंगमदनने

रिअरुणायगिरगरीवाजतदोलमृदंग॥१५॥ त्रिजंगी॥ चोवाचंदनऔरअरगजा
 सखीजवादिअवीरानवकेसरिमंटकीजरिधारीनिरमलजमुनोंकोनीरा॥१६॥
 त्रिजंगी॥ छिरकेजायकैंगोपालगवालसववाटोमनआनंदनिर्जतहसतकर
 तकुतहलराजितश्रीवंदनंदा॥१७॥ त्रिजंगी॥ भारगविहाग॥ तालगहिगहेवरसं
 नेकीगवालनीहोरखेलतफागवसंतसंकनमानेंकाऊकीमातपितामुतकंत॥
 वरसांगचंदनगाचंदनवलीमधिनायकराजैराधाहोसहजसरूपमुहोवनौली
 लासिंधुअगाधाहो॥ ३॥ वरसांगसकलसाजसवलेचलीआईवटसंकेतहो॥ ५॥
 वईसखीइकआपुनीनंदकुंवरकेहेतहो॥ ३॥ वरसांगचलीसवैचतुरसितो
 मनिषेलनकोरसफायहो॥ २॥ सिककुवरिखरखनांनकीतुसोंअतिअनुरा
 गहो॥ ४॥ वरसांगवलिमोहनहसियोंकरूपोसुनऊसरवाश्रीदांमाहोवेह
 मपरिआईसवैजुरीउनमतअतिसैजांमांहो॥ ५॥ वरसांगवेगचलोसवैगवाल
 लेदिरवावोआपुनेंहाथहो॥ जैसैवजरिनआवहीछाडिआपुनोंसाथहो॥ ६॥
 वरसांगअनंतगुलालमुंउडावहीअवीरलेदीयेहैंनिसांनगुराहो॥ वज्रत
 ॥ १॥ जैसैवजरिनआवहीछाडिआपुनेंहाथहो॥

गरीः

२५

वृजः

कलससौधरेनरेकुमकुंमपैजरीपिचकारीहोमेघघटाज्योवररवहो७व
 दलवलदमेंदेखिहीकैसनमुखआईधो॥मेघघटाज्योवररवहीअदनुत
 गमचाईहो॥७वरसां॥कमलनीललेनैनविलासीकुसुमगैंदुकलेमारीसु
 जागेमनमोहनांहोहो कहैवृजनारीहो॥एवरसां॥चंशवलीवलजुगहेस
 मगहेसुकुमारीहो॥सखागयेसवनाजिकैलीएहैंदमांमांछुडाईहो॥१०व
 संकरखनसौंधैजरेस्यांमजरेसुकुमारीहो॥नैननिसिसंवारिकैनेखवन
 नारीहो॥११वरसां॥रसवसजईसुंदरीलीलाकहीयनजायहो॥चत्रजुजअ
 इनवसिकीएश्रीगोवर्धनरायहो॥१२वरसां॥गेराजअणो॥गावतधमा
 आईवृजकसिकुमारिनारिचित्रअंकितडफसवारिगिनटकोरअंगुर
 धारिवजव्रतरिजर्वगवारि॥१३गावतगेसुनैनकैसेसुघररावअर्जकली
 बुलायसंखश्रीगेंचंगउपंगमजवरिवंसुरीसहनाईधुधरूघंटाघप्यति
 करतालसहतारकुंदनीअदंगघारिसाधिलेगहैतानहोनंदधार॥१४गाव
 चोवाअगमदलैमुखमंडितकीएगुलालकेसरिकेसूतीनलोकतरही॥

पुनकंचनकरसीसुदार। पिचकाड़ीकरनलाईधारा छूटतसुहार्सहचरीसमी
पलारीछिरकतहीहारीहारी। गावतग। अतिविचित्रवालमिगविहरितस
मिलजुवतीजयगावतहेसुरसजुतहारीकेगीतगारी। मुरारीदासप्रभुगोपा
लफांगुवादीनोंसंजारहेआसीसजलदिचलीरूपमाधुरीनिहारी। गावतग
धारागसोदव। मेरेनंदनपाछेंपत्थोरीकंचवचें। सोसिखरीहितसयांनीया
केरंगनराच्यो। एकवहकरलेडफगहेरीपछिदोऊदोहीउठेगायकवज
कदेखिनैनललचांवेनैननहाहाषाय। मेरेलीनेडंगरवेगरमेरीआनि
करैपहचांनि। शवारवारकेआंवनेंअैसरवीहोंगईलीयेजियमैंजांनि।
नांमऔरकौलेसरवीएदेरिमोहिसुनावै। होंसमुकोंजोवहकहैसरवीकों
ज्योंरहेवतावै। मोहिदेखिकैंकुकिपरतहैरीगहेलेतऊसोंसहोंडरपोजि
यअ। पुनेंसरवीसोंसननंदकोवासा। धदिगहोयकहिजातहैआवतकैंधों
फागतवकछुवोलीहैनहीसबनरनारीअनुराग। पज्योंज्योंहोतजनानों
त्योंत्योंपीडैप्रतिवारवारकहतांवनेंसरवीज्योंग्रीववहैमुनैन न

१०
६

वनीरीवनकछुपान॥६॥होनसमुजोजियआपुनेउतजगनाथसैगायाने
रागसोर॥होंकैसैंकैपनघटजांजरीमेरीगैलनछाडैसांवरैहोंलाजतिउ
रपतिरहोंरीमोहिघरेनकोऊहेरी॥मेरी॥जितदेखोंतितदेखियेरसि
यानंदकुद्वार॥६॥निवातनिकैसैंजीवोमोहिपलकनकरतजुहार॥३॥जमु
नांजलगागरिनरोंरीजवसिरधरूंरीउचाय॥सोअंचरकंचुकीउडेरीमे
रोहियरोतकिललचाय॥३॥मेरी॥लकुटीलेआगेंचलेरीमैरोपंथसवा
रतजाय॥मोहिनिहोरोलायकैबहफिरचितवैमुसिकाय॥४॥मेरी॥गागरि
मारैकांकरीरीएडीछुवावैपायलात॥पनघटपैंठाढोरहैमोहिदोक्तअ
वतजात॥५॥मेरी॥कारुमिसहाहाकरेरीलंगरमोहिनिहारिआदनके
मिसिआदनीपीतांवरमोपरिवार॥६॥मेरी॥मोतनलागुलगैनहीरी
वाकोमनललचाय॥तवहरिमेरीछांहसंवेहीछांहछुवावतजाय॥७॥
अवलगुकछुसकुचतरहेरी॥प्रगटकरतअनुरागअवकैसैंकरिछूटि
रूंजवसीरपतिरीजोऊंफाग॥८॥मेरी॥घरघरतैठजनारिचलीरीविवस

जईन निनारि मांगी फागु जूती दीओ दोऊ जों म मिलि उर सव डारि री॥१॥
मेरी गजो अब जान लालन मिलियो नां हीरी नां चो चो पको नां च सिरोमनि
प्रभू दोऊ हिलि मिलि रहो वे करत मनोरथ सांचरी॥२॥ मेरी गेल न राग न ट
जुवती जूथ मिलि खे संग फाग रवेलत नंद लाल कुवर होरी हो हो होरी बोल
ना गावत नट नारायण राग मुदित देति चित फाग च जं दिस जुरी गोप्य पां छं
दो लनां ॥ होरी ॥ वजत आ वजत पंगवां सुरी सुवैन चंग मदन ने रिमज
वरि फफां जि दो लनां ॥ होरी ॥ चलत सुर अने कता ल सुघर राय श्री गो
पाल वेणु मध्य पां न करत होरी बोलनां ॥ ३ ॥ पहरें तन ना नां जांति जांति सो जां
कछु कही न जात भूरवन विविध फट अमोलनां ॥ ४ ॥ गहि कुंम कुंम सुरें गछि
रक्त पिचकारी न रि न रि पर स पर देत कूकुज की खो रि खो रि दो लनां
पा कारू को चिबु क चारू पर सै कारू की वै सरि खुनी कारू की प करि हा
र तो रि कंचु की कै वंध छोरनां ॥ ५ ॥ कारू को लेत हार तो रि कारू को गहे दु
जम रोर कारू प करि छाडि देत कर जं जी रनां ॥ ६ ॥ गोकुल

होरी
२३

सौरंनचङ्क्योरवद्यौसबतनअनुरागउमग्योरसअमोलनाकुंजनव
प्रभुगिरधरपियअेमसिंधुप्रगदनयोसुरविमानविद्यकितअयेदेस्ति
जकीलोलनाहोरीहोहोरीहोरीबोलनागरागधनसरीनिकसेमोहन
लषेलनवृजिमैफागरीरंगहोहोहोधुमझोहैअवीरगुलालमनौउनय
नुरागकीसोभितमदनगुपालकटिबांधेंपटसोहनोंकाछनीकाछैलाल
लनिचोयरंगीमनोंमोरमुकटछविदेतअैनमैनमानोंपेषनोंसवहीको
बोहरिलेतवंकहसनिजगपेषनोंइतअइहजनारिमृगनैनीगजगामिनी
केहैमदनगुपालघनघेस्यौजांवंदामिनीछिरकतपीयनंदनंदनीयपटअ
वचांवनीमानोंघनसंन्योचंदडरहिनिकसिपुनिआंवहीवनैहितियनि
अंगछिरकिछीटछविहेमकीमानोंफलीरंगरंगललितलतागनवे
कीवद्योहैपरस्पररंगउमंगीउमंगिरंगजरनिमैजवगहिरंगनिजरेमे
नमूरतिसांवरेहरैहरैहरिहसिपरेमुनिमनकैगयेबावरेजईसरस्वत
मतिवोरैआरखेलकहांलौंकहौरंगजीनेसांवलगौरनंददासकैहियव

१ राधा कृष्ण
 हरिनाम संहिता
 रसचा ५
 पसव के ५
 जू के ५
 नरि ५
 लै ५
 मां ५
 तै ५
 के ५
 ज ५
 न ५
 ज ५

३
 २
 १
 ४
 ५
 ६
 ७
 ८
 ९
 १०
 ११
 १२
 १३
 १४
 १५
 १६
 १७
 १८
 १९
 २०
 २१
 २२
 २३
 २४
 २५
 २६
 २७
 २८
 २९
 ३०
 ३१
 ३२
 ३३
 ३४
 ३५
 ३६
 ३७
 ३८
 ३९
 ४०
 ४१
 ४२
 ४३
 ४४
 ४५
 ४६
 ४७
 ४८
 ४९
 ५०
 ५१
 ५२
 ५३
 ५४
 ५५
 ५६
 ५७
 ५८
 ५९
 ६०
 ६१
 ६२
 ६३
 ६४
 ६५
 ६६
 ६७
 ६८
 ६९
 ७०
 ७१
 ७२
 ७३
 ७४
 ७५
 ७६
 ७७
 ७८
 ७९
 ८०
 ८१
 ८२
 ८३
 ८४
 ८५
 ८६
 ८७
 ८८
 ८९
 ९०
 ९१
 ९२
 ९३
 ९४
 ९५
 ९६
 ९७
 ९८
 ९९
 १००

धिकीनीज आबो निज जौं न विराजो ज वर सो नौं सकल निवाजो ज अतिक
पा अनुग्रह कीजे ज हम तो अप नें करि लीनें ज गुन गनें न परत मुख गाथा
ज वृजिकी नौं सकल सनाथा ज तुम तो सब के सुषदाई ज सुष कीजे कौं न ब
डाई ज तुम तो सब की सुषरासी ज एस फल की ये वृज वासी ज तुम तो यह निज
व्रत लीनें ज जिन जोई जा चौ सोई दीनें ज यह जग तुम्हरे ज सगावै ज इह मु
ख करि कहा वषां नै ज जव कर गहि टिग वै गरी ज गां वै गरी वृज नारी ज
तुम को दूँ दूँ दूँ दूँ तुम सांच कहौ इक गाथा ज जव गर गति हारे आये
ज वज्र राम कृष्ण युग ए ज मुनि वासुदेव करि लेषे ज वसुदेव कहा तुम दे
षे ज यह सुनि सुनि वात तिहारी ज अचिर ज न प जै जिय नारी ज और संका
जिय आवै ज यह जे द कोऊ नहि पावै ज पति साधु परम तुम पायो ज यह श
त कहं तै जायो ज या के गुन रूप निहारे ज यऊ मिलहि न कूल तिहारे ज ह
म सौं सब लाज निवारो ज जंवे के कौं न निहारो ज कछु कस्यो हमारो कीजे ज
वसि कै सब कौं सुष दीजे ज रहिये कछु घौस हमारे ज हम चलि हैं सकल तिहा

रैजू तुमहमएकैकस्जिनेंजूनदगांवसोईवरसानोंजुजैसैंकछुनंदहिमांनोजू
तेसैंदरवजांनहिमांनोजूदोजहैपरमसनेहीजूयेएकपांनदैंदेहीजूसुनिसु
निजसुमतिमुसिक्यानीजूवोलीकछुमधुरीवांनीजूवसिहैकछुघांसतिहारै
जूकीरतिचलिवसऊहमारैजूतवहसीसकलवृजिनांरीजूजसुमतिकीओ
रनिहारीजूवृजिजयोकुलाहलनारीजूनांचैदैदैकरतालीजूयहरसवरसै
वरसानेंजूविनकुवरिरुपाकोजांनैजूकीरतिजसुमतिजसुगांयोजूवृजि
वासमाधुरीपायोजूरागविलवलपायामैंउंचसमौंदेविचिगुलालअंजी
अस्सीवेलननजांमीइसनीउरदेनालासांवलानीछोहउवेसकडीगली
मल्लेननूंमैंउंचुषपरलांवदाराहमालासंगमदीअंबियांजुलमकरैंदीयांपां
वेदीनीइकजंजालनैंनूंदेनालमैंनूंकरतसलांमांजवमुउवेषंकहंदाकी
तानिहाला रागधनसरीअतिछलेंवेलीलाडिलीअलबेनेपकुंजहि
हारीलालप्रेमसिंधुअनुरागकीरिति वसंतमंजरीरसान २ संगनेदीनी
सहचरीजुगलप्रेममंदछाकीआहिललितपरागसंदेखेंअंनंनं

गिरहीलपदाय नूषनवज्रविधिराजही वसनलसनकी अद्भुतजोति मां
अतिअनुरागसोंकोटिकलानिधिअवनिउद्योत ॥ अपनेअपनेमेंल
षेलतदोजवज्रविधिफाग गोरीऔरसवसांवरीमांनतहैअपनौंवड
४ चंगउपंगमृदंगतालउफ मधुरमधुरमुरलीघनघोर पिचकारिनय
लावहीपोषतचात्रिकनैनचकोर ५ गावतअतिउछाहसौरूपअनूप
वज्रकेलिषेमसुंधासीचीसवै जुगलचंदआनंदकीवेलि ६ फूलजहां
हांदेपियैसरसमधुरमुसक्यानअपार रसिकसवैहितहाथसोंगुहिय
रोअपनेउरहार ७ देपतिसुषनहिकहिसकों रोंमरोंमरसनाजोहो
श्रीरूपलालहितहियरहौ जुगलकेलियहतनमनजोई ८ रागसार
होरीयावगरमेंमांचिरहीहैपनियांनरनकैसैंजांऊ लजलीयेमेरीघूंघ
टपटसोंकिहिविधिनिकसनपांऊं दौरिदौरिरंगजरतपरसपरतिनसं
कहावसाव नागरीकांन्हुबोमोहिजिनिनांवधरैसवगांव ९ रागप
जरैषतानकीजियेनिजरनरिदिलइत्कदीनिगाहै देषैसबषेलवीच

छुवोमतिवां है क्यारं च नंगुलाल कारुं मालकी अदां है। लगे गा कलं कसे
रिव नैंगी निवा है ॥ अथ हो लडोल लिप्यंते ॥ राग धनसरी जमुनां पुलि
न सुहां वनो रंग नीनें जलै तन मन मोदव दार्यु डोल सुहां वनो रंग नीनें ज
लै। कंचन रवंज जटित वने रंग नीनें जलै देषत मन ललचाय डोल सुहां व
नो रंग गेमां नो जुग ससि एक वारं रंग नीनें जलै कुमुद निरुली दिग आय डोल
ल सुहां वनो रंग गेय हृदय विकविको क हिस कै रंग नीनें जलै चित व निमृ
ड मुसिक्याय डोल सुहां वनो रंग गे च्यास्यो डग चंचल वने रंग नीनें जलै उ
पमा कछु वहराय डोल सुहां वनो रंग गेमां नं रूप तमाल मै रंग नीनें जलै। पेल
तमी न सुहाइ डोल सुहां वनो रंग गे अद्भुत रंग व डौत हारं रंग नीनें जलै सार
द वलि वलि जाय डोल सुहां वनो रंग है नीनें जलै ए राग धनसरी सारद व
लि वलि जाय। सुरंग गुलाल अवीर वंड संग गनर द्यौ घुमडा शमनु हर उ
पकार नै र चो है वितान वना शव ड जोट निजां मिनी लागत प्रीत मउर
धा शमां नं सुंदर मेघ सो। छवीली छटाल पटाय सो

डोलः
३०

नछिनछविअधिकाय। दामोदरहितरसिकजेजीवतशहजसगाय। १२
सारंग॥ फूलतडोलमोहनीमोहन। फूलिफूलिवंशीवटछहियां॥
डीगहेंएकनुजराजत॥ एकनुजादीनेगरवहियां। रितुवसंतकेवसन
रितनरूपछकतचाहतमुखचदियां। सहचरीसुखकुंजनललिता।
निरखिहरषिराषेहियमहियां। इतिहोडोलसं॥ १॥ ॥ श्रीरसु

अप

श्रीराधावल्लभनमः। तिताल। राग अडाणों। भरिनाजतइह
लिगहिलीनोंचितचोर। उरजिगयेपियवाजलतनदिचपरेवे
अपनोंमनजायोकरलईपिषंकारीकरनमरोरनागरियाहै
गवांघिपीतपटछोर। थराग अडाणों। इकतालजातकिरैचल
गहोरीहो। कौरहेयावृजवीचिडवहियांआईनदलकिसोरहै
वचेवजतदिनकहाचाचरमेंवोरीहो। नागरहैलहहैहैहै
येसोथोरीहो। थरागविलागरोइकतालारंगहोहोहोरीहै
नकी। दामिनिअंगरूपअनिरामनिस्वामिनितियस्तमन
मुदिराकानिसिमुखअथमषेलीअरंनहैहोरीहैहैहैहै
दनरनषंनहै। वाजतउफडंदनीसहनाइगो। मुखअननन
अमुखऔसरवरसांनोंतिहिवेरनदस्तअंगसिगनना
रिहो। अपअपनैंनवननितैंनिकसीदिचवचनददद

पारी

३१

लमनों चौरदारों वावा आकार तिज्जता छिन वारे तन अमोल है देषी प्रियाज
आवत उत मन मोहन अति सुषने सावधान नये गोप सिमटि सब वाजि उ
वाजे घने डुंदि सिगारि धमार नि को सुर मिलि मंडप गयो छा यकौं सिव स
धि छूटि गई अवन मुनि मुनि मन रहे लुजाय कौं उत नंदन दन रसिक सि
मनि इतराधा अमिरां मिनी उत अवीर गुलाल गगन चटि नई दिवस तै
मिनी वृज नारी पिचकारी धारा देरो कि अंचर पांन कौं मुनि मुनि नर निव
वि सों को करि स कै वषांन कौं रूप लाल ची लाल बाल ल कौं नर त है नियरै
आय कौं गहिली नें घन स्यांम सवन मिलि दांमि नि सी दम काय कौं अंग पर
सि मै रंग बढो दोऊ परिरंजने उर जंई कौं नै नागरिया जव फिरी जिति कौं
वजत चले सह दानै राग अडा लौं तिताल रंग हो हो हो होरी मची अग
त छूट कर नि पिचकारी डुंदि सिव मकतर त नषची लाल गुलाल लये
मुख मीउ नि मृग नै न नि की नौं हन ची डरत गहत फिर करत मनो दृष्ट दं प
ति अंषियां पी कर ची नागरी दास मिलन ऊक ऊर नि हो हो बोल नि को

जनवचीराराजअडा एंति तालहोरीषेलिगदेदोजकेसरिकीकीचवीच
मोतीवेसुमारपरेहारनिरलकभैरंगनिक्सनिजीजेअंगनिलपटिरहेकरके

षसैनाथरागप

परजा

रिनारिनवनिर्तितस्यामसुधंगारंगनरे

मउमंग नागरीदासजईअंधियांनकीनिरविनिरविगतिपंग १ राग परज
तिल रंगीलीगलिनविचहोहोहोरी इतनंदनंदनरसिकलाडिलोउतट
खनानकिसोरी उडतगुलालकछूनहिसूतऊकजोराऊकजोरी नाग
रीदासपरसपरदारतजरिनरिकनककमोरी १ राग परज इकतालगले
विचइस्कपयाजंजाल कैंयांमैंगईदिवानीवेषनिनंदनंदनदाव्याल मुहगुला
लपंछणनेमेरेलायारिंदरुमाल नागरीदासजईउसछिणतैंसवसुषदीहट
नाल १ राग परज तिल अरीयहउजमंडलपरमसुहावनौं इहांसदास
हजरसरीति नंदगांववरसानैंकीअववऊविधिवाढतडीति उतैकुवरनं
दरायकोइतअरीवरनानकुमारि लगनलाजउरकेहैंदोऊनांहिसकत
निरवारि गनतरहतदिनफागकेयहआयोसोफाग वौरवौरउफवाज
हीअवदवतनहीअनुराग आजुषेलआरंनहैउमग्योहीयेजलासयेइ
तउततैंआयेदोऊविचसंकेतनिवास गांनरंगगहगडमंच्योहजरस्योऊ
लाहलछाय उडतअवीरगुलालसौंननदिनमनिनहिदरसायछैलछ

लीछिपसां वरोफिरिचल्योष्टयाजरिजाजितवज्रवतिनिमिलिगहिलयो
इतउबीडंजीवाजिरोकिदीयेविचकुंजकौरहीटिगस्यामांमतिनागरि
याइहिविधिरहो नितिवरसांनैजीति। १। राग परजा। तितालै रगवगेवसनगु
लालरंगदोजछविमौलंगिलपटायपरे। प्रतिविंदिततनमोजहोजपरछु
टतफंवारेरंगजरे। कुंजमहलरसफागमनोहररूपरीफिजीजिउधरे। ना
गरीनागरवदनचंदमै। इगवकोरपरफिरिनटरे। २। राग परजा। इकताल। डं
ऊनिमै। आजुरहसिरसफाग। तालतांनबंधानगांनधुनि। परजगर
ग। वीनरवाबमृदंगमुरजमिलिचल्योऊमकिऊंकार। सधिनसहितदंय
गतिलैलैवल्लिछोडतपिचकार। ३। ऊंघांतै। आं। वनिउलटनिकीछिविवरनी
नहि। आद्वै। अल्लेवेलीसहचरीमै। चहचरिचाचरिचहलमचावै। नूपुर
सुनतविथकितरहेकोकिलमधुपमरालजउतगुलालगगन। आगन
सवहरितऊंजनईलाल। ऊये। असनसगवगेवसनतनररगमगेनेह
नवीने। लटपटायलपटोचै। तिहिछिउगवरस्यांमरंग

अलकट्टी उरमाता गरवहियां मुसकाते नागरिया हसि वसे महल में होरा
 के मरमांते १ राग पं व तितल आज फागु सुष सरसां नौ वरसां नौ सुष
 देत आये श्री वरनां नज्जै नंद गो पराज सुंदर सिंगारे सव वीच वल राम स
 म सो है संग रंग जस्यो कुवर समाज १ की रति जसो दामिली जारिन में जां कै
 ऊं मि मिले वजरा जां दोऊ लपटां न हो तर सरीति निके विविध विनोद तहं
 धन धन वरषे महिंद वावा वरनां न २ वौर वौर वाजे उफ गावै वज नारि गारि
 गहि महि नीर नई उम गणौ जलास होरी को सों हार फिरि मिल्यो समधां नौ त
 में आनंद कुलाहल कै वीचरन वास ३ नंद को कुवर वरनां न गोद लीये
 वै ठो लीये नंद वरनां न की कुमारि ५ ऊं नि कै हाथ दे गुलाल ही बिलाये ज
 व नागरिया वज्र तनि दीने प्रान वारि ४ राग पं व तितल रस्यो रंग होल
 सरसाय ये कण दिस पिपि आर्द्र जवाये कण दिस पिपि आय गां वै सषी सु
 हां वणी साथे संज मुरज सो है साज कुंज सदन रै आंगणै रस्यो मदन कुजा
 ऊवाज फागु ए समै सुहां वणों खेलै नवल रंगी लाषेल उडि गुलाल घम

डिली पियरसि कविहारी लाला ॥ राग सोर
॥ कांन्हं निलजगारि जिन दैरे हैं हारी हाहा अवतौ सौ कलाज मुख लैरे

पिय नैन नि की नीवोरी कहा कहौ

छिन लगाई है मुख की दोरी ॥ इन नैन कै हाथि विकानी देखन को
उठि दोरी ॥ नागरिया घर वरजितर
उगोरी ॥ राग सोरवा इकताला ॥ प्यारीजू केषुलि गये सौंधै हो जीनें वार देवि
सखीय हरीति अनेषी बंधि गयो मन रिज वार लूलि रह्यो वैनां ग्रीवादिग
दूटिर हेउर हाराना गरिय हच्छ विहिये वसी विच मन मथरंग विहार ॥ १ ॥
इकताला मोहन वारी वसि की जै ॥ हसिली जै हारी मै हो हरि अ

१० बलविहारीप्यारे जो चाहै सोली जै ५ राग सोरठ ॥ इकताल वो लै रंग होरी है
री होरी डो लै रस मंत्र गो पट्टं दता मधिनायक वृज चंदनं दनंद निकसत ज
हां जहां होत के सरि की कीच करत है कुलाहल वृज वीथि कै वीच भरत है
निसंक जाय तो रि कै कि द्वार छाडत मन जायो करि फाग मग्न गवार सुनि
सुनि उफड़ंद नीविच मुरलिको साल कुंड निमिलि जूं मिजूं मित्राई छजवा
ल गाइ उठी गारि गरजि रूप की घटा उविगुलाल उजं दोर अटिगई अटा २
होत विविधि खेल वटौ सिंधुर सहिलोर गिरि गिरित हां परत गति न मां ऊ
हार डोर नी कै निहि संकत लविजिन के मुषमयंक तिन कौं लाल धंधिर में
निसंक जरत अंक ३ छटि छूटि अंचर गये छूट छूट बार हार टूटि मगनि पर
त मां नत नही हार राधे सैन पाय सिमटि धाई सब वाल कहि हो हो हो होरी
होरी पकरै नंद लाल ४ पैचत शुक किं किनी कटि फिरत संग संग सोरी ल
पटात एक लपट त अंग अंग गजर स्याम उर ऊनि छवि वटौ रंग रंग ना
गरिया निरवि नैन जये पंग पंग ५ राग सोरठ ॥ इकताल रस फाग अउ

वाजैडफडंजीसहनाईकलगारनिधमारनिधुनिगांनरंगछाईसवरवेल
नकौंउमहेउतकंठतममैनेनौवौहोसाजिकैचलीहैमांनौंअनंगसैनांउ
उतमोहनांरंगीलोइतराधेरंगवोरी।वृजवीथनिपरसपरमांचीहैरंगहो
री।२मांचीहैअनंगधारा।पिचकारीरंगधारावोहोछूटतसुहाईनरिभा
जतपकरिलैसिरनावतकमोरी।डजंअोरकैरहीहैककमोरी।पटप्रचु
रउरसरिगेउरहारडोरटूटे।कुकिजूलतहैवैनांवरवारपीठछूटे।तियदा
मिनीनघेस्यौघनस्यांमरंगनीनौंकोकलैगईहैवंत्रीपटपीतषेचिलीनौं
वनमालकौंउतारतवनमालहोतप्यारी।यहछविनागरनागरियाटैरन
जियसौंठारी।पराजसोरठातितांलविचटजनास्यांरैकुंडराधारूपहैरुडो
यीवकुकांयांजंमकनांचैसीसकेसांरोजूडो।केसरिरंगनीजीसाडीमैंक
लकिबस्यौछेछूडो।दिषिछक्यापियरसिकविहारीरह्यो।धीरधरिऊडो।
१६वृजफागुनंआजमुहायो।आनंदरूपधरिआयो।ऊह्तासहियेनसमावे

दोहा ॥ वृजवासीरहेरंगजरिमोहनकैअनुराग जुवतीजूथसनमुषचलेमुदि
तमनावतफाग ॥ १ ॥ मुदितकैफागमचावैडफपुंजगुंजरितआवैजीनेरंगसौजा
तिनलीहैमनूंकामकीफोजचलीहैसवकरतकुतहलग्वालामधिनायक
नंदकेलाला ॥ २ ॥ दोहा ॥ अधिनायकनंदलालोउतइतराधेसुकुवारिसंगछिपा
करिकैमनौंउडगनसववजनारि ॥ ३ ॥ उडगनसववजनारीउमडीआवैगाव
तगारी ॥ मुखतैकछुघंघटदारेसोहैसुंदरस्यांमनिहारेचलीअछनिअलछ
कटाछैमच्योनेनअतिआछै ॥ ४ ॥ दोहा ॥ नेनपेलआछैमच्योडुंरिसचतुर
विलाररहेजूइतउतरीजिकैंगजरस्यांमरिजवार ॥ ५ ॥ रिजवारस्यांमअरु
गोरीमहामची ॥ ६ ॥ रहारीपिचकारनिदो ॥ ७ ॥ घनसांवनसोऊर
सायो ॥ नयोउडिगुलालअंधियारोविचफलकतलालटिपारो ॥ दोहा ॥ लाल
टिपारोफलकही ॥ ८ ॥ धरिमांजगुलाल ॥ तिहिंसुधधावतजरनमनहरनतनु
वृजवाल ॥ ९ ॥ मनहरनितरुनिवृजवाला ॥ मनुपेलतदांमिनिमाला ॥ इक
सैचतमुक्तादांमै ॥ इकपौतिहैमुषपांनन ॥ इकलेतउगारहिआंनन ॥ दोहा ॥

आंननलेतगारइकाघायलवांननमैनं तजतदोजरसपगे षगेनैनं
विचनैनंनारंगकह्योपरतनहिवैनां दृढहारडोरमनिमाला छुटेछवी
लेवारविसाला। फूटीचुरियांनीवीषुदीसी। वादीमैनकीसैनलुदीसी।
दोहा। लुदीमैनकीसैनसी। थकीपेलिरसफागजीतिलालकौंलैचली
जरीमहाअनुराग। हाअनुरागजरीरंगमांही। दर्दगउरस्यामगलवांही। सो
हैफागपेलिवुनोरीमनमोहनसंगकिसोरी। आयेकांमकेकुंजनिवास।
निसुषदीनोनागरीदासनि॥ वांदणोंहोलीको। प्रथमवीजनैनवयेमुस
कनिअंकुरजागेरीनेहवेलिरहीफूलिकें। जरहोरीरंगसौं। प्रगटहोनल
गियारियावजफागअमलसरसांनो। जूनागरियाउरजेनंदीसुरसुवस
वसोवरसांनो। शवरसांनैनंदगांवमैफागपेलहैगरवारीजीतिरहीवृ
जनागरी। हारेजरवाजरवारी। पेलौहौरंगीलीहोरीरंगसौ। रागकाफ़िल
तफागमुहागजरेअनुरागसौं। दंपतिनित्यकिसोररसिकवडजागसौं। ताल
मृदंगउपंगपल्लवडफवाजही। मुरलीधुनिसुनिअवनमैनमनलाजही। कु

हो ल

३६

किन्तु किन्तु डनि कुंडनि सहचरि गांवही लाउल डैती कै प्रेम छ की डल रांव
अपने अपने प्रेमेल लीये डऊ और तैं रुपे सुरसन मुषक छ कह न मरोर
चपला सी चमकात चऊ दिस जां मिनी धेरि लीये घन स्याम की ये दिन जां मि
रंग नरी पिचकारी छुटत है हे मकी डरि मुरि नरत लै गावत गारी प्रेम की
धेनरी कमोरी जोरी लांवही कुंम कुंम मेलि फुल्ले ल मुरै ल पटांवही लि
क प्रर पशग जोरी नरि नरि सवै उडवत अवीर गुलाल कहत हो हो सवै
ब्रतं फूंम कदै दै नां चत दं पतिला डिले निरघत हसत मुरव मोरि रूप हित व
गई राग परज प्यारी ला डिली व हो रिरंग वा छा यो आजु अचांन क धेरि स
रोरंग निरंग रंगा यो मन जां वन वां वन सौं जुज नरि नरि उर अंतर ला यो
हित अलि रूप अनूप छ वीलो छा कनि छ कयो अपना यो राग धन स
हंदा वन सहज सुहाव नों नवना गरिए एरी नवल नवना गरिए नवना गरि
हनि धांन वनां हां हां अवै टेक होरी बेलन कै मतै नवना गरिए एरी नवल
निवै वे करवांन नवना गरिए एरी नवल ग मांन मना वत प्रथम ही ए नवना

ए। एरीनवंगदोऊकररपरस्परअंनिनवनागरिए। एरीनवंगरेटिमेटिमिलिपेल
हीनवनागरिए। एरीनवंगहसिदीयेहैंडलहनीपोननवनागरिए। एरीनवल
नवलनिकुंजविराजहीनवनागए। एरीनवंगरवित्तनयाकैतीरनवनागरि
ए। एरीनवंगभृगविहंगकुलाहलानवनागरिए। एरीनवंगनवनवजुवतिनि
कीजीरिनवनागरिए। एरीनवंगस्यांमओटकीसांवरीनवनागरिए। एरीनवंग
गोरीकैगोरैगातवनीनवनागरिए। एरीनवंगउमगिचलीचितचोंपसोंनवना
गरिए। एरीनवंगअपनीअपनीगहिघातनवनागरिए। एरीनवंगसवसषीम
नअनुसारिनवनागरिए। एरीनवंगउनसाजिलईसवसौंजनवनागरिए। एरी
नवंगलालरतनमनिकीकुंडीनवनागरिए। एरीनवंगकैसरिकीओजाओ
जनवनागरिए। एरीनवंगकस्तूरीकरप्रसौंनवनागरिए। एरीनवंगसाधिकु
मकुमांआदिवनीनवनागरिए
एरीनवंगघसिगौरामेदजवादिनवनाग
वनागरिए। एरीनवंगसवमिलेहैंसंचिसुरतालनवनाग

नईमतीआवजीनवनागरिएएरीनवः वरकिंनरकठतालनवनागरिएए
रीनवः गावतचेतसुहांवनीनवनागरिएएरीनवः घेलतमेलिमिलिवांहन
वनीरिएएरीनवः वट्टाहैसंवनि संकेतनवनागरिएएरीनः लैलांवनिलामे
कसीनवनागरिएएरीनवः वैनीकटिसौलपदायनवनागरिएएरीनवः अ
धेकुचकंचुकीकसीनवनागरिएएरीनवः अतिआनंदउरनसमाहिनवना
रिएएरीनः आग्यालैसनमुखनईनवनागरिएएरीनवः इनिदीनीहैजुगति
वनायनवनागरिएएरीनवः अरगजापिचकारीचलीनवनागरिएएरीन
वः सवैजरतपरसपरधायनवनागरिएएरीनवः घोवाकेचहलेमचेनव
नागरिएएरीनवः नएअंवरअरुनअवीरनवनागरिएएरीनवः हारि
जीतिनहिसमझिहीनवः एरीनवः अतिमनमगनगंजीरनवः नवनाः फा
गपिलावतफूलसौनवनागरिएएरीनवः देसैननहीसंनकारिनवः एरीन
वः नैनकमलकङ्कलनरेनवः एरीनवः अवमचीहैकटाछिनमारनवः
इकफुकिवैठीपीठिदैनवः एरीनवः इकमांननिकैमुखमोरिनवः एरीनवः

एकमनावतदीनकैनवनागएरीनवःशकपाइनपरंतनिहोरिनवःएरीन-
दिनडलहनिकोइलएवहरीएरीःदिनडलहकोंदेगारिनवःएरीनवःगाव
तसुषदैसुषलीयोनवःएरीनवःमुखचुंवतनरिअंकवारिनवःएरीनवः
सौधेमेंसौधासवेनवःएरीःकोंनपिछोंनैकाहिनवःएरीनवःद्वैसदैपेमर
सरंगरंगीनवःएरीःएरहेहैरसिकसुषचाहिनवःएरीनवःमेरोकुंजविहारी
कौतुकीनवःएरीनवःयहकौतुकरहेहैलुजायनवःएरीनवःमन्ननएसम
धुरीनवःएरीनवःगरसपीवतसुषदअघायनवःएरीनवःहोरीपेलतरंगर
ह्योनवःएरीनवःसवगोरीलईहैबुलायनवनागरिएरीनवःकोंगोरीके
सांवरीनवःएरीनवःस्यामहैगोरीसवेनवःएरीनवःभोरीकेतनम
नस्यामनवःएरीःनिरखिवदनतनमनमयेनवःएरीनवःयोसफलकी
योसवकोंमनवनागरिएएरीनवःवातनिरहसिद्विहसिवदीनवनाग
रीनवःसवइहिविधिवेलतफागनवःएरीनवःनगरिए
कोंनकीरसरीतिनवनागरिएएरीनवःअगटकी॥३॥

गरीः एनवः सरदीसहेलीसहचरीनवनागरिए एरीनवः श्रीहरिवासीरसरसि
नवनागरिए एरीनवः विपुलविहारनिवासकौनवनागरिए एरीनवः हसि
रीजिदईस्यावासिनवनागरिए एरीनवनागरिए राग सारंग वृजराजकुं
लीः वरवरखेलहिहोरीहैरीमुनहिउफधुंकार वृजिवौरिपैसीवृखजांनकीपौन
मांचीहैपिचकारिनमार ससिवदनीमृगलोचनीनारीसवतनअतिसुकुवा
तिनमधि श्रीवृखजांनकिसोरीराजतपरमसंस्तलनुदार नवनवचीरसुधा
रिनवलतनसोनितपरमसुदार नईनईगतिन एनेदपरस्परगावतमंगल
चर आंविआंजिमुखमांडिलालकोकीनोंसरससिंगार होहोहोहोहो
हिटेरतवाछोहैधेमअपार कीरतितिलककीयोमोहनकैवज्जरतननि
रिधार जैश्रीकमलनैनहितखेलिचलेहरुपहरेंमीनरसजालपार
सारंग॥

अथ कूलमंडलीनिकेपदारागसारंग। वैठे लाल कूलनिकेवै वारे। कुवी
कवकुलमालती चंपोके तु किनवल निवारि। जाझुही केवरो कुंजो
राय वैलमहकारे। मंदसमीरकीरपिकरूजितमधुपकरतुंकारे। मंदस
मीरकीरपिकरूजितमधु। राधारवनरंगनरि काउतनांचत मोर अरव
रो। कुंजनदास गिरधर छविउपरकोटिकमनमथ वारे। शारागसारंग
चलो किनदेखन कुंजकुटी सुंदर स्याममदनमोहन जहां मनमथ फौज।
लुटी। सुरतिसुरमेलिरतन सरवी की मुक्ता लरदूरी जरज तेज कंचु किचु
रुकुट नई कटि पटग्रंथि छुटी। चतुरसिरोम निरसिक सुरनंद सुता ली
नी अंधर छुटी परमानंद गवाल निगोविंद संभजी की जोर जुटी। शरणा ला
गा वैठे लाल निवड कुंज स्थली सकल सिंगार की यो स्मरुं वैठे डरवनां
नलली। चंदन लेप की येत नराजीत सोजित कुंदरू ली पागुला क
नरि नकुटी परगुंजत फिरत अली र विविध को ली डित मिलि दंग
ति आनंद नम गिचली गोविंद प्रभु वलिक लिय हजोनी नि

रूलमं

१ राग सारंग ॥ वैठे लाल का लिंड़ी के फूल सघन कुंज चऊं दिस फूले
ललित लता के मूल ॥ २ कुंद माल श्री कंवनी विच विवि धिनां तिके प
रुचिर प्रवाह वज्र तय मुनां मध्य त रुत माल रहे फूल ॥ ३ नां चत गा वत
वजा वत सकल सरवाली ये संग गोविंद प्रभु की छवि निरखति होत
ने न जंग ॥ ४ राग सारंग ॥ फूल न की मंडली मनोहर वैठे श्री गोवर्द्धन ध
जा ॥ ५ जुही कुंद के तगी राय वे लिसो सरस संवारी ॥ ६ चंपक व कुल गुलाब
वारो विवि धि जां तिकि निचित्र सारी वैठी निकट रसिक निराधा फूल
पहरे तन सारी वरन वरन फूल न के भूखन फूल न पागवनी अति न
गोविंद प्रभु फूले अति सो जित निरषि फूली हर खजां न डलारी ॥ ७ रा
रंग ॥ चलि सरखी कुंज विगुपाल जहां तेरी सो मदन मोहन पै चलिले जां उत
॥ ८ आछे कुसुम मंद मलयानल और कदम की छांह तहां निवास की यो न
दन धित तेरे तन मां हि ॥ ९ ऐसी वात सुनत वृंत सुंदरितो हिर स्यौ को न
पर मां नंद स्वामी के संग मजा गवडे ते पावे ॥ १० राग सारंग ॥ अति विचित्र

और

लनिकीचौरां डी। वैवैतहारसिकपियप्यारी। राश्वेलिमालतीमधुरीचंप
 वकुलगुलावनिवारि। जाझुहीकेवरोकुंजोकेतुकिसौरनपरमसुखका
 रि। पाउरऔरसेवती। मिलिबौलसरीरुचिरसवारी। नवरसरंगपर
 रउपजतवनिहेसंगराधासंकुवारी। चत्रनुजप्रभुकुसमसेजपरिकरतवि
 लासंदोऊपियप्यारी। शरागसारंग। कुंजमहलमहललनारसजरैवैवैसं
 गपियप्यारी। रुचिररवनिक्वदनपरमृगमदतिलकसवारी। एधन
 चंचिकुरकुसुमनानाविधग्रथितमृडलकरचपलचंपकवकुलगु
 वारि। गोविंदपियप्रभेरसवसकरिलीयेमदनमोहनगिरधारी। रास
 डी। फूलनिकेमहलफूलनिकीसज्जाफूलेकुंजविहारी। फूलीराधा
 फूलेदंपतिअंगमगनफूलेफूलेगावततांनन्यारीन्यारी। एफूलेफूले
 लनिलीनेंफूलेआनंदहेदोऊसुखकारी। हरिनारायनस्यामदासकेप्र
 भप्रियातिनपरवारोंफूलेचंपकगुलावनिवारी। रागदोडी। वैवैलाल
 निकुंजनवनारजनीरुचिरमालिकामुकलितत्रिविधि न ५

कूलमः

२

कांमकेलिमनमोहनमदनवन। वृथागेहरकरतीकिसोरिकारनकवन
चपलचलितनकीसुधिविसरिसुनतप्रवन। हितहरिवंसमिलेरसलंप
धिकारवन। इतिः॥ अथ कूलमं लीपपदलिखते। फूलतकूलनईअति
निर्मिततरलहिडोलविटपतरुहंदाविपुनविहारी। सकलसषीअतिमुदि
ईवऊरंगपहरेतनसारी। नृकुटीनंगलावंन्यअंगडतिकोटिमदन। विन
अतिसैगौरराधेग्रीवामै। स्यामभुजाछविन्यारी। दामिनिअचलविराजित
नौ। स्यामघटाछविकारी। वरननकहाकीजियेप्रेमको। रुचिदायकजहं
री। श्रीकूलदासहितयहसुषदेष्टतप्रांसंपदावारी। रागविहम॥ कूल
लपियस्यामां दोऊपरमउदारी। कूलेश्रीराधावद्वनफूलतपदभुरव
संजारी। सिरसेहरोफव्यो। कूलनको। वरनवरनरंगधारी। कूलनिकेअ
खनअंगअंग। नूषितमृडभुजचारी। श्रीहंदावनकूल्योनानाविधिदु
मप्रतिछविन्यारी। सरदवसंतसदाहीतहांजहांराधारवनविहारी। निर
निरखिफूलतललितादिकचत्रभुजप्रभुपरिवारी। कूलेसुरमुनिवरर

कुसुमितदेहदसाजुविसारी। शक्तिरुलडोलकेपदा। अथरुलरचनाकेपदलिप्य
ते। रागकेदारो। रुलनिकुंजगुलावकीवनीकवनीअतिसोहै। रुलनिसौवै
प्रियालालतहांछविजोहै। रुलचंमेलीपीतकेनूषननूषितअंगसीसचं
काफुकिरहीपञ्चमालतीसंग। शवसनअरगजारंगरंगेतनसुषप्रनाप्र
सीमहकनिसरससुगंधकीलितनिलतनिआजासी। पांननरेमुखचंद्रमा
मृडमृडहसनिसुहाई। किरनिसुं प्रकासीविपुनमेंअलिउडगनमेंनाईधरां
जमायोरायसोसाजसमाजलीये। सवसषीमनअनुसारितीरिऊततनमन
दीये। पापञ्चपांजलिकरिवारनै। निर्रितितुननप्रवीनलालरूपहितंसहच
निकटमुनावतवीना। दारागकेदारो। एरुलरुलेरीटुंदावननवनिकुंजमें
रमेंटेकाजुगलकुंनवलमुखकमलविराजतगौरवरनसांवरेतनासरसपु
लिनसेवतसज्पासषीउपजतकोटिमदतमन। एरुलतरुलतथेम
रुनस्वासमिलेपवनमहामाधुरीपीवतनैननरिसहजसनेहीसुषसदन
विहारीदासरसिकनिकीजीवनिसंततिसुषधनीधन।

फूलमंग

३

फूले फूले फिरत स्यां मां स्यां मरुली कुंजन मां ही फूली कुंजन मां ही फूल्ये
रहार हमेल फूली फूली करत के लिहैत घन दामि निज्यां लसत दोऊ की ये
ही फूली ज्यों नज गम गात ता में फूली बदन कांति कुमद कली फूली अल
मन जल साही ॥ कहै जग वां न हित रां मराय प्रभु देखि फूल्यो छंदावन पड
टिहोत जहां जहां चलि जां ही ॥ पाराव के दोरो ॥ फूलनिकी वैनी गुही फूलनि
अंगिया फूलनिकी सारी मां नौं फूली फूलवारी ॥ फूलनिकी डलरी हमेल
फूलनिके फूलनिकी चौकी चारु फूलन के वाजूबंध और गजरारी फूल
के तरौं नां कुंडल और फूलनिके फूलनिकी किंकनी सरस संवारी ॥ फूल
ल में फूली है राधिका प्यारी ॥ फूल फूले नंद दास लेत वलिहारी ॥ पाराव के
फूली फूली डोलैं कुंज सदन में मदन मोहन रस मां ती ॥ जिन वसि की ये विह
हार निमंद मंद मुसिकांती ॥ कि सोर कि सोरी वांहां जोरी लटकत चलत
ती लडकाती ॥ हरि नारायन स्यां मदास के प्रभु परसुख वरषत अून जाती
॥ के दोरो ॥ देखो कुंज की परछां ही ॥ फूल ऊरो पा फूल चंदो वा फूल की पि

[illegible]

सर
ध
रुलनिकेरुलनईहियेंलपिरुलीवनराईहै। नागरिया मिलिडुंरुलनिस
लकरीजुजधरिअंसरुलिरहेसुषदाईहै। रागवित्गरोइकताल। रुलन
केवेषनववसनवनायलीयेरुलनिकीकपारीसीकुंवरिअलवेलीहै। रुल
निकेअषनवसननांतिरुलनिकेरुलनरीठविनरीहरीयेनवेलीहै। अधर
धुरमकरंदलैनरुलनिकौरुलसौअलिंदस्यांमजुनिसकेलीहै। रुलीहैजु
ईत्तमैंरुलपंकर्वनिनकीनिरपैअकेलीकेलीनागरसहेलीहै। तालच
का। रागवित्गरो। रुलमहलमैंरुलीजौंरुहैजगमगी। तामैंरुलेकरैंकेलि
मांस्यांमसुषजेलि। रुलीनिमरगजीवासरगमगी। रुलसरअरसांनैंरुलरंग
येसोहेनागरियामोहेमनरीऊनिडगमगी। रुलनिकीसैंनी
रागपदज। तिताल। सषीअजुनिरपिसुषपुंजरीतहांमैंनगांनअतिगुंजरीदंय
हियरुलनिलीयेंवजुलनिसौंरुलीनवकुंजरी। रुलनिकीसैंनीपरदैंनीगर
हीतनरुलनिकेसोहतसिंगाररी। रुलनिकीरुहीहलिवरपेंलताहैहोततैसी
लनिकीवहतवयाररी। रुलीहैजुन्हाईफिरीमदनउहाईहोइरहेआरतिग
धनस्यांमगातररी। रुलनिसफलकरीनागरियाअजुहोअपरमसलोनीप
गजरी।

॥ अथ श्री आचार्य जी के उच्चवा राग जै तं ॥ जै जै जै श्री वल्लभ
 पदारथ निन के हाथ ॥ एक नरु मारग निन प्रगट कीयो नाम
 उधत्यो ॥ सक्त मत्तर घंड निरूपे वेद प्रेम स्नेह को जौ नैनै दश
 मर्धनु जदंड माया वाद कीयो मतर बंड ॥ परम पुरुष पुरुषो
 जन करत प्रसंसी ॥ आ जा के नाम करन गुन रूप अनंत निर्मल
 लिसंता ॥ सुंदर स्याम कमल दल लोचन कृपा कटाक्ष नरु
 काम नाशर नशरन काम ॥ अहर्नि सज पत तुम्हारे नामा जा
 रन को याद सगुणाल जने सुष होया ॥ राग नै हरे लीन वन
 ज विहारी वल्लभ जतन बन मोरे ॥ अंग अंग विपनि छिपनि ध
 फल फल प्रति दौरे ॥ करत प्रवेस विरंज कही सैत नित ल
 पद्य ना जम धुरे स विचार तल सम ए जट सुत ॥ ओरे पारा न जै

१
॥ चार्य ॥ अघांजं ॥ श्रीवहन्ननतजिअनतनजाजं चरनसरोजमूलघरछांज
आनेंदरूपानसमांज ॥ ५ ॥ श्रीवहन्ननकोजो मनजांज ॥ जसुमतिसुतको
लाउलडाजं ॥ ६ ॥ श्रीवहन्ननकेसरणरहांज ॥ मुकतिमहासुखहो विसरां
श्रीवहन्ननकोदासकहांज ॥ रसिकसदायहनेमनिबार्हं ॥ ७ ॥ रागजैहं
वहन्ननवरश्रीविठलसाथे ॥ निजजनपरकरतकृपाधरतहांसमर्थे ॥ १ ॥ दोस
सवैहरिकरतनक्तिजावहियेधरतकाजबूवेकरतसदागावतगुनगाथे
काहेकोदेहदमतसाधनकरिमूरखतनविद्यमांनआनेंदतजिगेहतवं
उपाथे ॥ २ ॥ रसिकवरणसरणसदारेहतहैवडजागिजनअपनेकरिगो
लपतिजरतसनेहवाथे ॥ असरनसरननक्तवच्छलकरुणानिधानकर
कृपाधरतहाथमांथे ॥ ३ ॥ रागदेवगंधार ॥ आजवधाईमंगलचारगावत
गीतजुवतिजननवसतसाजसिंगार ॥ १ ॥ मंगलकनककलसमंगलवं
धत ॥ २ ॥ वंदनवारमंगलमोतिनचौकपुरायेपंचसष्टगृहघार ॥ ३ ॥ घर
रमंगलमहामोहिहो ॥ श्रीवहन्ननअवतारहरजीवनप्रनुयज्ञपुर

श्रीलक्ष्मननृपकुमार। शारागदेवगंधार। नयोजगतपरजैजैकार। प्रगटन
 ये श्रीवद्वनपुरसोत्तमवदन। अगनि। अवतार। यधनिमाधोमासएकादसी।
 कृष्णपक्षगुरवार। श्रीमुखवचनकलेवरसुंदरधरेजगमोहनमार। श्री
 जागतात्मकअंगजेप्रगटकरत। अवतार। उदनिदेववजावतगावतसुरव
 धूमंगलवार। शुभिप्रकासकरैंगेनुवपरजनहितजगउपकार। आनंदउ
 मगलोकत्रयजपरजनगिरधरवलिहार। धारागदेवगंधार। नृत्तलमहा
 महेच्छोआजा। श्रीलक्ष्मनगृहप्रगटन। एहै श्रीवद्वनमहाराजा। आजादई
 दयाकरि श्रीहरिपुष्टिप्रगटवेकाजा। कलिमेंजनमउछास्योततरिबिनरूउ

छाडिलोकअपवादे। धरधरमंगलवजतवधाईस
 प्रेमकीपाजारसिक

श्रीलक्ष्मणगृहप्रगटन। एहै श्रीवद्वनमुखदाई

१मगनन। एनगनतवतारुएतीनलोकपरगाजा। ४२३

वार्थ

गसकलनकनकेपुष्टि नरूपगदाईजसुमतिग्रहनिजसुखदेवेकोंसुखमूरति
प्रगदाई॥ अतिसुंदरविधुवदनविलोकितसकललोकोनरहाई कहतसुन
तसवहिनसोंरुलेआनंदउरनसमाई॥ श्रीजागवतअर्थप्रगटकरनकोंजा
गनदईहैदिरवाईनईनकवऊकैहैऐसीअवनिधिपाई॥ सदाविराजोसीस
हमारेयहमूरतिमनजाईचरनरेनसेवककोसेवकरसिकसदावलिजाई॥
रामरामकलीजजिकमलतेमृडनाथचरणेंदेसकालातितअंसीअंसआगर
नागरश्रीवद्वनएकरसनं॥ रजितमायावादसकलदिसदिसकरिभूतलस्वम
तकरतविस्तारन॥ षोडसकलामांनंप्रगटविधुमंडलअवतमधुओवऊताप
हरनं॥ अंगअंगरससिंधुकरनपुटनैनपुटसादरजेरसघूंटरनं॥ कहैसु
नदासवलिजांऊयैजोकिजाहिपरसतगयोज्ञातवरनं॥ राजविदेसमातउ
विषातउविश्रीवद्वननिजनामपाहिजनसुकज्योंपदावै॥ यहरसिकसेतअ
रनहिआवैरंगउपरमानोंनवरंगचदावै॥ धीरवलवीरविनुओरनांहिही
येकचितआवर्णपायनलुटावै॥ कहेसगुणदासहोंवलिजांऊताकीनाथ

हिनाथ कहिएसी इदावै शराग विलास। जपत पतीरथ चरत्ने मधर्म किर्म
 श्रीवहन्न प्रजु कोना मा सुमरो मनर सना है अर्निसर दो। उरिद कटे सवरे स
 वकां मा ॥ देव से ज सुदा सुत करि लीला सहित सदा सुख धाम रसिक कहै नि
 करो नित साधन तजि न जो आगे जं मार राग सारं गा आं वन सुदि एक
 धराति। प्रगटे हे हरि क रूपा करि साधन विनु जीव सवन धारो। आ ज्ञा दर्श
 वहन्न को ब्रह्म संवंध कि सवहिन के जीव देह पंच दो सनि वारो से वा कर
 वाय अ अपनी उन के कर जो जन करि अधरामृत जूठि दे के परम फल विचा
 र सिक वरन सरन आसर हत है नि स दिन पास दा सनि के दा स ते ऊजल नि
 रो शराग सारं गा श्री हंदा वन विधु प्रगटे न ए श्री हन्न म न नटगे ह अ
 तिको मल पुटै ल कित तन प्ररित रसा वधिलीला निज जन परवर रवे नीर व
 पति पद ने हा ॥ अति नांग द श्रुति विचार विसद करि न पंडित वर को टिम
 न सुंदर वर आ ए कि ज दे हा यज्ञ पुर स क विजन कहे व वार वार स्तुति करे
 से गो विंद जिय मै व सो श्री गो कुल पति आ ए हा शराग

सेमरं वै साखे श्रीवद्वन्नमहरिजनमलिया। श्रीवैलक्ष्मननंदनत्रिभुवनवं
ननक्तुमारगजिनप्रगटकिया। १८० प्रगटकीयाजिनिनक्तुमारगवध्वज
वजीवछिडाईया। अनेदांननिसानमहलाचितजिनहरिकोंदिया। १८१ गोप
लदासअनंतलीलाप्रगटश्रीवद्वन्नमजया। १८२ दासाजुगताऔरनइजासां
चात्रिभुवनराईविरहनिवारनमज्जलतारनदेखतउपजिचाई। १८३ देव
देखतहरिकोंचाहउपजीसकलडखनसावईजाकोनांमलीयेऊरैपाति
करजोरेनिगमपुकारही। १८४ पतितपावनविरदजाकोसोवमाधोकहिय
गोपालदासअनंतलीलाप्रगटश्रीवद्वन्नमजया। १८५ रागविलावल। एवजवा
सियांगोपगुवालिया। एगोकुलकेलोगारेहां। एकनकीडाविहसिमुख
बीडांहरिसेवारसजोगारेहां। देकरसजोगऔरसंजोगमिलियां। हियेअं
दरिरमिरया। तबालचरित्रअनंतकीजावाहिमाधोगुनकह्यो। तेरीनल
मूरतिदेखिसूरतिराधिकाअंदरिगईगोपालदासअनंतलीलाप्रगटश्री
वद्वन्नमजया। १८६ रागविलावल। एनब्रह्मसनातनमाधोकलिकेसोअवता

जिनजै सो देख्यो तिन तै सो पेरव्यो नरूपानं आधार श्रीवद्वन नहीये अंतरा
खिये राम कृष्ण मुकुंद माधो सदा जिम्मा जाखिये गोपी नाथ अनाथ बंधवे
दसंक सणमया गोपाल दास अनंत लीला प्रगट श्रीवद्वन नया धारा ग
धनसरी आनंद मय श्री लछिमन नंद कुमार अनुव पर प्रगट न ए सरन पु
रु सो तम जित् कीये उधारा एकार न साधन इहो इकै कीये जु अंगीकार
कृष्ण दास प्रभु श्री हरि की लीला जानै जान न हारा शरा ग धनसरी जा
गन नूतल वद्वन आये करि कसना लछिमन घर कलि मै दृज पति प्रग
ट कराये। ए चिंता तजौ न जौ इन के पद महा पदारथ पां उं दास जनन के
सकल मनोरथ सरैंगे मन जाये। गसाधन करि जिन देह डरवाये ए फल
रूप वताएर हो सरन परिस वड करि मन अव आनंद वधाए। तन म
न धन नौ छावरि इन परिकरि निन देऊ जडा एर सि कसदा वड जागते ई
न श्रीवद्वन गुन गाए धारा ग धनसरी श्रीवद्वन अपनो दास दीन जे
निकै जिन विसारो कसना करि वज्र एक मेरी दिस निहारा पहमा

चा

जागन
रुलिमै
रनसाई
वेहो

अपराधदोसकोईजिनविचारो॥ कियोजुअंगीकारसोईचितधारो॥ २॥ चरन
कमलवांभितुमछांडिजिनविसारो॥ कहबाएतेरेअवसुनेकोपुकारे॥ ३॥ रा
ग आसावरी॥ श्रीतिबंधीश्रीवद्वनपदसोंऔरनमनमेंआवैहो॥ पुष्टिपथं
नषट्दरसननिकेजोकोऊकछूवतावेहो॥ ४॥ जवतेअंगीकारकस्योहैमेरे
तवतेकछुनसुहावेहो॥ पायोमहारसकोनमूढमतिजहांतहांचितनटक
वेहो॥ नंदनंदनकोनिकोनिजुसेवकहदकरिवांहगहावेहो॥ ५॥ जिनको
ऊकरोनूलिमनसंसैनिश्चैकरिश्रुतिगावैहो॥ रसिकसदाफलरूपजांनिले
उछंगजलरावेहो॥ ६॥ राग आसावरी॥ श्रीवद्वनसुवनसुजानश्रीवीठलन
थरहो॥ जैसेसरनसंतगहेमेरेहाथ॥ ७॥ पथ्योआरतहोंपुकारैजवसमुझकेपा
थरसिकवीनतीकरेराखोचरनकमलसना॥ ८॥ आषातीजकेपदलि
प्यते॥ राग सारंग॥ अक्षेत्रतियाअक्षलीलानवरंगगिरधरपहरेचंदनवां
मजागहरवजांनमंदनीविचविचचित्रदेतनववंदन॥ ९॥ तनसुखछिई
जारवनिकरिपीतउपरनांविरहनिकंदन॥ उपरउदारवनमालमल्लि

सुनगपागजुवतिमनफंदननरवसिरवरतनअलंकृतनूरवनअच
हृजमारगजनरेजनकलदासपुनुरसिकमुकटमनिलोचनचपललजा
जनअरागसारंगअजुवनेनंदनंदनरीनवचंदनकोतनलेपकिये॥
तामैंचित्रवनेकेसरकेराजतहेसखिसुनगहिये॥तनसुखकोकटिवन्यो
पिछोरावादेहेकरकमललियोउरवनमालपीतउपरनांअनमैंनसरसे
बियो॥करनरुलप्रतिविंवकपोलनमृगमदतिलकलिलादियेचत्र
पनुगिरधरनलालसंगटेटीपागरहिनृकटिछियोअरागसारंगदेख
सरवीगोविंदकैनवचंदनसोजितसांवरअंगनानाजांतिविचित्रकीयेता
मैंकेसरअधिकसुगंधंअंगारकंवमालपियरोऊपरनांवनीझारपचरं
गार्काननकरनरुलनृकुटीगतिमोहितकोटिअनंग॥मृगमदतिलक
कमलदललोचनसीसपागअधरंगचत्रजुजपनुगिरधरनसंगछिनुछि
छविकेउततरंगअरागसारंगकोन्हमनोहरमीठेबोलमोहनमर
तिकवदेरवोतोसरसरजचंचलडोलास्पांसुनगतनच

ली रेपी। तनिचोल। हीरालालकंठमनिमालानंदलीयेवज्जमोल। २ परमानं
स्वामीसुखसागरवालदसागुनलोलखेलतफिरतसकैवीथनिमैंगवाल
येसंगवोल। ३ राग सारंग। आछोलालउपरनांजीनों। तनसुखस्वातिसुदे
अंगपरवज्जवअरगजाजीनों। ४ अतिसुगंधसितलऔरचंदनसुंदरचरण
कीनीरहीधसिनृऊटीपरपागडपेचीकोटिमदनछविछीनी। ५ सूथनव
जरकसीसोजितगतिगयंदकीलीनी परमानंदप्रचुचउरसिरोमनिव्रजव
नितारतिदीनी। ६ राग नटा। वागोवन्योंवांवनचंदनकोचंपकलीकीपागवि
राजतजालतिलकवंदनको। ७ सूथनिकीछविकहतनआवैपांतिकांति
दनको परमानंदआनंदतहांमुखनिरखतनंदनंदनको। ८ राग सारंग
खिरीदेखिरसिकनंदनंदन। लटपटीपागसुजगआधेसिररहिहैंजुरकीक
छुवंदन। ९ मृगमदतिलकुरुचिरवनमालातनचरचितनवचंदनकोचि
तवनचारुकमलदललोचनजुवतीजनमनफंदनको। १० कवजक
हजवजावततारीसारंगकरमुरलीसुरमंदनचत्रजुजप्रनुसुखराखि

कलत्रं गिरिधरविहरनिकंदन। नृसिंघजीकेपदसारंग। होनरहरप्रगट
 जणखंनफारिकिलकारीजस्ताहितहरिनकस्यवित्तएराजाजेदेवतेजतेडर
 बेश्रीदुब्बाडिश्ये। गिरिधावर्तपुल्हादजरूडटहरिजूकेसरनगएरागसारंग
 प्रजतुमजनकौप्रनप्रतिपास्यौ। कहाआहियाहिमेहेयरसुनतसजारखंनफा
 स्यौ। थलागिरस्यौकछुनखनमेलसोजवतुमउदरविदास्यौ। कहतनयेव
 हगयो कहाकैजोअवहीमेंमास्यौ। शकमलाडरपिरहीविधिजाजोअरूपनज
 तविचास्यौ। महाविकरालनैनरसरतेतेजनजातस्यौ। प्रल्हादहिचुंवत
 औरचाटतसंघतवदननिहास्यौ। स्वरदासप्रजुगोवर्धनधरननरहरितवव
 पुधास्यौ। धारागसारंग। अपनोजनप्रल्हादजवास्यौ। खंनविचतेप्रगटेन
 रहरहिरनकस्यपजरनखनिविदास्यौ। एवरखतकुसमसवटजेनेमकन
 सुरनमिलिकैकौतिकनिहास्यौ। कमलाहरिकैनिक्टनआनेछियेद
 पकवरूनहिधास्यौ। शदीनोराजनरूपनेकौदस्तकननममक
 धास्यौ। स्वरदासवलिजायदरसकीजरूविरोधदईनिस्यौ।

तौ लौं होवै कुंवन जै हूं सुनि प्रल्हाद प्रतंग्गा मेरी तौ लौं तौ सिर सैं छत्यन
धरि हों ॥ १ ॥ मन क्रम वचन जां निजिय अपने जहि जहि जां नित हित हि वै हो ॥
निगुण सगुण हेरि सव देख्यो तो सो न कृक हूं न ही पै हो ॥ २ ॥ मो देखत मेरो दा
स डखित जयो यह कलंक अवही जु चुके हो ॥ ऊदै कठिन पारखान है मेरो अ
व हो दीन दया ल कहै हो ॥ ३ ॥ गहित नु हरि न कस्य पको फास्यो उदर फारि न
खरु धिर वहै हो ॥ यह सुनि वात तात अवसुर या कृत को फल तुरत चुके हो ॥
धरा गसारंग ॥ जाकों तुम अंगीकार कीयो है ॥ तिन के कोटि विघन हरि
रे अजै प्रताप दियो है ॥ खड्ग सनमान दियो प्रल्हादे सव हि नि संक जियो ॥ नि
कसे खंन फारि कै नर हरि आपुन राखिलीयो ॥ २ ॥ उर वासा अमरी स संताप्यो
सो फुनिसर न गयो ॥ प्रतंग्गाराषी मदन मोहन उन ही पै पठ्यो ॥ ३ ॥ मृत्यु कन
ये हरि सवै जिवाये दृष्ट अमृत पीयो ॥ परमानंद न कृक वच्छल केशो उषमां कौ
न वियो ॥ ४ ॥ इति ॥ अथ स्तोत्रयात्रा के पद ॥ राग दोटी करत गुपाल जमुना
जल कीडा ॥ सुरनर असुर थकित जए देखत नूलि गई तन मन जात्रीडा

५४ गमदमलयकुमकुमांकेसरिअगरकप्रवासवज्रतनुरकनिकुचचुजग
 गगननिनगननंदनंदनकोमलपानिपरस्परछिरकनि॥२॥निर्मलसरदकाल
 निजसोनाकृतवरखतस्वातिहृंदजलमोती॥परमानंदकनकछविगोपीमर
 कतमविगोविंदतनजोती॥३॥रागदोडी॥ज्येष्ठसुदिप्रत्येज्येष्ठानक्षत्रकरत
 स्नानगोवर्धनधारी॥सीतलजलहाटकघटनरिनरिरजनीतैंअधिवासत
 सुरवकारी॥४॥विविधिसुगंधपङ्कपकीमालातुलसीदललेसरससवारि॥
 करलेसंखन्हवावतिहरिकोश्रीवीठलप्रभुकीवलिहारी॥५॥तैसेईनिगम
 पढतहिजआगैतैसीयोगांनकरतब्रजनारी॥जैसेंशङ्खचक्रंदिसकैरहेइहि
 विधिसुरववरखतगिरधारी॥६॥करसिंगारपरमरुचिकारी॥सीतलजोग
 धरतनरिधारीदेवीराआरतीउतारतगोविंदतनमनधनवलिहारी॥७॥रा
 गदोडी॥गोविंदछिरकतछीटेअनूप॥इतवरखानंदनीराजतउतधन

जलवसनसो

नः

देदं सरखलापेलि गोविंदपिय आनंदसिंधुमें रही मगन मन जेलि ॥ ३ ॥ अथ
रथ यात्रा के पद लिखते ॥ राग नट ॥ मैया हो रथ चढ़ि जेलों गो घर घर ते वै संग
खेलन को गोप सरवानिवो ॥ मोही गदाई देखि अति सुंदर सगरो साजवनाई क
र सिंगार ताऊ पर मो कूं राधा संग है वै वाई ॥ घर घर प्रति हैं जै हैं खेलन सं
गलै हैं ब्रजवाल मेवा वज्र तम गाय और दे फल अति वडेर साल ॥ ३ ॥ सुनि
कैं वचन सुनत नंदरां नी ॥ फूली अंगन मात सब विधिस जी हरि रथ वै गारे
देखि रसिक बलि जात ॥ राग नट ॥ तुम हू लै रथ वै विरामैया ॥ उत ही लै रथ
की और वै ठी है राधा इत की और बल जैया ॥ गोप सरवा सब संग चलेंगे
और गां देंगे गीत मेरे रथ की सो जा देखत सुख पां देंगे मीत ॥ ब्रज जन न
ब्रज न ब्रज प्रतिवाटी देखन को मेरी गाडी ॥ आरती ले कैं उतारि है मो पर कै
है मारग आडी ॥ ३ ॥ सुनत वचन आनंद सिंधु में मगन नई ज सुमति माई रसि
क मनो रथ परण गोविंद प्रभु वै कुं वत जि ब्रज आई ॥ राग नट ॥ रथ चढ़ि
चलत ज सो दा अंगन विविध सिंगार सकल अंग सो नित मोहत कोटि अ

नंग॥ अवा ललीला जाव जनावत किल किह सत नंदनं दनगरे विराजत हार
 कुसम केवल लिखित चोवाचंदन॥ अपनें अपनें गृह पदयवत सदमिलिह
 जजुवती जनाहर खित अति अरपित सरवसु अरुवारति हैतन मन धन॥ ३॥
 सव रजदै सुरव आवत घर कोंकरत आरती तत धिनारसिक सदा हरिकी यह
 लीलावसौ हमारे ईमन॥ राग मलार। देरवो माई रथ वैठे गिरधारी। वांम न
 गराधिका विराजत पहरिक संजी सारी॥ तैसे ईधन उनत चंडिस ते गरजत
 हे॥ तिजारी तैसे ईदा डर मोर करतर वितै सैये नू महरियारी॥ शताल परवाव
 जवें निवांसुरी वाजत परम सुहाए॥ परमानंद दास संग विहरत गोप सरवा
 संग लीये॥ राग मलार। आज माई रथ वैठे गिरधारी। वांम नागवर वजांन
 नंदनी पहरें कसंजी सारी॥ तैसे ईधन उनत चंडिस ते गरजत हे अति
 जारी तैसे ईदा डर करतर तैसिये नू महरियारी॥ सीतल मंदवहत मल
 यानल लागत है सुरवकारी॥ नंदनं दन कीया चानिक परगो विंद जनव
 लिहारी॥ राग मलार। तुम देरवो माई रथ वैठे नंदलाल अति

रेपटजीनौंउरसोहैवनमाल। सुंदररथमेंनिजदितमनोहरसुंदरतुरंगचल
तधरणिपररह्योघोषैसवगाज। शतालपरवावजवीनिवांसुरीबाजतपरमरस
ल। गोविंदप्रभुपियपैलैडारतविविधकुसुमवृजवाल। ३। राग सारंग राथच
दिआवनआजुनईअलिनमनोरंथपंथमेंलालनसोंलउकाई। आईप्यारी
हयवागलईएकहीआरडहंचरननकीकुलवनिमेंकुलईवह्ननरसिक।
छरीफेरतहसिहेरनिमतिजुलई। राग सारंग राथपरिसोहतहैदोऊवीरदे
खनछविजुवतीजुरिआईसांवलगौरसरीरचितवतहीमनहरेसवनकेको
ऊधरैनधीर। लषमीदासहितनंदलाडिलोमेटनकांमनपीर। १। राग सारंग गं
राग मल्लरदेखोमाईरथवैवेगोपाल। अतिपवित्रपहरेंपटजीनौंउरसोहतवनमा
ल। १। सुंदररथमनिखचितमनोहरसुंदरहैसवसाज। चंचलतुरंगचलतधरनीप
रिरह्योघोरवसवगाज। शतालपरवावजवीनिवांसुरी
दप्रभुपरलैलैडारतविविधकुसुमवृजवाल। ३। राग मल्लरदेखोमाईहरिज
केरथकीसोजा। शतसमैमानौंप्रगटनयोरविनिरखिनैनमनलोना। १।

मयजटितरथसाजसहितसवाध्वजाचमररचिसोना। मदनमोहनपियमध्यविरा
जतमनिषजनमकीसोना। रचंचलतरंगचलतधरनिपरिकहाकहोंयहओना। अं
नंदसिंधुमांनोंमकरकीउतमदनमुचिततनओना। थयहविविधनीउजिनीथ
निमहियादेविसकलअंनंद। गोविंदअनुपियसदावसे। जियहंदावनकेचंद।
अरागमलारा। जैजैजगन्नाथहरिदेवा। रथवैठेअनुअधिकविराजतकरतन
रुसेवा। उंह्यामहादेवइंदिकसनकादिक। नुरिआयेअपनीअपनीनेरसवने
हरषितमंगलगाये। थधुजापताकाछत्रवरमनिखोउसचक्रवनाये। असा
दसुदिहितीयापुष्पनिजुतअसुदितअस्वलगाये। अगारदितदिद्रावतंदरि
परियहिविधिरथहिवलाये। सूरदासगोवर्द्धनधारीनगरउडीसाआये। ॥ २ ॥

अथ दांनलीला लिख्यते राग विलावत ॥ तुम नंदमहरिकेलाल मोहन जान
दे ॥ श्रीगोवर्धनसिखरते मोहनदीनीटेरि अतितरंगसौ कहत हैं सो ग्वाल निरा
खो घेरि ॥ ग्वाल निघेरी नार है ग्वाल रहै सवहारि अहो गिरधारी दोरियो सो क
ह्यो न मानै ग्वारि ॥ नो गारि दांन दे ॥ चली जात गोरस मांती मनो सुनी नहि कांन
दोरि आय मन जाव ते सोरो की हे अंचल तांन ॥ नाना ॥ एक जुजा कंकन गहे एक
जुजा सौं चीर दांन लेन गदे नये सो गहवर कुंज कुटीर ॥ नाना ॥ वज्रत दिनां तुम वा
चि गई दांन हमारो मोरि ॥ अवहो लै हों आपु नों सो दिनां दिनां को सजारि ॥ ५ मो
रस निधांन नवनागरी निरखि वचन मृदवो लि ॥ क्यों मुरि गढे होत हो घंघट प
ट मुख लोल ॥ ५ ना ॥ हरखि हीये हरि करि खके मुख ते नील निचोल ॥ सरन प्रग
यो देखि कै सो चंद घटा की ओलि ॥ मो गेल लित वचन मारुत नये नेत नेत नये दे
न ॥ उर आनंद मन अति रदौ ॥ सफल नये मिलि नैन ॥ ७ ना ॥ इह मारग हम निति
गई कवज सुन्यो नहि कांन कहा आजु नई होत हे सो मांगत गोरस दांन ॥ ८ मो ॥ तुम
नवीन हम ग्वाल नी नख न नौत न अंग नयो दांन हम मांग नैं सो नयो वन्यो यहरंग
॥ ९ ना ॥ चंचल नैन निहारिये चंचल बोलै वै न करन हि चंचल की जिये चंचल
अंचल नैन ॥ १० मो ॥ सुंदरता सव अंग की वसन निराखी गोय निरखि निरखि छवि

लाडली सोमन आकर्षित होया ॥ २२ ॥ गलकुटिली धेंग दे रहे जहां सां करी बौरि मुस
 कि गगरी लाइ कै सो सकतिल रति जोरि ॥ २३ ॥ मो नैं क हरि ग दे रहे कछू और सकु
 चाइ कह कथो मन जं व ते सो अंचल पीक लगाय ॥ २४ ॥ नाग कहानयो अंचल लगी
 पीक हमारी आय धा के व द्योग्वालिनी सो नैं ना पीक लगाय ॥ २५ ॥ नाग सूधे वच सौं मां
 गिये लालन गोरस दां न जोहन ने दजनाइ कै सो कहत अंन की अंन ॥ २६ ॥ मो ग जै सै
 हम कछु कहत हैं ऐसी सो कहिले ज ॥ मन मां नैं सो की जिये दां न हमारो दे जा ॥ २७ ॥
 कहा जर हम जात हैं दां न जु मांगत लालन ॥ २८ ॥ अंवार घर जान दै जर सौं छाडि अट
 पटी वाता ॥ २९ ॥ मो ग जर जात हो श्रीफल कंचन कवल वसन सौं दां कि दां न जु लग
 त ताहि को सो दे करि जाऊन संकर ॥ ३० ॥ नाग तनी विनती मां गिये सो मां गै त अं
 ली आडि गोरस को रस चारि विये सो लालन अंचल छाडि ॥ ३१ ॥ मो ग संग सरवी स
 व फिरि गई सुनि हे की रति माइ सी तिही ये ही राधिये सो अगटन योरस जाय ॥ ३२ ॥
 हरव ग कालि वजरि हम आय हैं गोरस ले सव गवालिनी की नांति चरवाय हैं सो
 जीवन हों वलिहारि ॥ ३३ ॥ नंद ग सु निराधे न वना गरी हम न करै विसवास कर के
 अमृत छाडि कै करै कालि की आसा ॥ ३४ ॥ हरव ग तेरो गोरस चाधि कै मेरो मन
 ललचाइ हरन ससि कर पाइ ॥ ३५ ॥ चकोर न धीरज धराइ ॥ ३६ ॥ मो ग मोहन कंच

कुवारि २५ अम विजन गहे लाल जू श्री कर देत दराय अमिन नई चलि कुं
ज मैं सो नैं कपलो टों पाय २६ नं० जान तहो ए कौ न है ए ती टी छो देत श्री वृ
ख जान कुवारि है सो ताहि वीचि कों लेत २७ वृख० गोरे श्री नंद राय जू अ
असुरांनी जसु मतिर्मय तुम याही ते सां वरे सो अैं सो लछिन पाय २८ नंद
मन हमारो तारन वसे और अंजन की रेख चोर वीधी तिहिये वेधी सो य
ते सां वरे नेख २९ वृख० आपु चाल सो चालिये यहै वडे की रीति अैं स
कव जन की जिये सो हसि हे लोक विपरीति ३० नैं चले वले फिरतहो और
कछूनहि कांम घाटवाट मेरो कीयो सो आंनन सो आंनन मांनत स्यांम
३१ वृ० यही हमारो राज है व्रज मंडल सब वोर यही हमारी कुमदनी सो व
दन कमल को नौर ३२ नं० अैं से मैं कोऊ आय है
सवे नंद लाल जू प्रगट होत है श्रीति ३३ वृ० श्री वृंदावन गिरन दीप सुपं
जे संग ३४ न सौं कौन डराव है सो प्यारी मेरो अंग ३५ नंद० असु वाऊ धरिलै
चले प्यारी वरन निहारि निरखत लीलारसिक जू सो जहां दांन की वोर ३६
वृख जान लडै ती दांन है ३७ ति दांन लील संपूर्ण ॥ २ ॥ ॥ श्रीरसु ॥

१ पियाविनि
 १ प्यारात
 १ कृका न
 १ न ख
 १ मेरोतन
 १ हो न
 १ यह
 १ व मा
 १ न सुर
 क
 त
 दशवनमग

ठा न
 ३ ग रुआ
 प्यारोठा
 कप
 ३ करु
 ३ मकीछाह
 ४ जा यार
 ४ नेनायू
 ४ कहाकरुह
 ४ पालपिया
 ४ लालर
 ४ मीता

४ न
 ४ उदरदन
 ४ नालल
 ४ अ सजन
 ४
 ४ लगनला
 ४ पी
 ४
 ६ अ मे न
 ६ जान
 ६ च कुवर
 ६

कुं
 वृ
 अ
 नंद
 या
 अ
 और
 म
 सोव
 अ
 सुप
 धरि
 वि
 ५

३०
१५
१६

६	कठिनलगन०		जाकोंवेदर०	१०	नीदजरीअधिया०
७	रेकनैयाने०	८	अणीसिरधु०	१०	राधेतेरेनैन०
७	वंशीवाजेका०	९	रहेदोजब०	१०	होकांन्हजी०
७	सुनिमुरली०	९	वनरोरंगी०	११	प्यारीकेच०
७	लालतेरीमु०	९	मोरेसावरेति०	११	हमारैमाई०
७	जयतिश्रीकुं०	९	आयावृज०	११	जूलतुलाड०
७	अवहोसर०	९	मांन्हीनांन्ही०	११	मतेवारोगाढो०
७	सवडषगेह०	९	होघनगाजे०	११	कैसेकैजांऊपां०
८	मुरलियाकों०	१०	नांन्हीनांन्ही०	०	नैनंमंन्ही०
८	इनसोतिसं०	१०	गाढेदोजस०	११	देखिवदरिया०
८	वंसीधुनिम०	१०	दोउजनजी०	१२	गलेविच०
८	सुनिरीसपी०	१०	नवलरंग०	१३	ससरचो

१२१ हमारैईष्ट०	१५	कांनूथारीवा०	१७	वंसीमनमोह०
१२२ जनमसुनत०	१६	वशीकादोहा०	१८	वैनवाजैज०
१२३ रमकिरमकि०	१६	वनमालिया०	१८	हेलीहेमोहन०
१२४ जंजमहल०	१६	गहरैगहरै०	१८	मुरलियाकौ०
१२५ तुमघनसेहो०	१६	देईयाआवे०	१८	साडीयारीवे०
१२६ कार्तिकमास०	१६	हेलीमुरली०	१८	मोकोंगयो०
१२७ आजिम्हारै०	१७	काहवांसुरी०	१८	जरदडपटा०
१२८ जागोजागो०	१७	मुरलिया०	१८	कल्ललगन०
१२९ जलेजागोहो०	१७	गईकरवी०	१८	वनवाजेह०
१३० मेरीस्वामिनी०	१७	सुनिरीआई०	१८	कनैसमैम० ७

१० १७

०

१२५ ता. गा०

१० १७

१२५ चलेजातग०

१० १७

१२५ ०

२४ चंपावरनीकानी

गरीश
२

१९ कदमकी छाह	२२ मैनासोहनेरं	२४ मंगलआजम
१९ वीररिषेव	२२ नीजमाहारीचुनरी	२४ ^{लेवनाजमा} मंतदाराग
१९ कवलकेपा	२३ बलेमीलना	२४ होबालिमजी
१९ ऊकरही	२३ बलवहिका	२४ घेततकांगहै
२० ^{कोरुनहीसीलम} श्रीगमवड	२३ ^{लडनीयहनेनाव} मुधरषीलार	२४ कुलोपालने
२० मेहरियतित	२३ लटकतचल	२६ माईसीमेहरि
० निपटबिकट	२३ रसीयातेरैका	२४ बजरंगनीहोमुन
२० नयोवैरमो	२३ वनवारीके	२४ अवहीनैकयो
२० मोहनव	२३ होरीकादोहा	२६ नंदगोपराज
२१ आदिनीरज	२४ ^{कुजसहेन} बसोरगंसरहेली	२० नंदमहरकोला
२१ ^{किमारीरमरास} आरतीजुगत	२४ घामावाकर	२६ नंदजीरवालो
२१ धैरतात	२४ कागणियार	२६ ^{लानेपरीन} मावरियाचीत
२२ होजमुनांजल	२४ पीयाप्यारप्यारी	२६ बलेमिलना

२१ अलीहंकोकरज

२६ कन्हैयानी०	२७ श्रीरुंवाहिर०	०	मईरीम्याम०
२६ काकरीकोरु०	२७ आजनवनवम०	३१	तरवरचाह०
२७ तजिनवलदेन	२७ अबसुनि०	३१	वजकेलोग०
२७ कुरमटलाग०	३० आजसषी०	३१	वजकेपेमसै०
२७ चोपडचतुर०	३० नयादेविपी०	३१	जैतश्रीकृष्ण०
२७ सावरेकोरुग०	३० पुलिगयेसौ०	३१	होरीवगर०
२७ नेईकोनयह०	३० प्यारीनीहारी०	३१	४ बललगरयह०
२७ मरदकादोहा०	३० नेणानीद०	३१	ईतमनईरुस०
२७ सषी मुनिवा०	३० टीलीनथ०	३१	पनियानजाकरी०
२७ आतुइवन०	३० वदधरीकोन०	३१	अवतोस्याम०
२७ बोलततथेई०	३१ रीडोरदेलीरंग०	३१	देविसषीदंय०
२७ दोऊमिलि०	३१ दोऊमीलिऊ०	३१	मोहिकोनपी०
२७ आवरीदेवि०	३१ यदोलालऊ०	३१	हुवाहेईस्क०
२७ दोहानीलपीत			

३३ देवामनमोह०	३६ सुरंगीसेजारग०	३७ इगनरिनीश्वरीजोरी
३३ मनमोहना०	३६ अजबजदशमी	३७ पठडारोमेलोनेमोहन
३३ प्यारीनीहारि०	३६ मोहनजीमहार	३७ जेजेदेवदीवाकर
३३ ^{हिलेवपीया} नमोस्वकी०	३६ रतनालीहोप्यारी	३७ आदितृहीदेवदेवमा
३४ प्यारीजीकामा०	३७ जणीदाखोजीरा	३७ दरसनपायेतुम्हारे
३४ कुंजपधारोजी०	३७ हेवीरतालीतैतो	३७ दरमदिवासीमाने
३४ मंगलनीनी०	३७ हारगीलीवाजी	३७ मोलमुमाईहोतेडी
३४ फुलेफुलेल०	३७ आयोधनघोरन	३७ गुजालमहलपरब
३४ फुलनसोवैनी०	३७ प्यारीकोमनलवि	३७ एकादशीश्रावन
३४ फुलमहलफुल०	३७ कितेदीनछेजुग	३७ एकादशी
३४ प्यारीजीभरे०	३७ वीतमप्यारीराज	३७ कनकपचीनामोहत
३४ तुमरंगनीने०	३७ घनआयेरीमनना	३७ पवित्राउचवकोदिन
३४ ^{नवलनन} अजिरगहमाकी०	३७ हीमिरमांवरोगुल	३७ बलईयाजानेवरसन

४०	मधुक्वनीकटगा	४२	आजराजदशरथ	३	होतोसोनादेबिलुना
४०	आछेआछेहोतुम	४२	आवोनकेसरिय	३	वैवेहेहीवोरबीच
४०	विद्यावयोबाकवि	४२	परगईनैननअमी	३	सवीसावरीगारीयक
४०	विद्याकवितायहि	४२	मनकीपीरअनो	३	उतरेऊलेतैसोनासि
४०	प्रथमपंचमीवैत	४२	मनउरकेसुरकना	४	नितिगरजिगरजिग
४१	मंगलनिधवृजरा	४३	रघुकुलमंडनक	४	सुंदरनंदकवारऊल
४१	राधेराधेराधेराधेकुं	४४	अहोरंगफूल्योदे	४	फूलतरंगहीडोरैन
४१	वदिनादवातीजती	४४	मुहाषनोलागत	४	ऊलतहेदोऊसर्षा
४१	दिनदेवदिवाकर	४५	वादवधाईवाजेरे	५	बालविनोदीमेरेही
४१	मंकरगिरजापति	४५	वाजतआजवधाई	५	इतिसंपूर्णः
४१	गोईयेगाईयेगाई		इतिसंपूर्णः	५	वंदजमेरेमनआनंद
४२	वनीहेनीकीमोरध	३	रागमलारलिष	५	ऊबनमांगनोऊबज
४२	मेरेअरमीतोमोहन	३	येहेलालकूलिये	१९	म

१ फुलेगोय्यालबजरा

२ रावरकैकहैगोय्या

२ नंदवधार्ददीजेखाल

२ लालकोजनमदीव

२ वजपुरघंघरअतिश

इति०

१	आयेमाईवरषाके	२	वृंदावनकनकचूमि	४	जूलतस्यामपियासं
१	स्यामसुनीनीरेआ	२	अवहीरंगराघोमुर	४	जूलतलालवृंदावन
१	लालमेरीसुरंगचुन	२	हिडोरामाईजूलनके	४	माईरीजूलतरंगहि
१	राधेरूपकीघटा	२	सुवीलेलालकेसंगि	४	रमकिरमकिजूलनम
१	सौजामाईअवदेष	३	हिडोरनायोपियरम	५	सौसांवनआयोहे
१	दोजजननीजतअद	३	जूलनआईजुनारी	५	जूलततेरेनैनहिडोरे
१	लाडिलोलजायवु	३	राधामोहनजूलत	५	तराविलैरीजोरातरल
१	कुवरिवलहोआगे	३	रंगमचेसिंधवारै	५	आजिलालजूलतरं
१	गावतरसिकरायगो	३	तैसोईवृंदावनतैसीही	५	राधिकेसंगसुनगगिर
१	अलापतचोषीतान	३	राधोकेसंगिसुनग	५	लालमुनिनिकेकुंज
२	स्यामहिदेविनांचेमु	३	हिडोरैअवजूलतहे	६	जूलतदोजलालगिर
२	आईजूस्यामदलघटा	४	आईसकलबुजनारी	६	नवललालकेसंगिजु
२	पावसनदनटो	४	रमकिरमकिजूलै	६	

६	कूलतसांवरेसंगगो	९	कूलोसुरंगहिडोरै	१	आलीरीकूलतनंद
६	प्यारोप्यारीकूलतसु	९	सुंदरगोवर्द्धनपरवत		सजैवृंदावनमधुरी
६	बिहारीजीवारीरूसा	९	हिडोरैकूलतलालगो	२	कूलतदोऊसुंदररंग
६	नवलरायगोवर्द्ध	९	कूलहिकवरिगोपराय	२	माईरीकूलतनवल
७	हिडोरैकूलतजो	१०	हरिकूलतब्रजनारी	२	गोकुलरायकीधोरि
७	कूलतदोऊकुंज	१०	कूलनआईब्रजिकीना	२	चलीहैवडडीकूले
७	पियप्यारीरसनरि	१०	तैसोहीवृंदावनतैसीहरि	३	नवलहिडोराहोकू
७	अपनेंप्यारेकेसंग	१०	कूलतरंगहिडोरैहो	३	माईरी
७	परंगमचौसिंध	१०	स्यामास्यामवरावरिवैवे	३	देपियेवनसोभारा
७	स्यामकंगोपीकुल		॥ श्रीराधावल्लभनोजयति	४	कूलतकुवरिगोपरा
८	कूलनकोहिडोरो	१	कूलतवेनवलकिसोर	४	सुभगहिडोरनांमा
८	हिडोलैकूलतनम	१	हिडोरैवेकूलनआई	४	तराबिलैरीकूला
८	ब्रवीलोसुपलकू	१	हिडोरनांमाईकूलतगो	५	रमकिऊमकिऊले

५

३

२ राषीकपद

३. मलारसं २ स्पंदयोरिवाद्माह्व

श्रीगोपीजनवल्लभा २

१ जमनातटस्योम १

१ १

१ १

जोपैंकोऊसांचीषी १

२ धराहा १

२ १

आयोआगनरस

२ रामसु १

२ प्यारीकेचिन्हविथ

३

श्रीगोपीजनवधनमः॥

१ श्रीकृष्णजन्मोत्सवके	५ गोदलाललेमंगल	९ लालमाईपाल
१ प्रथमहीजादीमास	६ मंगलगावतीहैव्रज	९ पालनैफूलो
३ वालामैंजोगजिसगा	६ हंतोएकनईवात्तमु	९ नंदकोवालव
४ रांनीजुआपुनमंगल	६ जनमलीयोसुनलग	९ फूलोपालनैमे
४ जसोधरांनीसुवर्णफू	६ यहधनधर्महीतैपायो	९ अपनैवालगो
४ आजनंदरायकेआंन	६ रांनीतिहारोघरसुवस	१० सांवरोसुषपल
४ आंजिआंगननंदकेद	६ नंदजूसैरेमनआंनंद	१० फूलीचा
४ आजिमहामंगलमह	७ वृजिमैंअनृतदादीआ	१० करपदगाहिअं
४ सवगवालगावेगोपी	७ हांघरकोटादियोति	१० जसुमतिमद
५ आजिवधाईकोदिन	७ लालपरवारनैकीनी	१० हालरामेरेबारे
५ तुमजैमनावतीसोदिन	७ दादिनीनांचैरंगनरी	११ तुमवजरांनीके
५ घरिगवालदेतहैहैरी	७ मंगलद्योसच्चवीको	११ माईकसुलनै
५ नंदवधाईवांटतगडे	९ चौकतैउगिनंदरांनी	१२ ५

॥ श्रीगणेशाय नमः ॥ वंदौ श्रीरंघुनाथं जपाया गुरुजगते स तासकृपाकरि
 कहत हों परमजीति उपदेश १ रव्याहि परोजन कारखो होम कनागत पां हि
 व्यतीपातमावसेग्रहन तुलादां नमस्वमां हि २ सती इत्यसुतजन्मको नौतन
 वधू विवाहि कंकनकोरनचढनको हरिजन लेतन ताहि ३ सतीजन्म आं
 नदेवको चट्टाऊतस्योवारि फेरियोदांन मूलशांति संकांतिको आं नउचिष्ट
 आं न ४ कलप्यो कवारे हांतको विमुख सावनको जोज इनसैं जो अनुर
 क्त है तो जाय नक्तको षोज ५ निंजो निंदक नीच धन नईया नूत फरिस पीर
 सीरणी पाइ कै खोवै सुकृत लेस ६ नां विस्वासी गुरु विमुख अधीज पासी
 अं न्य कुष्टी इष्टी प्रेतको लेतन कवज अनं न्य ७
 ऊइनको लेत अष्टबुद्धि होइ जननमें कवजन आवै चेत ८ सुनौं
 छिन एकहे अपल छिन चालीस इमैं दारिपद धारि है सो पावै पद ईस
 जैसे कांजी हूधमें परत वंदही आय हरि विमुख निके अन्न तै
 लाय ९ चात्रिग की सीटि धरै करै अं न्य अनपांन

सकजलधारसमान ११ जोरघुनाथकोदासहै सोचालै इहिमाग सोर
धूजननिमैं ताहिकहैवडाग १२ सीतारामप्रणामप्रणामकरि अ
नदीयेवताय अन्यसाधविजकूरमैं सबहीमैंएपाय १३ धरमउपदे

१२ इह नित्यनेमज १५ तदेषिसुतावृखजो १८

१३ फूलतपालनेन १५ वरसानेवृखजानमो

वरसानेवरसरोवर

३

३

१० दादनिष्टजरांनीजूकी

१९

१९

१३ जनमलीयावृख १६ आजिरावलिमैजे १९ लडतीपालनेफूले

१४ प्रगटीनागरिरु १७ नईवृखजानकैसु १ श्रीराधावल्लभायनमः

१४ श्रीवृषजानराय १७ राधाजूकौजनमसु १ श्रीकृष्णवधाईलिप्यते

१५ जवतेराधिक १७ गोकुलतेवाजतवा १ आनंदआनंदकैधरे

१५ आवैनादोकी १७ प्रगटनईराधान १ आनंदकैधरेनीर

१५ आजिवरसाने १७ आजिरावलमैजे १ राजेसवराननिमनि

१५ चलोवृखजान १७ मैदेषिसुतावृखजो १ वाजनलागेआलीवांज

१ आजवधावोमाईरी	९ माईलालयालनैजुला	१४ मंदिरवजेवषनानके
२ मिलिआवोरीमजनी	९ वज्जतरानीकेगोपा	१५ नाचतगावतदादनीके
२ नैनजरिदेव्योनंदका	९ रुलीचायनजलराव	१५ जडवंसीजजमान
३ सुंदरवजकीवाला	९ अथप्रीयाजकीवधाई	१५ होवजवासीनकोमंगा
३ वजनयोमहरकेस्त	१० बलोवषनमगोयके	१५ राणीमंगनहोआयो
४ गोकुलराजकेधाम	१० आजवधाईहेवरमाने	१६ अथराधाजीकीवं
४ बलोमईयावोनंदम	१० श्रीवरमानेआजसो	१६ वरमानेगीरवरमुषद
४ आजवधावोवजरा	११ वरमानेतैदोरीनारी	१७ रंगवरसेहेली
६ आजकहांतैयागो	११ प्रगटीश्रीवषनानं	१७ लडेतीयालनैजुले
६ नवनवजराजके	११ नेयाआजरावलवज	१७ अथनीकवरकीमोरी
६ वरनैचाहतकव	१२ प्रगटीश्रीवषनानं	१७ दीपमालकीहटडीकोय
६ विमलजसवरननक	१२ हेरीरिहरिचैयानलो	१७ दीपदानदैहटडीवैवे
७ जलतयालनैगोविंद	१२ रावलपतिरावलमै	१७ वजमैअदभुतदाटीआयो

	अथवावनघादशी	३
जलजात्राकेयदलि	अथदानलीलाकेयद	३
१		३
१	सुधेदानकाहेनहीले	३ मषीरीहोंजगस्थधिवे
१	गोरसकहादीषावन	४ करतकितकमलनन
२		४ दोनमागतकवरक
१		४
		४ नेकरहाटाटादहा
		४ माभाजूजानदेरु
		४
२		
२		५
३		५

श्रीगोपीजनबद्धनयनमः

५	माननदैरुद्धाडोमे	८	अथमांजीकेपदलि
५	कापेटोटातेननचा	८	अथमांनलमंतीगार्थे
५	अहोतोमोलाहिले	८	अथनविरियांडपहरी
६	छांमोमेशीमटुकी		
६	अजकीघोरमांकारी		
६	कवदांनदीनोयाहा		
६	इंहिवागेंतरीअमो		
६	अथवावनजीकीक		
६	पगटेअरीवावनअम		
६	वलिकेघारेटाटेवा		
७	हमरेक्योंआयेवि		
७	रत्नाएकपंडितयो		
७	देविहजिवंमनव		

श्रीगोपीजनवह्ननायनमः

	१	अथदसराकेपद	३	जवककृन्धाहनुमान
	१	आजदसहरायेदीन	३	रासकेपदलिषते
	१	बीजदसमीआजय	३	मानलागोगीरधरगाव
	१	कजरआजिनोहा	३	नाचतब्रखनांनकुवर
	१	आजदसराशुभदीन	४	देवोदेरवोरीनागसुट
	१	बीजदसमीआरवी	४	अजुनंदनंदनगोषेव
	१	माहीकहतहेललि	४	बलेजराधिकेसुजान
	२	धूवामेवहतरहेहो	५	अजुनागरीकीसोरना
	२	आजययानेकादी	५	बन्योरासमंडलमेमाध
	२	आजदसराशुभदीन	५	चंदगीबिंदगोपीतारा
	२	सनमज्जतबीजदस	५	त्रयजाननंदनीनाचत
	३	देषिहोकतरथुना	५	बन्योरासमंडलएयुव

६	तरुनतनैयालीर	८	ततथेईथेईकरत		
६	एरीइहांछंदावन	९	वित्तमाननामनी		
६	आजुवननीकोरा	९	मुनिधुनिमुरली		
६	नागरीनटरायन	९	पाईमुषमुरतसि		
७	रामविलाससंगन	९	पियकोनचवत०		
७	राममंडलमेंवन	९	लाडलीवमानेला		
७	अलागलागनर	१०	अथधनतेरसकेय		
७	नांचतराममैगोवा				
८	गोपबध्ममंडलम				
८	कृष्णतरुनतनया				
८	गोपहंदसंगनतत				
८	राममैरसिकमोह				

॥ श्रीगोपीजनवधनमः ॥

अथ दिवारीकेनूवधवे	३ गोकुलगोधनसूज	४ चिरंजीवोला
१ बलिहायेतैसैही	३ फुलेगोपगालध	५ करिहैनसूज
२ नूतबलिदाजकु	३ अगुरीगहनदेवा	६ श्रीमाधोजूराध
३ आजिन्हातमेर	४ गोधनसूजनसवे	६ महावलकीन
दिवारी	५ गोवर्धनसूजनवे	६ राजेगिरराज
२ दीपदानदेहदरीवे	५ गोवर्धनसूजोगो	६ नंदादिकद्वज
२ दीपदानव्रजराज	५ गोविंदगोकुलकी	६ जननीचोपत
२ पूजाकरिदेवगोव	५ वरधनदेवैयावर	६ मेरेसावरमेवा
२ धरमेतैवाहरिजति	५ गोकुलकाकुल	६ नंदकरतसूजा
२ गोवर्धनसूजनअ	५	६ लिवलिचरि
२ लीलालालगोवर्ध	५ राधिलेज	६ रहव
	५ बलिहारी	६ करतनद

८	आजिश्मावसदीप	११	स्यामपरिककेदारै	१३	कहोमेरेवारेकां लाल
८	आजिकहंकीराति	११	नीकैवेलिगोपलकी	१४	अपनेअपनेदोलक
९	दीपदानदेस्याममनो	११	तानगिरवरपूजो	१५	देखोमाईवादरकीकु
९	देखोइनदीपककीसु	११	हमरैदेवगोवर्दनपर्व	१५	वारीमेरेकांनुरप्यारे
९	कांनजगावनचलैक	१२	वडेडेनकोआगेदेगि	१५	जैजैलालगोवर्दन
९	गोवर्दनपूजाकेदिन	१२	गोवर्दनपूजाकरिगो	१५	जयतिजयतिश्रीहरि
९	देरिदेरिचोलतनंदन	१३	पेलनकोंधोरीअकु	१६	नंदलालगोवर्दन
१०	दीपदानदेहटरीवैवेनंद	१३	पेलिवऊपेलिगांगवु	१६	सुरराजआयपायन
१०	सुरजीकांनजगाव	१३	गुदकोरंजापवासुक्का	१६	इंदकोपतैवृजजन
१०	दीपदानदेहटरीवैवेवडो	१३	गोधनपूजिकैधरेआ		
१०	दीपदानदेकांनजगाव	१३	तारोतारोचृजजनलो		
११	वारवारहरिसिखवन	१३	वदरांनअंवरछायो		
११	गोधनपूजेगोधनगाव	१३	गिरदरनीकोधस्यो		

[illegible]

[illegible]

॥ श्रीगोपीजनकृष्णनमः ॥

१ गोचारनकेपद ३ आजिषवोधनीपरममा

१ वेलतवनहिचलेष्ट ३

१ डुमचदिकान्हटरतह

१ टेरतउचीटेरगोपाल

१ अथमगोचारनचले

२ अथमगोचारनकेदि

२ गायचरांवनकोविस ३ चलदेवजीकेपद

२ मैयारूनचरायहेगा ३ चलदाऊकीवरसगा

२ मैयामैकैसीगायचरा ४ अथमनसिद्धा

२ गोविंदचलतदेखिय ४ रेमनश्रीहरिवसन

२ गोविंदचलेचरावन ४ वस्त्रानरणकपद

॥ १ ॥ ४ ॥

३ ४ माहनमहारा

॥ श्रीराधावह्नत्रायनमः ॥

१	अथवसंतकेपद ॥	रागहिडोलरंगरली	५	डोलजूलतहेनवल
१	राधेदेषिवनकीवा	३ वादीहोआजिसंतर्ण	५	आनंदरायषेलेफागहा
१	श्रीराधेवनविनोद ॥	श्रीगोपीजनवह्नन	५	षेलतफागफूलैवेठे
१	देषोदंदावनकुस	डोलकापद	६	परिवाप्रथमकवरिअ
१	आईरितिवसंत	३ मनमोहनअडुडोल	७	आगमसुनिरितिराजुको
१	राजेश्रृंदावनश्री	३ मोहनजूलतवहोअ	८	नंदगावकोपाडेब्रजि
२	राजेश्रृंदावनमधुरी	३ जूलतडोलनंदकिसो	९	फागुवाकेमिसिचल्ने
२	देषिसरवीअति	३ मदनगोपालजूलत	१०	श्रीलछिमनकुलगा
२	कुंजविहारीप्यारी	३ आजिमाईजूलतनं	१०	होहोरीषेलेनंदको
३	प्रथमसमाजआ	४ सोनासकलसिरोम	१०	यागोकुलकेचौहटे
३	नवलवसंतनर	४ जूलतजुगैवरिकि	११	षेलतफागुसंगमिलिदोज
३	आईआईवसंत	४ डोलजूलतविहारि	११	माईमेरोमनमोहोस्यामरे
		५ हरिजुकोडोलदेषिअ	१२	छाडिदेऊयहवांनी

१३

२० | घेलत मोहन रंग २१ | निकसे मोहन लाल ये

२० | मोहन के घेलत रंग

२१ | तुम बलो सब जोही २२ | अति मरम स्यों वरमा

२१ | रंग हो हो हो हो होरीया २२

१५

२२

१६

२२ | या ब्रज मै होरी रंग कटो २३ | होरी अंज वगर मै मावि

२३ | रंगीलेरी छी वीले नैनो २४ | हो होरी घेलत ब्रज नाथ २५ | न की जिये न जिस्म रि

१६

१७

१६

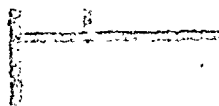
१७

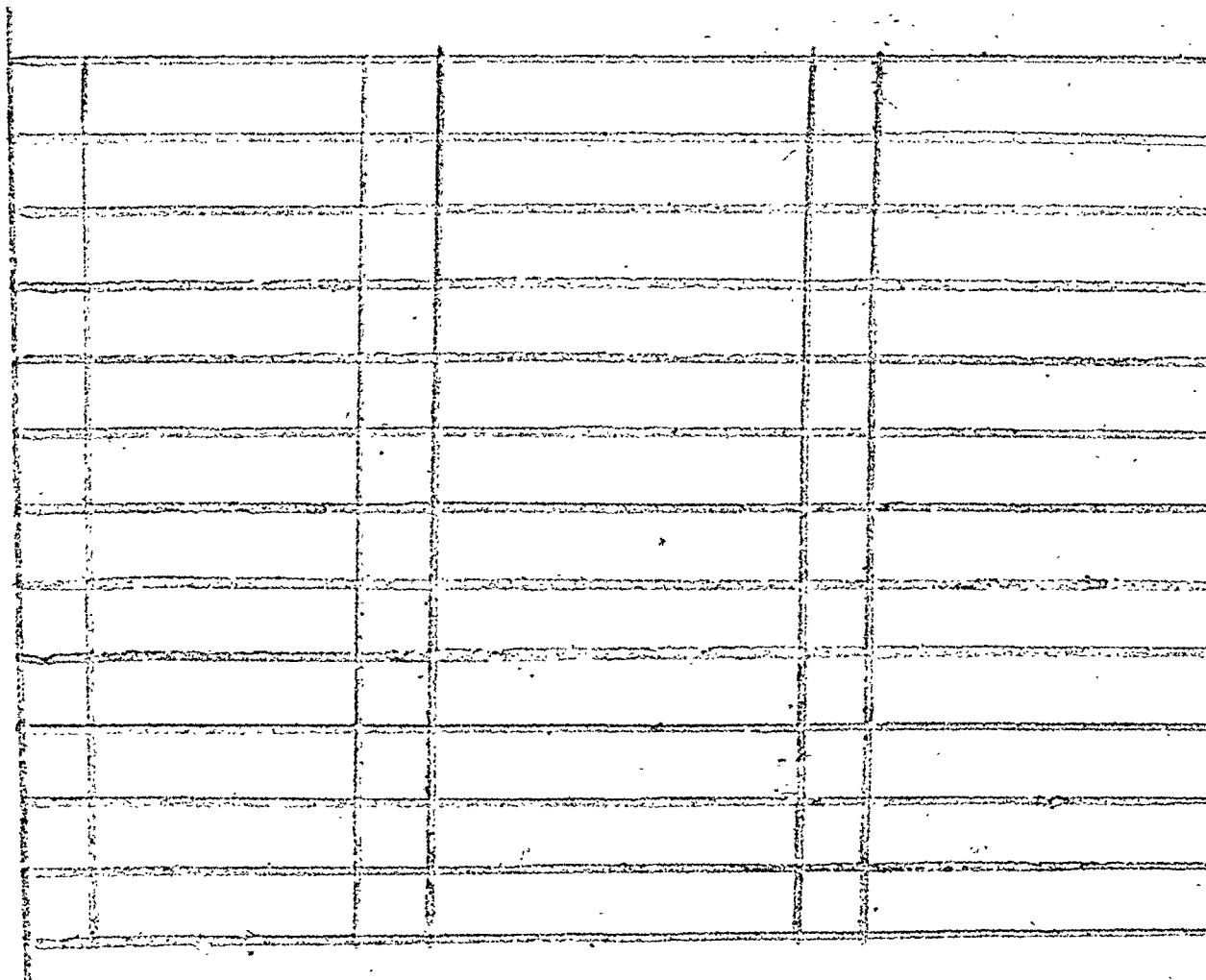
२५

२६ | मिरे नंदन पाछै पस्योरी ए

३१ रंग हो हो होरी बेलै	३४ कान्हां निलजगारीजि		
३१ रंग हो हो हो हो होरी	३५ प्यारीजी के पुलि गयेमों		
३२ होरी बेलि गदे दोऊ	३५ मोहनवारी वसिकीजे		
३२ चले मिलि जां वतै	३६ बोलै रंग होरी होरी होरी		
३२ आजि होरी बेलत	३६ रसफाग आजि वाजे		
३२ होरी बेलै मोहनी	३५ वृजनास्यो रेकु डराधा		
३२ गले विचरु स्कप	३५ लालटि बेलत फाग सुहा		
३२ अरीय हव जिमंड	३६ प्यारी लाडिली वजरिं		
३३ लैरग वगे बसन	३६ श्री हंदावन सहज सुहां		
३३ डऊनि मै आजिर	३७ वृजराज कुंवर बेलै हो		
३३ आजि फागु सुष			
३३ रह्यो रंग होली			
३४ हो पिय नैननि			

1111





॥	फूलमंडलीकेपद	॥	अथफूलडोलकेपद॥	अथफूलरचनाकेपद
१	वैठेलालफूलनिके	२	फूलतफूलभईअति	३ फूलनिकुंजगुलावकी
१	चलोकिनदेषनकुंज	२	राजतफूलडोलपिय	३ इहफूलफूलेरीवृंदावन
१	वैठेलालनैवडकुंज			३ फूलेफूलेफिरतस्यंमा
१	वैठेलालकालिडीके			३ फूलनिकीवैनीगुही
१	फूलनिकीमंडलीम			३ फूलीफूलडोलकुंज
१	चलिसषीकुंजगुफल			३ देखोकुंजकीपरछाई
१	अतिविचित्रफूलनि			४ कुंजमुहावनीमनज
२	कुंजमहलमहरिलल			फूलेफूलनिस्वेतवि
२	फूलनिकेमहलफूल			४
२	वैठेलालनिकुंजम			४ फूलनकेवेषणवसन
				४ फूलमहलमैफूली
				४

[illegible]

पराधावलनोजयति॥

श्री रामजनमवधारके	२	आजिमहामंगलकै	
१ वटिगहगडवैगहर	३	देशोअनुतअवमति	
१ उदधिअवधेस			
१ अवधिपुरीधामआरा			
१ नयोहैआजिअवधि			
१ रामजनमदसरथध			
१ चलिरीआजिमंगल			
१ अवधिपुरवाजतआ			
श्री गोपीजनवल्लभायन			
२ आजिसपीरघुनंदन			
२ आजिअयोध्याप्रगटे			
२ माईप्रगटनयेहैराम			
२ सुंदररामपालनैजू			

五

॥ चांदिनीकेपद

॥ अथ चंदन रचना के पद

ध राजतमोनौराधानि

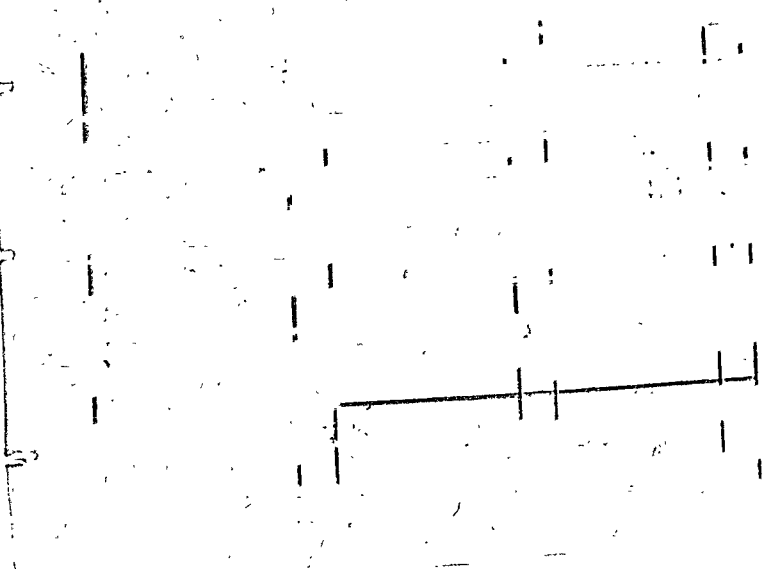
४ चंदनचित्रविचित्रविराजै

४ निकसिकुंजतैंगटे

४ हरिकेश्रिंगकी चंदनलपदान

४ चंदनचंदनकीतनसौजा

४ चंदनचित्रविचित्रशृंग



[illegible]

अथ दान के पद। राग गजरी॥ पिछों डी बां द न दे हो ता। सखे मन मुमले
गुसों इरावरु मेरो माना॥ १॥ मारग रोकि रहे मन मोहन सव गुन रु,
निधो ना बदन मोरि मुसकाय तं मिनी नित बां न संधाता॥ २॥ सेंदरा
के कुंवरिला दिले सव के जीव न जांता। परमां नंद स्वामी नागर होतु
मते को न मुजांता॥ ३॥ १॥ मोहन तुम के से हो दां नी। सखे रहेंगे हें
नीय नितु म्हे रं जीय की जानी॥ ४॥ हम गुजरी गवारि नारितु म
रग पांती। मटु कील इतारि सी सते सुंदरी अधिक लजांती॥ ५॥
राहि चीर कहाएं वत हो बोलत चतुर सयांती॥ सरदा सप्रनु मां प
न के मिस प्रेम प्रीति बितवांती॥ ६॥ २॥ राग देव गंधरा। सखे दान का हे
न ही लेता। ओर अटपटी छां डिनंद मुते कहा क पावत वेता। चूंदा
वन में बीथ निविथ निफिरत हो ग्वाल ससेता। इन बात न के से म
न मां नें ओर न करत अचेता॥ ७॥ राव कि रव कि
रग चल न देता। अयने मन की काहे

३॥ अवकाहूनमुखजातनदेहोआतिवन्ध्यांसंकेतमरदासप्रतु
रंगरहस्यमेदेवचलेनखरेत॥४॥ राजदेवगंधर॥ गोरमुकवादि
खांवनआइइतनोकखायोनेंदतकेदोराबदलोलहंमेरीमाइ
५॥ जेसीकीनीतुमहंकीकन्हस्यांमंदिरतेंउविधाईपांससरबीमिलि
दतउराहनेंइहतेरीकोंतवडाई॥२॥ सुंदरकांन्हछवीलोनागरइ
हिमिसदेखतआईपरमांतंदस्वामीकोंमिलिकेंरहसिवलीमु
सिकांई॥३॥ २॥ मटकीयांमेरीमोहनदीजेजोकहूदधिचारवनको
चाहोतोरंचकपातकरिपीजे॥४॥ उनेआएघनअटकनोरहीवन
तमनेंअतसारीनीजेरंगुवहेगेअवारमोहिदेकहाकहेहो
जोघरकोऊखीजे॥२॥ चतुर्भुजप्रभुहोंकालिआयहोंसाचीवातपु
नीजेगिरिधरलालनयोपगतुम्यारोहोंनुआनुअतिदहनकीजे
३॥ ३॥ रंचकवाखनदेरीदहोअदनुतस्वादमुन्योकितुमोयेनांहि
नेंपरतरहो॥४॥ ज्योंज्योंकरअंबुजउरपरदांयतह्योंमरमुलहो

[illegible]

करकरतकमवरियाई॥१॥ करगहिवां दनाहअपनें ज्यों दहकि
करीमारगमें गादी॥ कवहुं छुवतलरकवहुं तोरतहारकवहुं ग
हतकंचुकी अतिगादी॥२॥ एतेनें नरोखमें नांमिनि जानंदेहुमो
हिनंदहुहाई॥ परमानंदस्वामी रतिनाथकप्रेमवचनकहितलो
मनाई॥३॥१॥ रागधनश्री॥ गोरसवेचवेमेनांति॥ कमलनें नविन
कोउनलेदेकाहेकोमथुरांजाति॥५॥ दूधदहीकेदमकादेहें छुव
तकहाइतरात॥ परमानंदगालिसयानीमोलकरतमुसकात
२॥१॥ माईरीनागरतंदमहरको॥ कारुकीकांनिआंतिनहिमां
नतलरिकाअपनीअरिको॥५॥ मदुकीफोरिकंचुकीबंदतोरेओ
रकंकनालायोकरको॥ बलदासप्रभुमनहीसकुचनईमोदि
उरअपनेंहीघरको॥२॥२॥ सुधेकिनबोलोहोकहाइतराते॥
जमेंकोनतेकोबडोनाहिनेरायतुराने॥५॥ कोनदेवतुम्हरीदिन
प्रतिकीताकतअंगविराने॥ जेइजेइकर्मकीयेकहिदेहोंअस्वा

धरपीयननित्तिकचुकीकयाता॥३॥धारागटोडी॥
जिकचुक

गंगा

ढोड़ी ॥ छांडो मेरो अवर जिनि गहो ॥ वोहत वचत वावा की मोह अव
अन वोले ही रहो ॥ १ ॥ नले फिरत और केंधो खेगुली सांची सो कहो ॥
जिनि वेलिया तो नही वीठल विमन विहारी फल वहो ॥ २ ॥ राग आसा
वरी ॥ मटकी ले जु उतारि धरी ॥ इन मोहन मेरो अंचल पकस्यो तव हो आ
पडरी ॥ १ ॥ मोपेंदांन सां वरो मांगे लनें हाथ छरी ॥ मोहि जु तुमग हिरहे स
ग की गर्सगरी ॥ २ ॥ पेसा ला गि करत हो वीनती इहं कर जो रिवरी
पर सां नंद प्रनुद धिवे चन देवरी या जाति टरी ॥ ३ ॥ राग ढोड़ी ॥ सखी
री हो जु गर्सद धिवे चन हज मेन लटी आं पुविकांनीरी ॥ विन गय मो
लल नंद नंदन सर्व सुल विदे आरिरी ॥ १ ॥ सां वर वरन कमल दल लो
चन पीतां वर कटि फेंटारी ॥ जिनि वे आं वत सां करी खोरी नई अवान
कने टारी ॥ २ ॥ कोन कीने कोन कुल वधू मधुरे मधुरे हसि बोलेरी ॥ मकु
विरही मोहि नुतरन आवत बल करि घूंघट खोलेरी ॥ ३ ॥ सासु ननद
उपचारि करिय चिहारे काहू मर मन पायोरी ॥ कर गहि वेद द्यो रि ॥

मोहि विंता रोग वयोरी ॥ ४ ॥ जा दिन ते मोहि सुरति समारी गृह अंग नोधि
 ॥ धित वत वलत मो वत उ विजागत यद्दधान मेरे अंगेरी ॥ ५ ॥ नी
 मनि मुकता वलि सोहे मोहि स्याम कोऊ मिलावेरी ॥ कदि माधो विंता
 मेरे विन विंता मनिया एरी ॥ ६ ॥ राग आसावरी ॥ करत कित कम
 लेने न सोऊ गरी ॥ दांन देधर जा हसयानी छांडि हेकांन अंग गरी ॥ ७ ॥ ताते
 यरो मेन मिलायो आदिज मायो सगरी ॥ नंक छूवन देराज कुंवर को
 छन लेहे सगरी ॥ ८ ॥ मोहन लाल गोवर्धन धारी अवलन मांफन वलरो
 परमानंद प्रनु वतर मन्त्र टकनि लिगयो वृज डगरी ॥ ९ ॥ राग आसावरी
 दांन मंठात कुंवर कजाई वारवार चोरी दधि वेव्यारी दधि वेव्या अच
 की वेरे में जान पाई ॥ १० ॥ जा मोर गतिलरी मृगने नीति नदी सवानी वान लर
 दिन को छांन न देहो वृज राज उदाई ॥ ११ ॥ मोहन
 धन धारी हरि नागर वातन अरु कजाई यरमान
 यो अोर डगर वताई ॥ १२ ॥ रा

देगुजरेटी। वोहतदिनां वोरी दधिवेच्यो आज्ञवानकनेटी। १॥ अतिसत
रतकेसें छेदेगी वेडे गोयकी वेटी। कुंजनदासगोवर्धनधारी मुजत्रोटनी
लयेटी। २॥ रागवेडी देती। नेकरहों नें करहो दोटा देहो। जानिबूझि य
रावतहो कतकरिकरिताममलेहू। १॥ कोनहालकयिगोरसकेवलहूं
दिस्वार्जगेहूं। परमानंदपुत्रगटकीयोचाहतगवालनिगुपतसेनेहू
२॥ रागआसावरी। माधोज्ञानदेहवलीवाटकमलनेनकाहेकोरो।
कवजमुनाघाट। १॥ औरमखादेखेंगेकोऊगहतसीमतेमाट। तुमतीका
हूँ औरमरतनहींनीयरेगोधनवाट। २॥ क्योंविकायगोरोस्ममरोकर
तनोरहींनां। परमानंदवंशवलीखीकतिदिनप्रतियहीहेडां। ३॥
रागआसावरी। कहिदधिमोलअजहोलेहो। यहजमोतीहारकंठते।
वंशवलीगुपततोहिदेहो। ४॥ पांनियांनिगहिवादीकीनीमांकवाटवा
न्याहेकगरोवावाकीसीजाननदेहो। गिरधरलालहवीलोअवगरो। २॥
लोभदिखायेप्रीति। जोकीजेनांदिनेंवातमलीसवफीकी। परमानंद

प्रनुजानिमहात्मजोऽहरिमजेचतुरमोर्दनीकी॥३॥ राग परवी॥ ॥
 डहलालहमारीवाटाअतिसेमुजरत्रेकिनदेखसिरऊपरगीरस
 केमांटा॥३॥ इनवातनकेसेमनमानेजायचरावहगोधनकेवाटापर
 मानंदप्रनुलेहमुदरीयाप्रातसमेंकीजाजहनाटा॥३॥ राग परवी॥ ॥
 लनिमीठीतेरीछाछिकहाधधमेंछालिमायोसाचिकहोमेरीछाछि
 ॥३॥ अरेमांतिचितेवोतेरेओंहचलतिहेआछि॥ एसोदकुऊकुक्कहने
 तंजु

श्रीगौडी॥ मेंतोसोकेतीवारकह्यो॥ इहिमारगसुंदरिटोटाबरवट

निरखतनेकनपरतरह्यो॥ शलोवनसफ

२ मारवो॥

ललालन होत हे श्रवार ॥ घरतें निकसें आज वडी वार मे मोहि सुंदर नंद
कुमार ॥ १ ॥ कालिदधिज माय नली नां तिसों तुम को लाय हो वडी वार ॥ कुं
न नदा म प्रभु गिरि घर धरतु मइहां वे विरही पोय हे विवार ॥ २ ॥ राग गोडी
फिरि फिरि कहा हे रत हे मारी को प्रीत मया छे आवत है ॥ मान हूं नंद न
को कुंचर कनारी ॥ गोर सवेचन चलीरी मधुपुरी पाव परत नही आगे ॥
एसी तगोरी मेली धोको ने मन तर मत ताही लागे ॥ २ ॥ देखि स्वरूप वो हटि
वितला ग्यो तांही के हाथ विकानो ॥ परमानंद प्रीति हे एसी कहारं क
कहारानो ॥ ३ ॥ राग कान्हू रो ॥ ॥ कापर दोटाने नन वावत हे को कलि
हारे बुवा की चोरी ॥ हो दधि बेचन जात मधुपुरी आय श्रवान कवन मे घे
री ॥ १ ॥ मेन निमें सव सरवा बुला एवा त निवात सम स्या फेरी जाय युका
रंगी नंद जू के अगि जिनि को न छुव रुमटु कीया मेरी ॥ २ ॥ गोकुल वसतु
मदी छन ए हो वोहत कांनिकरत हो तेरी ॥ परमानंद प्रभु रसिक मुकट
मनि वलि वलि जां कं स्यां मघन तेरी ॥ ३ ॥ राग कान्हू रो ॥ ॥ अहो तो सो नंद

[illegible]

जात अथ वक्रदुहो यदनश्चलाई १ जोये जानन देहो तो बलोर उलवि
प्रवन श्नेतो सबे क बतिकरत जो मन नाई गोविंद प्रभु के नैन निसोने ना
मिलेत वस कुचि वलीनिक मुसि मुसकाई २ राग को न्हरो ॥ इहि वागे ले
री अनोखे दांनो ॥ चले जाऊ अयने रस दोटा हम सो कोन बतुय श्वांनो ॥ १
कोन हाल कीये हस्मिरे फीरि कीरि कहत अटपटी वांनो ॥ एवाते सब व
रि कहूंगी विवीज हांज सो दारो नो ॥ २ अंतरंगति हरि को संग नावे देखू
ग्यालिनी मुख हिरि मांजो ॥ पान बसत तेरे कमल ने न मे जीय की जन पर
मांनं द जांमी ॥ ३ ॥ श्री कृष्णाय नमः ॥ अथ वाचन जी के पदा ॥ राग
देवगंधार ॥ ॥ प्रगटे श्री राम न अवतार ॥ निरखि आदिनी मुख करत प्र
संसा जग जीवन आधार ॥ १ ॥ तन घन स्याम पीत पट राजत सो नित हे
भुजवार ॥ कुंडल मुकट को स्य नमणि नरुंगुरे खासा ॥ २ ॥ देखि बदन
आनंदित सर मुनि करत निगम उचार ॥ गोविंद प्रभु वदूवां मन को के
वा देव लिके धार ॥ ३ ॥ राग धनसरी ॥ बलिके धारे वा देवावन ॥ अवन

सुनतहंआनंदकपज्यो कहोंनीतरेआवन॥ पाचरणधायचरणोदक
लनिंकहोंविप्रमननावन॥ तीनपेडधरतीहोंमांगोंपरमकुटीएकछां
वन॥ १॥ याकोविप्रकहातुममांगोदेरुहीरारत्नवहगांवन॥ परमानंदपु
नुवचननयलद्योलाग्योयीठमयांवन॥ ३॥ रागधनासरी॥ ॥ हर्मरंकेयां
आएविप्रवाम॥ सुनतवेदहृदेरुचिवाटीकेपंजुनयान्हांआवन॥ १॥ त्र
रणधायचरणोदकलनिंनलेआएमननावन॥ तीनपेडधरतीहोंमां
गोपरमकुटीएकछावन॥ २॥ याकोविप्रकहातुममांगोदोहवरन
देजंगांवन॥ सरदासप्रनुपेइतनोंमांगोवरनपीवेटयावन॥ ३॥ रा
गधनासरी॥ राजाएकपंडितयोरितिहारीचासोवद्वदतसुख
अरहेवामनचपुधारी॥ १॥ अष्टपदपदसुनावेबुकेसुकेकेदिनग
री॥ नगरिनमेमननारीमोहेअविगतअदयअहरी॥ २॥ बुनियुनिके
राजाविधाएआरुतज्जुनविमारी॥ देविमन्त्रकरी
नोडंडोक्तुहारी॥ ३॥ बलिजेदेवज्जुनदेव

जो मांगो सो दहू वरत ही ही राखत नंदारी ॥ ४ ॥ होर हो राजा अधिक नव
दीये हसन लगे नारी ॥ तीन पेंडे वसुधा हो मांग्यो तहां रूधर्म सारी ॥ ५ ॥
ऊकहे सुनिवलि राजा नू मिकों दान निवारी ॥ यस्तो विप्र न होय आपुन
आए छल न मुरारी ॥ ६ ॥ कष्टि कहा जात गुरु ज्ञा विप्र आपुन न ए निरवारी
करि संकल्प उदिक जल दीनों विप्र न देह्य सारी ॥ ७ ॥ जेजे सब न यो नू
मि मांयत द्वे पेड न डसारी ॥ एक पेंडे देहू - राजा देव वनो सतकारी
॥ ८ ॥ सत न हो सं परम गुरु मेरे मांयो पी विहमारी ॥ मूरदास प्रभु सरवसु
लीनों पायो राजपसारी ॥ ९ ॥ राग भात ॥ देखि दिजि वां मन वलि अति
आनंद करि लीनों ॥ मुरनर मुनि जन मिलि के अति आदर कीनों ॥ १० ॥
टकम निज दित जत म आसन ले दीनों ॥ पदवारि प्रेम सहित चरणे
दृकीनों ॥ ११ ॥ देह दार दार दार विनती उतिके हो ॥ जो जो नु मजा वो
दिज मो सो हो दे हो ॥ १२ ॥ हो वलि राजा अधिक न कहें हो तीन चरन धर
तहां वसि वेकेले हो ॥ १३ ॥ हय गजरथ क्यों हन ही ले हो ॥ जो ही विनां ओ

रयेनुमहांडिकहोमहो॥५॥तुमतोवलिममर्थदेवेक्योंहीराजा॥६॥
जकोंसंतोरवधर्मधनकोंकहाकाजा॥७॥सुक्रकहेराजाएसीक्यों
करिहें॥देवनकोकाजआयमर्वसतेरोहरिहें॥८॥सुनहुसुक्रअरु
तवधनकोहूँनहीनारें॥सुनजसुक्रनयोमसधर्मरात॥९॥वंध्यावा
लिअतियविन्नजललेकेआंई॥बिजबरकेपदपरवारिअतिआनंद
पई॥१०॥जवराजान्मिदानजलकरमेंढास्यो॥तववांमननिजस्वरू
पविस्वरूपधास्यो॥११॥जयजयराधजगतनयोसुरपतिमनहरये
ब्रह्मरुद्रआदिसवयोहमनमेवररे॥१२॥सखसुलेराजाकोंसुतल
राजदीनों॥निजजनजीयवानिघाडपालकेसुरवदीनों॥१३॥नक्तहेतव
रिस्वरूपलीलाप्रगटाईअतिआनंदप्रेममगनगोविंदयहगाई॥
१४॥अथसांजीकेपद॥रागगोडी॥हरवानांनलडेतीगार्थेकीरत
कुलमंडनवालहो॥सोनेकीसीवेलहेप्यारीवंधेकीसीमालहो॥१५॥
हंसगवनीमगलोचनीहोसोभितसहजसिंगारहो॥चमकतचंचल

चीकनेहोमिसटकारेवारहो॥२॥धंधरवारेबारननपरसोहतसुंदर
सारहो॥चंदकेफंदपरेअहीनंदननरकेकंचनजारहो॥३॥अतलसके
नेहगाअतिगाढोदरियाईअंगीयांपीतहो॥उरजमुनटकंचनकवच
नसजिआएरतिरणजीतहो॥४॥कमकटिकेहरिदेखिइरेहरिजेहर
तेहरियायहो॥गजगवनीकवनीअपनीरवनीरतिलेतवलायहो॥५॥
करदूबोललकेजलकेपलकेनलगेंछविदेखिहो॥अंशुरीनमुद
रीपरुंधीगजरावाजूवंदविसेषहो॥६॥चंपकलविकीचमकेदु
लरीपीययोतिहो॥वितकोलेतबुरायअलकछविचदनचंदकी
जोतिहो॥७॥अरुनअधरदमकतदमनावलिवोपवपलताचारु
हो॥कमलकोसमेवैवीपंकतिसोमितनंकुगकुमारहो॥८॥वेसर
कोमोतीलटकेमटकेरवटकेपीयपाणको॥सुवनवनीरुविमनीक
नकंकुतिनकतरुकलीकनहो॥९॥पीयत्ररवमोरचनरतिरसमे
वनचंवलोवनचारुहो॥कुंवरीकिमोरचकोरवेदुवापटतचंदचटमा

रहे॥१०॥प्रसिद्धकुलगंजनरतिरसरंजननेनमञ्जुनदीनहो॥क्रीडत
 मुधासरोवरमहियांमनोमनसीजकेमीनहो॥११॥समरसहार्कनव
 रसनाईकसायकघायकनेनहो॥कीरकुरंगसुरंगकवलकांनेनहो
 तानतवेनहो॥१२॥कारीजयकारीअतिशारीकुनीवेनेकविको
 नहो॥मोहेंमुविमोहेंमोहामनहावभावकेनो॥१३॥ ॥ ॥ ॥ ॥

॥मुनविरीयाडयहरीयांकेरुलकीविंदीदीनीनालहो॥ईदव
 धूमांनोकमलचंदकेअईमिलीधीयवानहो॥१४॥सीसरुलीये
 मोहेंमोहेंवनीतनककनिककीआडहो॥विदुक्चारुमुसिक्याईह
 मतजवयरतकयोलागिगाडहो॥१५॥ईहविधछवीअगाधासविराधा
 सरवीयनमांऊहो॥विटयावजतअगोयिनकीसंगरेवलतमांजीहो
 मांऊहो॥१६॥गोधूलकविरियांदीरीयाकूलनजमुनाकूलनिस्यामां

हो॥कूलनचोरतननहीमरोर

लेलावतललितायटकीअटकीकटिदीणहो॥रमकिऊमकिपल
वनवांईचाटीवीनतीफूलप्रवीनहो॥ए॥कूदिकुंदकरनीकोमल
निवारीनिखालवैलहो॥ललितलवंगलतावनितापररहेदेहूमि
काकेलहो॥२०॥जाहीजूहीकेतुकीनिवारोचंवैलीअरुवैलहो॥
फूलनकीकरिगेंहकवालावनमेंखेलतखेलहो॥२१॥बोलसरीके
फूलनकीगकफूलीवनावतिहो॥स्यांमाअतिरामासुखधामाखे
लतखेलअनेकहो॥२२॥तिहछिनकुंजविहारीजूदेखतकुंजन
कीओटहो॥रहेहेंचित्रकेसेतुचितेरेलगेहेंदुगतकीचोटहो॥२३॥
कीयोसखीकोरूपलालनरिलेगुलावदलगेदहो॥त्रीयारूपध
रदरसनपायोमनमेंमानतमोदहो॥२४॥निरखिनिरखिदृषां
नतंदनीबोलीवचनरसालहो॥सबसिंगारमोहेंमोहेंतूकोहेंरीन
ववालहो॥२५॥तूकोफिरतअकेलीहेलीइहवनजमुनांकूलहो
नंदगांमघरसाकीकोहूंवीननआईफूलहो॥२६॥उतकंवितत्र

खतानतनंदनी कंचनुजा उरमे ली हो ॥ अत्र अवार न डं पां की कं न सं
गहमारे खेलि हो ॥ २॥ सरवी सब बोलि बोलि गारं न न धुति मुनी को न
हो ॥ बडी वार धर जे हे ते खी जत दे वा वा वर खतानंद ॥ ३॥ चंद नाराय
डा बली चंचल ने नी चली ये धाम हो ॥ व हो न फूल वी नंद नट पां न म
न के काम हो ॥ ४॥ कमल फिरावति गीत नगा वनि अवनं ग र न
ज बाल हो ॥ फूल न की करे गंडु कल कनी यां फूल न की गुर माल हो
५॥ माई बाई उरला इ ल ई की रत न पुर म प्रवी न हो ॥ अमार वर ई न
ई सब नी तर आ मु आर तो की त हो ॥ ६॥ म्या म द चंद न के सर पं ॥
मां जू ली पी नी त हो ॥ काम वे न के गे र से र ची नं की फूल न दिन
हो ॥ ७॥ धृ प दी प धरि ने पा न म न न न न न न न न न न न न न न न न न न
न गीत पु नी त कि मो री श्री वि प चं न क न न न न न न न न न न न न न न न न
संगरे वल न चली अप ते न प ते न
खी सुख न हो ॥ चामो न म न

मां पतिमुघरमुजां न हो रसिकरूपधरकेलकरीमुखसागरप्रांण-
नीप्रांणहो॥३५॥ सरदतिसामुखईहविधिराधामाधोजनितविहा-
रहो सोजापरवलजां ईस्यां मयनश्रवलो कनमुखसारहो॥३६॥

अथ दसाहजकै प दालगारंग ॥ आजुदसहरायददिनुनीकोप
यतोपूजोहेमोयाला ॥ वृजरांती वृजराजकुवरकोंकररुसिंगार
परमरमाला ॥ १ ॥ वदनमुनदफुफुरामदेगावतमंगलचलाइथा
लातिलककरतओरजोउरसतआरतीबारतिहेजीजीवरुला
ला ॥ २ ॥ तबवृजराजअस्वसिंगारेतापरचटेगिरिधरलालरसि
कअनुपीयचलेहेकुदावतजहांवेवीहरवनांतकीवाला ॥ ३ ॥ ॥
बिजेदसमीआजपरममुदाईगोधतअगूआदीयोपवाईमोप
सकलवेवेहेअयांइकुसरमतावरुमुनदिननाई ॥ ४ ॥ वृजरांती
वृजराजकुवरसहितकीरतिललितान्योतिपवाई ॥ आजदम
रंबडोपरबहेतुमसबजेवनआयोकांई ॥ ५ ॥ करतसिंगारगिरि
धरतचंदकोचंडावलीसरमसुखदाई ॥ सथतपीतसेतवागेरु
ल्योलालपपापरजोथहराई ॥ ६ ॥ काजरआंजितोदमटुकदेति
नुतोरतओरलेतवलाईरसि

हरवनांत

सदनजहांकुवरमननार्इ॥४॥२॥ आजदसहरासुनदिवुनिकोविते
करोपीथप्यारीयेआतु॥५॥ तनीवातसुनतनंदनदनविहसिउवेद
लकीतोसाज॥१॥ रसिकप्रनुपीयरतिपतिजीसोनूपुरकिंकिनीर
ततुरवाज॥२॥ ३॥ विजेदसमीओरविजयमरुरतश्रीविबुलगिरि
धरयेआवत॥ करसिंगारविचित्रनांतिकोतिरखितिरखितेंतति
मुखपावत॥१॥ मृथनलालओरसेतबोलनांकलहीजरकसी
हेमतनावत॥ विविधितांतिसंगनूरवनसोनितसिरकेकपिछगुं
जायदगवत॥२॥ साजिकनककीथारहाथलेकुंकुमतिलकलि
लाटवनावत॥ अछतदेज्योअंकुरसिरपरधरततिरषिनिरखि
मनमोदवटावत॥३॥ बोहतजोगवीराआगेंधरिदृजितांमिनीमि
लिसंगलगवत॥ नीराजतवारिश्रीमुखपरगोविंदहरखिउरधा
रत॥४॥४॥ रागसारंग॥ मारिकहतहेललिताजोउरसेविजेकरन
कूंआओगेकवे॥ सजिसिंगारुनवनागरिआपुनसोधोसेतसजि

॥ सुनिमृदुवचनमंदतमोदतरीयवेल्लतदसिद्धिच
रागसारंग ॥ चोवामेचदलिरहेतोत्वात्त कदा
नाएकतेएकचुबरवोरवतारीतुमते
केसततांवजराकरमंगकरलीतोदसिए
लमिमोदीयेगतांवतधोंधीकंप्रनुप्रवी
नजगतिस्वस्वीआइसमुजावन
नरिछिजवेवेवरसोदीखात
कुलातालीयेगोदगिरध
कनकथारमंगलसमाज
॥ आमोटेरलग्योहेधकोदेतनंदको
रिछजवात
तिनंददफक

।रा० आज पयाने को दिन नी को कुसल लालन और की रत दोई पूज वेम
नोरथ जी को ॥ १ ॥ अतुल तबल अतुल तसेना में हनुमान को टी को
जांबुवांन मुयी वनी लनल अंग दवालि वली को ॥ २ ॥ विजे दसमी
और सिंधु दहने वां यों घर जो गिन को ॥ दिसा सल मारत पुनिय छे
रावन मरत सही को ॥ ३ ॥ सी गीरिषि मुनिरिष्टि करत दे जोग कर
न को टी को ॥ अगृस्वामी कारज सब सरि दे उतरे नार सही को ॥ ४ ॥
॥ राग आसा वरी ॥ आज दसहरा सुन दिन नी के गिरि धर लाल
जवा रे पहरत वन्यो दे नाल कुम कुम को टी को ॥ ५ ॥ देह अमी मस
कल गोयी जन चिर जीयो कुवर नां वनो जी को ॥ मेमदा सप्रभु को
सुरवति रखत त्रिबुवन को सुरल गत ॥ ६ ॥ राग कां नरे ॥ सुन
मरुरत विजे दसमी को नी को प्रथम समागम पीय हूला स हूती
वितय करत प्यारी सौं वेगिय धारो पीय के पास ॥ ७ ॥ मंजन करि
आनूषन धारो कनक अंग पटचीर सुवास ॥ धीरज धरि वृषनां

मारी पुरन करी प्रीत मकी आस । शत वना गर संगान वलना
संगम वरन तहे दास । श्रीवल्लभ पद रज कपा पात्र कुंनि
नवल हृदय कास ॥ ३॥ राग माला दिषी हो कंतर युनाथ आयो
प्यो ससि मुर अती चारव कत नयो पुर सो पुर आकास छायो ।
तवन मांन्यो कह्यो आयने मंदर हो देह के गर्जनि मानवा हो
नीव हो कंत अब कती न नयो छटि वोग हे करवी मऊंकार
॥ २॥ सिंधु गंजी रदल छाडि दे मुगध वलने न करीया कछांटे
॥ बचे कोइ बने माऊला गयो । धकाल सीता वक्षो दुक फाटी ॥ ३॥
मुनी तुंगे न्यो पछिन मे आनीया चरज पर आनी खेले । न
वर देवा जहनु मानये सुवज बजान की नाथ सेले ॥ ४॥ ज
ककुयो हनु मान उदधि जांन की सुधी लेन को देष न दस
पने नाथ को मुख देन को ॥ ५॥ लाचली ।
नीति रुहीया सो गिरि दस जो जन

३.

धरतीधमिगईपतालतारपुरेजाग्यो। सेमझुकोमीसजाइकमव
पीबलाग्यो॥३॥ अरुनबदनसेतसदनबडोपीतगातहे उतराते
दछनमानोंमेरझोजातहे॥४॥ रांमचंदपदप्रतायजगमगेजसुत
को। नंददाससुरनरमुनिकोतिकचूलेताको॥५॥ २॥ श्रीकृष्णाय
नमः॥ अथरासकेकीर्तन॥ रागजैरव॥ मानलाग्योगिरधरगावे
ततथेईततथेईततताथेईतेरांगमिलिमुर्लीवतावे॥१॥ नाच
ततवटभमांतडुलारी॥ अवयरगतिउपजावे॥ नूपुररुनितकूनि
तकटिमेखलजुवतीसबदमतमोदवटावे॥२॥ सुरतदेतमानोंम
तमधुपगनएकतालीसबकेजीयतावे॥ गिरधरपीयप्यारीकी
पदरजकृष्णदासत्योछावरपावे॥३॥ नाचतिब्रखतांनकुवरीद
ससुतापुलतिमधिहंसहंसनीमयूरमंडलीवनीगावतगोपाल
लालमिलवतकपतालचाललजितअतिमतमदनकामिनीअ
नी॥ पदिकलालकंवमालतफुनितिलकफलकतालश्रवत

कूलवरदुकूलनामिकामनी॥२॥नीलकंचुकीसुदेसचंपक
लीगलितकेसमुकलितवरदामवामकटिसुकाछनी॥३॥म
करतमतिबलयरावमुखवरनुपुरसुजावजावकनुनिचरन
खचंदिकावनी॥अंगनिवासनुवविलासदासरसवरसुधंग
अलगलागलेतसुधराधिकायुनी॥४॥कामसिधकितोबंधरी
ऊरहेचरनगदेसाधुसाधुकहततरहतराधिकाधनीनिटनगहि
वाह्मुलउरजपरसनइकूलव्यासवचनज्ञानकूलरसिकर्त
वनी॥५॥रागरामकली॥देखोदेखोरीनागरनटनिर्जेतकालि
दितटगोपिनकेमधिराजेमुकटलटककाछनीकिंकिनीक
टिपीतांवरकीचटककुंडलकिरनरविरथकीअटक॥एततथे
इततथेइसवदसकलघटउरयतिरपपरेपुगकीपटक॥स

तनियातिकटअधरमुरलीधरी॥ सुनतसुरअवततजितवनत्रज
सुंदरीआनिआकासघसुवनवरखाकरी॥१॥ धेनओरवछरव
गमृगवधसुनिसवेरदेधरभ्यातनहीचरतत्रनुमुखपरी॥ मूलप्री
तिकूलजलअतिलथकेतासमेसिलादिवदिवतरजनीसुग
तिमतिहरी॥२॥ सकलद्रुमवेलाप्रफुल्लितमुदितनवरवरगुं
जमधपानमधुकरतसुनतासमघरी॥ नाथवारजवदनमदन
मोदनहूवरमोहेकोटिकमदनहरतअघत्रिदरी॥३॥ रा॥ वि
वला॥ चलोड्याधिकेसुजानतेरेहितसुखनिधानरासरओका
हृत्तटकलिनंदिनी॥ निर्गतनुवतिसमूहारांगअतिकोन्
हलवाजतरसमुलमुरलिकाअनंदनी॥४॥ वंसीवदनिकटतहा
परमरमजनुमितदांसकलसुखदमलयवदेवायुमंदनी॥
जाती॥ स्वदविकासकानतअतिसहेसुवासराकानिससर
दमासविमलचांदिनी॥५॥ कूहनदासप्रनुतिहारलोचनन

डी॥

रागरे

नृपुत्रकृते कनककुंजकवचीचपसीनामनाहरमोतिनृ
ते शिखिमलनातमालश्रवलंवितसीसमल्लिकाफुली कुचि

केसवीचअरुजानेमनोअलिमालकली॥४॥सरदविमलनिस
चंदविराजतक्रीडतयमुनाकुलेपरमानंदस्वामीकोतहलदे
खतसुरनखले॥५॥रासचंदगोविंदगोपीतारागतवन्योरासमें
वनवारी॥सुरवप्रकासरंजितचंद्रावनतवलजुवतीतनसुकवा
री॥६॥कवलनैनकवनीयमनोहरमनुहरनीगोकुलनारीहस्त
कमलवरगलितकुसमदलनिर्तमानप्रीतमय्यारी॥७॥रसमेंर
सिकनीनामिनअतिरसालवनविहारी॥कलदासप्रचुरसिक
मुकटमतिरसिकरायगिरवरधारी॥८॥रागआसावरी॥ब्रयुना
तनंदनीताचतरासरंगजरी॥उरयतिरमलागडाटउघटतसीगी
सहृततथेईथेईथेईबोलतजगतवंदनी॥९॥नाचतमुगतता
लमृदंगलेतजुवतीअतिसुगंधकोककलानिपुनसरसकाम
कंदनीरीकवारदेतप्रातप्रचुमुकुंदअतिसुजातमोहेकलगा
नत्रियेप्रेमफंदनी॥१०॥राससरंगवन्योरासमंडलएयुवतीजूथ

शिवनीश्री
रीकरिजिने

॥ अंग अंग चित्रकी ए मोर चंदमा थिदी ते का छती का छेपी
चतुर बिहारी प्यारी परवारे नतम नधन यह छवि

हमिली नवरंग वररूपम

रीगमपधनीअलापकरतरसउपजततानतवंग॥१॥निर्गतअति
जतलेतअततकिटधेमकधिलागथो जतमृदंगगोविंदप्रनूकेअं
गअंगपरवारोकोटिअतंग॥२॥रागनट॥आजुवननीकोरासवना
यो॥पुलनपवितिसुजगजमुनातटमोहनवेनुवजायो॥१॥कलकि
किनीकंकनपगनपुरधुनिसुनिरगमृगसवपायो॥पुवतितमं
डलमधिस्यामद्यनसांगराजमायो॥२॥तालमृदंगउपंगमुरज
डफमिलरससिध्वदायो॥विविधिविसद्व्रपुनानतंदिनीअंगमु
अंगदिरवायो॥३॥अनयुतिपुनलटकटेलेलोवनत्रकुटीअतंग
लजायो॥ततथेईततथेईधरतनूतनगतिपतिव्रजराज्रिकायो॥४॥
मकलउदाररसिकचूडामनिसुखवारधवरपायो॥परिरंजनचंव
नआलिंगनउचतजुवतिजनपायो॥५॥वरषतकुसममुदितन
ननायकइंदुविमानवजायो॥हितहरिवंसरसिकराधामतिज
मुवितातजगछायो॥६॥रागनटनागरीनटनरायतगायो॥तानमां

वि
॥ अन्नयनिष्ट ॥

सकलत्रियतमे सद्गुणावरीश्रंग

रागमालवा ॥ रासविलास रंगनरिनाचतनवलकि सोरनवल

नधरसुरतकेलकंचुकीछोर॥३॥ रागमालव॥ रासमंडलमेवननांच
तपीयकेसंगप्रितमप्यारीगावतसरससजातमिलावतचपलकु
टिलनुवअनियारी॥१॥ मालवरागअलापतनांमनि॥ लेतउरपत
गरनारी॥ प्यारीकेरसवेनुवजावतसुघररायगिरवरधारी॥२॥ कुल
दसप्रनुसौतगसीवासवतुवतीनमेंमुकवारी॥ जोरीअनुतप्रग
दततलकेलकलारसमनुहारी॥३॥ अलागलागतउरपतिर
पगतिनटवतअतललनारासे॥ उघटतशहततथेइथेइततथेइ
गतेतीइखदहासे॥१॥ चपलछंदजनावतगावतबाधतमदननोह
पासेचलतउरतपटकंकनकुंडलअमजलकनसोनितआसे॥२॥
नपुरसुनितकुनितकटिमेखलकटितटिकाछनीलवासेअवधर
तानमानबंधानसोमोदतविश्वचरन्योसे॥३॥ मोहनलालगोवरध
नधारीरिखवतछेलसुघरलासेअपनेकंचुकीपीयअमजलमि
लिमालादेतकुलदासे॥४॥ रासनाचतरासमेंगोपालसंगमुदित

षोडशरी। ततमालस्यामलालकनकवेलप्यारी॥ चलनितं
 वनूपुरकटिलोलवंकयीवारगतांतमानसहितवेतगातसीवा
 २॥ अमजलकननरितमुनगरेनरंगसोदे चतुचुतप्रभुगिरिवरध
 रज्जवतिततमोदे॥ इरसागोयवधुसंडलमधिनायकगोपाललाल
 रुचिराअरुतवीवाधरमुरिकाधरे॥ अजुतनटवरविचित्रनेखरेख
 गतिमुदेसकनककपिसकाछसिखीसरवंडसेखरे॥ ५॥ कूकू
 ककंऊनकिटथूंगथूंगगतकिटधिकटधुमकिटततथे॥ उद्यटतरा
 संरंगनरे॥ जेजेगिरराजधरनजेकोटिमदनमनहरनहरिजीवन
 लिवलिज्जपुरपुलंदरे॥ २॥ रागदोडी॥ कूलतरनतनयातीररास
 डलरच्योअधरकरमधुरसुरबेनुवाजे॥ जुवतिनज्जसंग
 नेकगतिनिरखिअनिमानतजिकामलाजे॥ ५॥ स्या
 सेवपदनखनसुनचंद्रकासकलनूवतिमरजाजे॥ ल
 सनूवधनकलोचनचपलवितवनीमदनतनुवा

को।

रकरमंजीरकटिकिंकनीकुतितरवचनगंजीरजानोमेधगाजे द्य
सकृतननाथहरिदासवर्यधरिनखसिखसरूपश्रुतविराजे
३॥ श्रीराम गोपचंद्रसंगनृततरंग सरिगमपधनी अलापकरत
रसउपजतिओघरतांततरंग ॥ १ ॥ लालकाछनीकटिपीतटिपा
रोछबिबनजविचित्रसोदेअंग गोविंदप्रभुत्रैलोकविमोदतवा
रिफेरिडारोंकोटिअनंग ॥ २ ॥ रासमेंरसिकमोदतवनेनामिनीमु
नगयांवनपुलितसरसौरजनतलनमतमधुपकरनिकरसरद
कीजामिनी ॥ ३ ॥ त्रिविधरोचकप्रबनतायदिनमतदवनतहावादे
रवनसंगसतकांमिनी लालवीनामृदंगसरसनाचतमुगंधगाए
कतेएकसंगीतकीस्वामिनी ॥ ४ ॥ रागरागिनजमीवियनवरप्रत
अमीअधरबिंबनरमीमुरलीअनिरामनी लागकटउरप्रसन्न
मुरसोमूलपलेतमुंदरमुघरगधिकामिनी ॥ ५ ॥ रासततथेईथे
ईकरतगतिवनौतनधरपलवडगमेगेधरतगजगामिनी धाय

नवरंगधरी उर सराज तरवरी उने कल दे सहरि बंस घन दां सि ।
नीधारा सतिर्जमान नां मिनी गुपाल संग तरुन तनया पुलन वि
मल विकसत जाती सुवास ॥ १ ॥ लेत सुलफ उर पतिर पद सत
वर ईख दहसा वदन जोती तल्ली कृत मोदित उदयति अका
सा नील पाटका छ कंचुकी उतंग मव किला सा गो वर धन धरत
लाल रिज वत अशु कल दासा ॥ २ ॥ राग के दारे ॥ सुन धुव मुरली व
न वाजे हरि रास रच्यो कुंज कुंज डुम बेली प्रफुलित मंडल कंच
न मन नख च्यो ॥ ३ ॥ निरति जुगल कि सोर जुवति जन मन मिल
राग के दारे मच्यो हर दास के स्वामी स्यामा कुंज विदारी नीके
आज गुपाल नच्यो ॥ ४ ॥ दसना नंदनी नाचत लालन गिरधर
न संग डाट उर पतिर पद सरंग राच्यो ॥ जुवती जय संग मिलेग
वत के दारे राग अवधर वर सुधर तात गानरंग राच्यो ॥ ५ ॥ रासा
पा

गङ्गासरंगराख्यो वनितासंतय्यपयीयननिरषिथको सधन
चंदवलिहारीकुलदासमुजसरंगराख्यो॥२॥ पूरतमधुरतमधुरवे
नरसाल चारुधुतवेसुततश्रवतनविमोहीवृजवाल॥३॥ सुनिय
केसुरनरपवनपसुरवगमुधिनदीतिदिकालनिरवकोतिक
चंदनल्योतजीपछमवाल॥२॥ राजरितगोवरधनतठरओरास
गोपालदासकुंभनप्रनुदसोमनमोवरधनधरलाल॥३॥ राज
विहागरी॥ पियकोनचवतसिषवतप्यारी॥ चंदावनमैरासर
ओहेसरदेरेनउजियारी॥१॥ तालमदंगउयंगवजावतअतिप्र
वीनललितारी॥ रूपनरीगुनदाथछरीलीयेंदरप्रतिला
विहारी॥२॥ वेनवीननूपुरधुनिवाजतरवामृगबुद्धिविसारी
यासस्वामीनीकीकविनिरषतरीकदेतकरनारी॥३॥ विहागरी॥
लाडलीनमानेलालआपपावधारिये जेसेप्यारीमानतजेसे
जतनविचारो॥ वातितोवनायकहीजेतीमतिमेरी नेकहुनमं

लाल एसी नियातेरी ॥ १ ॥ अपनी चोंप के काजे सखी जे सखी नो
मन वसत सजवी ना करली नो ॥ २ ॥ उतने आवत देखि चकत
विहारे को नगाव वसत हो रूप उजियारी ॥ ३ ॥ गंगम तो हे नंद गंगम
निमेरी प्यारी नाव तो देन बल सखी तो दिवो लन आ ई कर सो
कर जो रप्यारी निकट वेग ॥ ४ ॥ सस सुरन मिल सुल पवजा ॥ ४ ॥
ऊमोति हार चा रुतर पहरि राखे ॥ हमारे सावरो नद एसे वरजा
॥ ५ ॥ जो इजो इचा हो सो इमाग वलिनी जे थदे दाने मा गो साव
सो मानन की जे ॥ ६ ॥ मुख सौं मुख जो रप्यारी दर्यन दिया वे ॥ नि
षि छवीली छवि प्रति बिंबल जावे ॥ ७ ॥ छदम उभरि आयो द
॥ धारि मिलि राधा प्यारी आको नरिलीनी ॥ ८ ॥ अ
धन तेर कैय ॥ ९ ॥ राग देगंधरा ॥ आज मा ई धन धोवंत नंदरांनी
तिक बदि तेर स दिन उजिम गावत मंगल वांणी ॥ १० ॥ नव सत
जि सिंगार अनूप म आय करत मन मानी

ला

